संस्कार दर्शनम्

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता
'बाँसुरी' (पिपरसानिया)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संस्कार दर्शनम्

संस्कार दर्शनम्

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता
(पिपरसानिया) 'बांसुरी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-241-8
संपादक- डॉ; प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259ए 9009465259
ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**
वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**
प्रथम संस्करण- 2020, मनोरमा गुप्ता पिपरसानिया
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RAJMATI DR. MANORAMA GUPTA PIPARSANIYA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रस्तावना

सर्वप्रथम मैं पावन भारत भूमि को कोटिशः नमन करती हूं जो मेरी जन्म-भूमि के साथ कर्म-भूमि भी है।

मैंने अपनी पुस्तक **"संस्कार दर्शनम्"** हेतु, भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर वेद-पुराणों से दैनिक मानव कर्म एवं पूजन पद्धति संबंधी ज्ञानरूपी सुरभित पुष्प-तत्वों का चयन किया। अपने अर्जित ज्ञान एवं स्वविवेक रूपी डोरी में पिरो कर ऐसी सौंदर्यमयी माला बनाने का प्रयास किया है, जिससे नई पीढ़ी वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित ज्ञान-सुगंध को आत्मसात करके, अपने वक्षःस्थल को उस अद्वितीय पुष्पमाल से सुसज्जित कर सके। बचपन से लेकर, युवावस्था तक की दहलीज पर आते-आते, मेरे मन-मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति एवं पूजन संबंधी अनेक जिज्ञासा पूर्ण प्रश्न आते रहे हैं, जिनमें से अधिकांश प्रश्नों के उत्तर मुझे आधे-अधूरे और संतुष्टिहीन प्राप्त होते थे। बस उन्हें परंपराओं की बेड़ियाँ बनाकर, हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाता था। तभी मैंने दृढ निश्चय किया कि मैं गहन अध्ययन करके, इन यत्र-तत्र बिखरे मोतियों को एकत्र कर के, ठोस तर्कों के आधार पर, मौलिक रूप प्रदान करूँगी। यद्यपि इसकी विषय-वस्तु अनेक भारतीय प्राचीनतम ग्रंथों, पुराणों से प्राप्त की है जिस पर अब तक अनेक विद्वानों ने कुछ तथ्यों पर, अलग-अलग अपनी लेखनी भी चलाई है तथापि मैंने एक ही पुस्तक में 'गागर में सागर' भर कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करके, उनका समय एवं श्रम को बचाने का अथक प्रयास किया है। यदि आपको मेरी यह कृति रुचिकर व तर्कपूर्ण लगे तो यह मेरा अहोभाग्य होगा।

मैं आपके सुझावों का हृदय से स्वागत करती हूँ एवं आगामी संस्करणों को उनसे परिष्कृत करने हेतु वचनबद्ध भी हूं। कोरोना संक्रमण के समय प्रकाशित होने वाली यह पुस्तक मेरे लिये अविस्मरणीय और महान उपलब्धि है। लाॅक-डाउन के कारण टाइपिंग सुविधा उपलब्ध न होने के कारण मेरे सम्माननीय पतिदेव, बेटा-बहू सौरभ-शुभ्रा, बेटी-दामाद सोनिका-सौरभ माँडल ने मुझे प्रेरित करके अकथनीय व अतुलनीय योगदान रहा। मेरे पूज्य माता-पिताश्री, भाई-बहनों, पूज्यनीय सास-ससुरश्री ने सदैव ही मुझे लेखन हेतु प्रेरित किया मैं इन सबके समक्ष आज नतमस्तक हूं। मुझे तथ्यों के संग्रहण में जिनका सहयोग प्राप्त हुआ, मैं उनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूं। मैं अंतरा शब्द शक्ति के समस्त प्रकाशन समूह का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस संकट काल में भी, समय सदुपयोगी प्रकाशन कार्य करते हुए, इस पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में सराहनीय योगदान दिया। अंततः मैं अपने समस्त दोषों के लिए करबद्ध क्षमायाचना करती हूँ।

स्वजनों, परिजनों की पुण्य स्मृति में सादर समर्पित।

धन्यवाद।

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता (पिपरसानिया)
जबलपुर, मध्य प्रदेश

अनुक्रमणिका

अध्याय-1: मंगलाचरण 9

1. मानव जीवन में धर्म कर्म की आवश्यकता 9
2. दैनिक मानव कर्म पद्धति 9

(क) मानव जीवन के षट-कर्म 10

(ख) नीति शास्त्र में मनुष्य के दुर्गुण / त्याज्य गुण 10

3. मानव की आदर्श दिनचर्या 10

(क) सूर्योदय से पूर्व उठना 10

(ख) प्रातः कर दर्शनम् 10

(ग) भूमि पाद स्पर्शम 11

(घ) प्रातः स्मरण 11

(ङ) सूर्य प्रार्थना 12

(च) तुलसी प्रार्थना 12

(छ) गौ/गाय प्रार्थना- 12

अध्याय-2: नित्य कर्म आत्म शुद्धता 13

1. शुचिता अथवा शौच कर्म 13
2. दंत धावन या दांतों की स्वच्छता 13
3. उबटन/ मृतिका लेप 14
4. क्षौरकर्म (हजामत) विधि 14
5. स्नान 14
6. वस्त्र धारण 16
7. तेलाभ्यंग विधि/ तेल लगाना 16
8. शिखा बंधन 16
9. यज्ञोपवीत धारण 17
10. प्राणायाम एवं सूर्य नमस्कार 17
11. ईश प्रार्थना 18

अध्याय-3: पूजन पूर्व तैयारी एवं महत्व 19

1. उरेन डालना या स्थान सुचिता 19
2. चौक पूरना/ बनाना अथवा भूमि सज्जा 19
3. चौकी स्थापना 20
4. नवग्रह स्थापना 20
5. कलश स्थापना 21
6. गौर गणेश स्थापना 22
7. अखंड ज्योति स्थापना 23
8. आसन व्यवस्था 24

9. पूजा थाली सजा-देवपूजा अनुरूप 25
10. गठबंधन 26
अध्याय-4: पूजन हेतु आवश्यक पात्र 27
1. आचमन पात्र एवं आज मनी 27
2. गरुड़ घंटी 27
3. अभिषेक पात्र 28
4. कुशा 28
5. देव घंटा 29
6. शंख 30
7. चंदन उरसा / चंदन घर्षण पात्र, चंदन 30
8. गोमुखी माला 31
9. आरती पात्र 31
10. धूपबत्ती पात्र 32
11. हवन पात्र / हवन कुंड 32
12. नैवेद्य पात्र 33
अध्याय-5: पूजन में अर्पण की जाने वाली सामग्री 34
1. शुद्ध जल, गंगाजल 34
2. पंचामृत 34
3. वस्त्रार्पण, अलंकरण 35
4. हल्दी 35
5. कुमकुम / रोली 36
6. चंदन 36
7. तिलक 36
8. अबीर /गुलाल, भस्म, सिंदूर 37
9. अक्षत, चना दाल, तिल 37
10. पुष्प 38
11. बिल्वपत्र 38
12. शमीपत्र 39
13. तुलसीपत्र 39
14. अपराजिता, दूर्वा 39
15. धूपबत्ती 40
16. नैवेद्य प्रसाद 40
17. ऋतुफल, नारियल 41
18. पान या तांबूल 42
19. मुद्रा या सिक्का 42
20. सुगंधित द्रव्य, इत्र 42

21. पंचरत्नी 43
22. सप्तधान्य 43
23. आरती 44
24. हवन सामग्री 44
अध्याय-6: पूजा प्रतीक चिन्ह 45
1. ऊँ-ओंकार 45
2. स्वास्तिक 45
3. शुभ लाभ 46
4. पूजन यंत्र 46
5. पूजन मंत्र एवं बीज मंत्र 47
6. दायावर्ती शंख 48
7. कच्छप, एरावत हाथी 49
8. चरण पादुकाएं, उल्लू 49
9. कमल 50
10. नवरत्न 51
11. गोमती चक्र 52
12. कौड़ी 52
13. छत्र 53
14. हत्था जोड़ी 53
15. सूर्य चिन्ह 53
16. बंदनवार/ तोरण 54
17. त्रिशूल 54
18. मोर पंख 55
19. गणपति/ विनायक 55
20. श्री विग्रह या मूर्ति 55
21. रंगोली 55
22. झाड़ू 56
23. हस्तक/ हाथे 56
अध्याय-7: पूजन अंक शब्दावली 57
1. एकम 57
2. द्वितीय 57
3. तृतीय 57
4. चतुर्थ 57
5. पंचम 58
6. षष्टम 59
7. सप्तम 59

8. अष्टम 59
9. नवम 60
10. दशम 61
11. एकादश 62
12. द्वादश 62
13. चतुर्दशी 63
14. षोडश 63
15. अष्टादश 65
16. सत्ताईस नक्षत्र 65
17. तैंतीस कोटी 65
18. छप्पन भोग 66
19. चौंसठ कलाएं, चौंसठ योगिनी 66
अध्याय-8: पूजन क्रियाएँ 68
1. आचमन /शुचिता 68
2. आव्हान करना 68
3. वंदना 68
4. अभिषेक करना 69
5. अर्चना 53 69
6. यज्ञ आहूति 69
7. आरती 70
8. पुष्पांजलि 70
9. साष्टांग प्रणाम 71
10. संकल्प 71
11. दक्षिणा 72
12. रक्षा सूत्र बांधना 72
13. तिलक लगाना 73
14. क्षमा याचना 73
15. विसर्जन करना 74
16. परिक्रमा करना 74
17. प्रार्थना करना 75
18. चरणामृत /प्रसाद लेना 75
अध्याय-9: विभिन्न देवी देवताओं का पूजन 76
1. श्री गणेश जी का पूजन 76
2. शक्ति माँ दुर्गा का पूजन 76
3. माँ लक्ष्मी जी पूजन 78
4. भगवान शंकर का पूजन 80

5. माँ सरस्वती का पूजन 81
6. तांत्रिक पूजन 82
7. हनुमत पूजन 84
8. गुरुदेव पूजन 85
9. कुलदेवता या देवी का पूजन 86
10. भित्ति-चित्र पूजन 87
अध्याय-10: विभिन्न वृक्षों का पूजन महत्व 88
1. विभिन्न वृक्ष पूजन एवं महत्व 88
2. तुलसी पूजन 88
3. आमला / आंवला पूजन 89
4. वटवृक्ष पूजन 90
5. आम वृक्ष पूजन 91
6. नीम वृक्ष पूजन 91
7. केला वृक्ष पूजन 92
8. बिल्व वृक्ष 92
9. शमी पत्र वृक्ष 93
10. अपराजिता बेल 94
11. अशोक वृक्ष 95
12. नारियल वृक्ष 95
13. अनार वृक्ष 96

अध्याय-1: मंगलाचरण

1. <u>मानव जीवन में धर्म कर्म की आवश्यकता</u>

भारतीय ग्रंथों वेद पुराणों में धर्म को अनेक प्रकार से परिभाषित कर के मनुष्य को आदर्श जीवन व्यतीत करने की विधियां प्रस्तुत की गई हैं। धर्म का विषय गहन चिंतन मनन पर आधारित है।

यतोऽभ्युदयनि: श्रेयस सिद्धि: स धर्म:।

अर्थ- अर्थात् जिन नियमों के आचरण एवं अनुष्ठान करने में पृथ्वी लोक और परलोक दोनों में अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त हो ऐसे आचरण को धारण करना ही धर्म है। धर्म मानव की मूल आवश्यकता और सफल जीवन का सोपान है।

"धर्मो माता पिता चैव, धर्मो बंधु: सुहृत्तथ।
धर्म: स्वर्गस्य धर्मात्स्वर्गमवघ्यते।।"

अर्थ- अर्थात् धर्म माता है, धर्म पिता है, धर्म ही बंधु और धर्म ही सच्चा मित्र भी है। धर्म ही स्वर्ग की सीढ़ी है, धर्म से ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है। धर्म वास्तव में वह नहीं है जो आज दृष्टिगोचर हो रहा है यह तो धर्म के नाम पर व्यवसाय, धर्म पंथियों के ज्ञान का दूषित अंधानुकरण है। धर्म वास्तव में वह है जो मनुष्य के मन मस्तिष्क की मलीनता को निकालकर, निर्मल पवित्र स्वरूप प्रदान करें। हर आत्मा में परमात्मा का स्वरूप दृष्टिगत हो, बुरे आचरण की परछाई तक न पड़े। ऐसे धर्म परायण व्यक्ति ही, संकट मुक्त होकर परमधाम स्वर्ग के अधिकर्मी बन पाते हैं।

धर्म नित्यास्तु ये केचिन्न, ते सीदन्ति कहिंचित।.... - महाभारत

अपने कर्त्तव्यों का समुचित पालन करना ही सत्कर्म और सद्धर्म है।

प्रातः स्मरामि हृदि, संस्फुरदात्म तत्वम्।
सच्चित् सुखम परमहंस गतिं तुरीयम्।

अर्थ- मैं प्रातः काल हृदय में स्फुरित होते हुए आत्म तत्व का स्मरण करता हूं, जो सत् चित और आनंद स्वरूप है। परमहंसों का प्राप्य स्थान है।

2. दैनिक मानव कर्म पद्धति

भारतीय संस्कृति में मनुष्य अखिल ब्रह्मांड में चौरासी लाख योनियों में परमपिता परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। जो अपने बुद्धि, विवेक संस्कारों और कर्मों के द्वारा स्वयं को पवित्र आत्मा के रूप में भगवान को समर्पित करके, अपने मनुष्य जन्म को सफल बना कर, दिव्य अलौकिक शक्ति में समाहित कर सकता है। दैनिक कर्मों एवं संस्कारों की श्रंखला की प्रथम कड़ी का शुभारंभ आदिदेव देवों के मंगलमय स्मरण के साथ करते हैं।

अथोच्यते गृहस्थस्य नित्य कर्म यथा विधिः।
यत्कृत्वा नुण्यमाप्नोति दैवात्यैत्र्याच्च मानुषात।।

अर्थ- नित्य कर्मों को यथाविधि लिखते हैं। जिनका नियमित व्यवहार करने से ही गृहस्थ जन-देव-ऋषि और पित्र ऋण से मुक्त होकर परमानंद की प्राप्ति कर सकते हैं।

नित्यकर्म वैदिक विधि लिख कर देते ज्ञान।
देव ऋषि माता पिता ऋणमुक्ति करें जनकल्याण।।

1. मानव जीवन के षट-कर्म

मनुष्य को ये छः कर्म प्रतिदिन करना चाहिए:

1-स्नान, 2-संध्या-वंदना, 3-गायत्री जप,
4-देवपूजा, 5-गुरूजन का सम्मान, 6-आतिथ्य कार्य।

2. नीति शास्त्र में मनुष्य के दुर्गुण / त्याज्य गुण

1. सूर्योदय, सूर्यास्त के समय सोना।
2. दाँत मैले रखना।
3. मैले वस्त्र पहनना।
4. बहुत अधिक खाना।
5. कड़वे वचन बोलना।
6. मिथ्या भाषण करना या झूठ बोलना।

3. मानव की आदर्श दिनचर्या

1. सूर्योदय से पूर्व उठना

उत्तम स्वास्थ्य के लिए सूर्योदय से चार घड़ी अर्थात डेढ़ घंटे पहले ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए। इस समय प्रकृति में प्राणवायु ओजोन विद्यमान रहती है, जो ऑक्सीजन से कई गुना स्वास्थ्यवर्धक होती है। सूर्य किरणें पड़ने से वायुमंडल की ओजोन गैस ऑक्सीजन में परिवर्तित हो जाती है जो ओजोन की तुलना में कम गुणकारी होती है।

2. प्रातः कर दर्शनम्

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शैया पर ही बैठ कर सर्वप्रथम अपनी दोनों उंगलियों, दोनों हथेलियों को जोड़कर, अंजली की आकृति बनाकर यह मंत्र पढ़ते हुए दर्शन करना चाहिए।

कराग्रे वसते लक्ष्मी, कर मध्य सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनम्। ।

अर्थ- कर अर्थात हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी जी, मध्य भाग में सरस्वती जी, और मूल अर्थात नीचे के भाग में ब्रह्मा जी का निवास होता है। इसलिए प्रातःकाल उठकर, सर्वप्रथम कर दर्शन करके, दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ कर, अपने मुख मंडल पर फेरना चाहिए।

कारण एवं महत्व

अग्रभाग में लक्ष्मी जी अर्थात उद्यम, मध्य भाग में सरस्वती जी अर्थात ज्ञान, और मूल भाग में ब्रह्माजी अर्थात सृजन विराजित है। अतः अपने उद्यम, ज्ञान, और सृजन को आपस में जोड़कर, अपने मुख मंडल अर्थात स्वयं को कांतिवान और तेजस्वी बनाओ। चेहरा ही मनुष्य की पहचान है इसलिए उसे आभामय बनाओ अर्थात जीवन की सफलता एवं अपने कार्यों की पूर्णता हेतु, जब हम आंखें खोलते हैं, जागृत होकर उद्यम ज्ञान और सृजन को नमन करके, शुद्ध सात्विक कार्य करने की प्रेरणा मिलती

है। विचार पूर्वक अपने परिश्रम से जीविका कमाने, सदकार्य करने की सद्भावना जागृत हो सके।

3. भूमि पाद स्पर्शम

पृथ्वी माँ की प्रार्थना- शैया अर्थात बिस्तर से नीचे उतरने के पहले पलटकर, दाएं हाथ से धरती माता को स्पर्श करके, यह मंत्र कहें-

"समुद्र वसने देवी पर्वत स्तन मंडले।
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमस्व मे"

अर्थात- हे विष्णुप्रिये वसुंधरा आप समुद्र मे वसने वाली और पर्वत के समान शरीर वाली हैं, आपको नमस्कार है। मेरे पैरों के स्पर्श को क्षमा कीजिए। इसके बाद उन्हें प्रणाम करके, दोनो हाथों को अपने माथे पर लगाएं और फिर दाँया पैर जमीन पर रखकर खड़े होना चाहिए।

कारण एवं महत्व

पृथ्वी को प्रणाम करने का कारण यह है कि माँ की गोद के बाद, धरती ही वह माँ है जिसने हमारे जीवन को संवारा है, जिसका मीठा जल, शीतल सुभाषित वायु, वनस्पतियां हमारे जीवन का आधार है। अतः मातृभूमि को प्रणाम करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य भूदेवी का आभारी है। भले ही वह कोई भी कर्म करता हो अर्थात चाहे वह कृषक हो या व्यवसायी, डॉक्टर, इंजीनियर होया शिक्षक। लोहार, बढ़ई हो या कुम्हार तात्पर्य यह है कि सबकी आश्रय दात्री वसुंधरा माता हैं। अतः पद-स्पर्श के पूर्व उनका नमन करना, उनका आभार व्यक्त करना, प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।

4. प्रातः स्मरण

तदुपरांत ब्रह्मांड के समस्त ग्रहों का स्मरण करके उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरंतकारी, भानु शशि भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः, शनि राहु केतवः कुर्वंतु सर्वे मम सुप्रभातम्। ।

अर्थात- ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि सभी देवता मेरी सुबह को श्रेष्ठतम करें।

कारण एवं महत्व

भगवान ब्रह्मा जी सृष्टि के सभी जीवो के सृजन कर्ता हैं। अतः सभी प्राणियों का प्रकृति में जन्म हो सके। भगवान विष्णु पालन कर्ता हैं। अतः समस्त प्राणियों का पालन-पोषण हो सके। भगवान शिव संहारकर्ता हैं। प्रत्येक जीव जंतु सत्कर्म करते हुए अंततः सद्गति प्राप्त करें तभी यह संसार चक्र अविरल निर्बाध गति से चल सकेगा सूर्य-प्रकाश, उष्णता के प्रतीक है। चंद्रमा-शीतलता के, मंगल ग्रह भूमि तत्व के, बुध ग्रह वनस्पतियों के और बुद्धि के, गुरु ज्ञान और धन-धान्य के, शुक्र पाताल के तथा शनि जल के, नील गगन के प्रतिनिधि देव हैं।

अतः सकल ब्रह्मांड के देवता प्रकृति के समस्त जीव-जंतुओं मानव जाति को जीवन व प्रसन्नता प्रदान करें, ताकि पर्यावरण संतुलन बना रहे। प्रातः काल उनका स्मरण वंदन करके ही हम दिन का आरंभ करें यही श्रेष्ठ मनुष्य का धर्म है।

5. सूर्य प्रार्थना

आदित्यस्य नमस्कारं, ये कुर्वंति दिने दिने।
जन्मांतर सहस्त्रेषु, दारिद्र्यं नोपजायते। ।

अर्थ- सूर्य भगवान को नमस्कार है। जो दिन के स्वामी, दिवस के कार्य करते हैं। आप के उदय से जन्म जन्मांतर के सहस्त्रों दोषों, दरिद्रता का अंत हो जाता है।

कारण एवं महत्व

सूर्यप्रकाश और उष्णता से ही समस्त प्राणियों, पेड़ पौधों को जीवन, भोजन और उद्यम शक्ति प्राप्त होती है। प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया से वनस्पतियों की वृद्धि होती है। अतः मनुष्यों, जीवो के विकास में प्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करने वाले देवता सूर्य भगवान ही हैं। सूर्य ही वृष्टि का कारण है और रोग नाशक भी है।

6. तुलसी प्रार्थना

तुलसी का पौधा चौबीस घंटे ऑक्सीजन छोड़ता है। जिससे कार्बन डाइऑक्साइड का दुष्प्रभाव दूर होता है। प्राणियों की कार्बन डाइऑक्साइड को यह निरंतर अवशोषित करके वातावरण को शुद्ध बनाता है। अतः प्रत्येक घर में इसकी स्थापना, वंदना करना चाहिए। पर्यावरण शुद्धि में तुलसी का विशेष योगदान है।

महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्य वद्धिनी।
आधि-व्याधि हरा नित्यम, तुलसी त्वं नमोस्तुते। ।

अर्थ- सर्व सौभाग्य को बढ़ाने वाली, महाप्रसाद स्वरूप माँ, सर्व रोगों की नाशक, आपत्ति-विपत्ति हारिणी तुलसी माँ को नमस्कार है।

7. गौ/गाय प्रार्थना-

गावो ममाग्रतो नित्यं, गावःपृष्टतः एव च।
गावो में हृदये संतु, गवां मध्ये वसाम्यहं। ।

अर्थ- गायें सदा मेरे आगे रहें। गायें मेरे पीछे भी रहें। गायें मेरे हृदय में रहें और मैं गायों के बीच में निवास करूं।

महत्ता

गायों से ही दूध, दही, घी, मक्खन, प्राप्त होता है जो शरीर के लिए पुष्टि वर्द्धक है। वेदों के अनुसार गाय में तैतीस कोटि देवताओं का वास है। उनके द्वारा त्याज्य पदार्थ अर्थात गोमूत्र और गोबर भी उपयोगी एवं व्याधि नाशक है। गाय आर्थिक, धार्मिक और वैज्ञानिक आदि सर्व दृष्टि से मनुष्य के लिए बहुत लाभकारी और पूजनीय है।

-----00-----

अध्याय-2: नित्य कर्म आत्म शुद्धता

1. शुचिता अथवा शौच कर्म

सर्वप्रथम प्रातः काल शौच कर्म करना अत्यंत हितकारी है। प्रार्थना उपरांत तांबे के कलश में जल भरकर पीना चाहिए। यह आंतों को स्वच्छ करके, शौच क्रिया को सुलभ बनाता है। इसके उपरांत हाथ मुंह की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए। यह कई व्याधियों से मनुष्य को बचाता है। भारतीय संस्कृति में प्रारंभ से ही शौच प्रक्रिया को, निरोगी काया की दृष्टि से उचित माना गया था। वेद पुराणों में इस का विधान भी दिया गया था। शौच के बाद 12 कुल्ले, लघुशंका के बाद चार और भोजन के उपरांत 16 कुल्ले करना चाहिए तथा कुल्ले का जल हमेशा शरीर के बाएं भाग में डालना चाहिए। इसी तरह मल-मूत्र त्याग के उपरांत तथा भोजन के पूर्व भी मनुष्य को कुल्ला करके शुचिपूर्ण होना चाहिए। यह इस बात का प्रतीक है कि प्राचीन काल से ही हमारे यहां, इसके लिए विशिष्ट विधान बनाए गए थे।

महत्ता

शौच प्रक्रिया के समय संक्रमण की संभावना सबसे अधिक होती है। अतः जल द्वारा शुद्धिता अत्यंत आवश्यक है। यह व्याधियों का नाश करता है। वर्तमान समय में भी इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए शौचालय निर्माण एवं हाथ धोने के उचित तरीकों संबंधी अभियान चलाए जा रहे हैं। अत्यंत सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए प्राचीन काल में मिट्टी कंडे की राख इत्यादि का प्रयोग किया जाता था वर्तमान काल में इसके स्थान पर साबुन, डेटॉल सेनेटाइजर्स से हाथ की सफाई करने की श्रेष्ठ तकनीक दिनों दिन बढ़ती जा रही है। इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति में जन्म एवं मृत्यु के समय पर सूतक द्वारा 15 से 21 दिन तक शुद्धता का वातावरण रखा जाता था। शौच के उपरांत ही भोजन इत्यादि सोच एवं स्नान के उपरांत ही पूजन इत्यादि बनाने की प्रथा प्रचलित थी। वर्तमान समय में यदि हम इस इन सब चीजों का ध्यान रखते तो शायद आज हम असाध्य महामारियो से बचे हुए होते।

2. दंत धावन या दांतों की स्वच्छता

शौच-कुल्ला उपरांत दंत धावन अर्थात मंजन करना, दांतो की स्वच्छता एवं निरोग्यता के लिए अति आवश्यक है। आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा मंजन से दांत और मसूड़े दोनों ही मजबूत हो जाते हैं। वेद शास्त्रों में इसकी स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए दातुन की किस्म, लंबाई और जातियों तक का उल्लेख भारतीय संस्कृति में किया गया है।

महत्ता एवं लाभ

भारत में दैनिक क्रियाओं के प्रति जितनी सजगता थी उतनी विश्व के किसी भी राष्ट्र में नहीं थी। दंत धावन या दाँतों की सफाई इसलिए आवश्यक है कि रात्रि में निद्रावस्था के समय जो विष, गला और पेट में जमा हो जाता है, वह दंत-धावन कुल्ला द्वारा पूर्ण तरह साफ हो जाता है। दांतों एवं मसूड़ों की आयुर्वेदिक औषधियों से मालिश हो जाती है। जिससे वे स्वस्थ रहते हैं। समस्त रोगों की शुरुआत मुख एवं दाँतों द्वारा ही होती है, इसलिए खाने-पीने के पूर्व एवं पश्चात दांत और मुंह की सफाई अवश्य करना चाहिए।

3. उबटन/ मृतिका लेप

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही शरीर की स्वच्छता हेतु उबटन का प्रयोग किया जाता था। ऋषि-मुनियों इत्यादि को यह उपलब्ध ना होने पर नदी किनारे की स्वच्छ मिट्टी शरीर में लगाकर स्वच्छता की जाती थी। तात्पर्य है कि शरीर को स्वच्छ रखना अत्यंत आवश्यक है। उबटन के माध्यम से, उसमें मिलाए गए पदार्थों के कारण त्वचा मुलायम, स्वच्छ एवं रोगाणु रहित हो जाती है।

महत्ता

मिट्टी, तीर्थ स्थल, पवित्र नदियों के जल के किनारे की होने से पवित्र और व्याधि-नाशक मानी जाती है। इसी प्रकार उबटन भी अन्न प्रधान होने से निर्मलता और शुचिता अच्छे से प्रदान करता है और इसके कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ते हैं। सामान्यतः वर्तमान समय में साबुन, फेस वाश, शैंपू इत्यादि इसके परिष्कृत रूप है जो त्वचा के अनुरूप ही कार्य करते हैं किन्तु कभी-कभी इन के दुष्प्रभाव भी देखने को मिलते हैं।

4. क्षौरकर्म (हजामत) विधि

भारतीय संस्कृति में पुरुषों के लिए क्षौरकर्म अर्थात दाढ़ी बनाना अनिवार्य बतलाया गया था। पूजन के पूर्व इसका विधान था। एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, श्राद्ध कर्म, शनिवार, मंगलवार, को हजामत नहीं कराई जाती है। विद्या, लक्ष्मी प्राप्ति, संतान सुख के इच्छुक व्यक्ति गुरुवार को हजामत व बाल नहीं कटवाते हैं। स्नान के पूर्व ही यह कर्म किया जाना श्रेष्ठतम माना गया है।

महत्ता

हजामत या शेविंग द्वारा बाल-संक्रमण से शरीर में होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है, एवं कीटाणु नाशक पदार्थों के प्रयोग से त्वचा पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव को भी रोका भी जा सकता है।

5. स्नान

स्नान सूर्योदय के पूर्व प्रातःकाल तीर्थ स्थल में, जलाशय, नदी या जलधार में करना श्रेष्ठतम माना गया है। कुएं के जल से झरने का, झरने से तालाब का, तालाब से नदी का, नदी से तीर्थ स्थल का और तीर्थ स्थल से भी अधिक पवित्र गंगा जी का जल माना गया है। यदि साधन ना हो तो घर में ही नहाने के जल में गंगाजल डालकर मंत्रोच्चारण के साथ स्नान करना चाहिए।

वर्जित स्नान

किसी सरोवर या नदी के किनारे स्नान करने पर-धोबी के कपड़े धोने के पत्थर के पास, संतानोत्पत्ति कार्यस्थल, श्राद्धकर्म और मुन्डन कर्म इत्यादि के समीप स्नान करना वर्जित है। शुद्ध जल से स्नान करने से ही शरीरशुद्धि होती है। क्योंकि धोबी समस्त जातियों के कपड़े एक साथ धोते हैं जिससे बालक, वृद्ध व्यक्ति शीघ्र अस्वस्थ हो जाते हैं। तीर्थ स्थानों, में बड़ी नदियों, जलाशयों, कुंडों में, स्नान की पूर्व घर से ही शौच एवं स्नान करके जाना चाहिए। इन स्थलों में साबुन या शैंपू का प्रयोग भी धर्म शास्त्र के विरुद्ध है। शुद्धता हेतु मिट्टी का लेपन किया जा सकता है। स्नान के पूर्व जलाधिपति वरुण देव की अनुमति माँग कर ही बड़ी नदियों एवं कुन्डों के जल में प्रवेश करना चाहिए।

स्नान मंत्र

गंगा, सिंधु, सरस्वती, जय यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, सरयू, महेंद्र तनया, सर्वषन वती वेदिका, शिप्रा, वेदवती, महासुर नदी खाता गया, गंडकी पूर्णापूर्ण जलेषु मंद सरिता, कुर्वंतनो मंगलं, मंगलम भगवान विष्णु, मंगलम गरुड़ध्वज मंगलं पुन्डरीकाक्षौ मंगलायतनो हरि।। ओम हर हर हर महादेव।।

इस मंत्र उच्चारण के साथ स्नान करने से समस्त नदियों एवं तीर्थ स्थलों में स्नान करने का पुण्य प्राप्त होता है। तन मन में स्फूर्ति आती है।

स्नान के प्रकार

अस्वस्थता वृद्धावस्था में यदि स्नान नहीं किया जा सकता तो इसके लिए हमारी संस्कृति में अलग-अलग प्रकार के स्नान बताए गए हैं जिनसे शरीर शुद्धि की जा सकती है।

1. **मंत्र स्नान-** मंत्र उच्चारण के साथ शरीर पर जल डालना।
2. **गायत्री स्नान-** गायत्री मंत्र को ग्यारह बार बोल कर जल डालना।
3. **अग्नि स्नान-** मंत्रों से भस्म लेपन करके स्नान करना।
4. **कपिल स्नान-** गीले वस्त्रों से शरीर को पोंछना।
5. **वायव्य स्नान-** पंचगव्य से अंग में लेपन करके जल डालना।
6. **पार्थिव स्नान-** गंगा-रज या तुलसी की मिट्टी का लेपन करना।
7. **कटि स्नान-** कमर तक स्नान करके कपड़े बदल लेना।
8. **दिव्य स्नान-** धूप में स्नान सूर्य किरण के द्वारा स्नान करके जल छिड़कना।
9. **चरणोंदक स्नान-** विष्णु भगवान या देव चरणों का जल छिड़कना।
10. **तीर्थ स्नान-** तीर्थ स्थल के शुद्ध जल से स्नान।

महत्ता:

रात्रि में शयन के समय शरीर के नौ द्वारों से मनुष्य के शरीर से मलान्श निकलता है। अतः उसकी शुद्धि के लिए स्नान करना आवश्यक है। शरीर के तापक्रम को संतुलित करने, शरीर को रोग मुक्त बनाने एवं संक्रमण मुक्त रखने के लिए स्नान अत्यंत आवश्यक है। धार्मिक अनुष्ठानों में व तीर्थ स्थलों में स्नान करते समय नदी जलाशय कुंड के जल में मल-मूत्र या थूक नहीं त्यागना चाहिए क्योंकि इनके जल का प्रयोग, धार्मिक अनुष्ठानों एवं पीने में भी किया जाता है। यद्यपि शुद्धि कार्यों के लिए संग्रहित किए जाने वाले जल को, नदी की बहती धारा में से ही प्रयोग किया जाता है। घाट के किनारे स्नान, पूजन, विसर्जन, दीप-दान आदि कार्य संपन्न किए जाते हैं। प्राचीनकाल में प्लास्टिक की वस्तुओं का चलन नहीं था। वर्तमान समय में भी इन्हें पूजन में अपवित्र माना जाता है, सुविधा की दृष्टि से इनका प्रयोग किया जाता है। जलचर जीवो की सुरक्षा, भोजन व जल शुद्धि के लिए तांबे पीतल के सिक्कों पात्रों, दियों, फूल, फल, आटे के दिए, गोलियों, इत्यादि का प्रयोग विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान पर किया जाता था जो पर्यावरण, प्रदूषण नियंत्रण की दृष्टि से भी कल्याणकारी था। तीर्थ स्थल में स्नान के पूर्व, वरुण देवता के पूजन की परंपरा का उद्देश्य था कि हम जलजीवो की सुरक्षा हेतु आटे के दिए जलाएं और जीवो के भोजन हेतु इसे जल में प्रवाहित करें, तांबे के सिक्कों से जल शुद्धि होती है लेकिन आज हम इस वास्तविकता को भूल चुके हैं और रूढ़िवादिता के कारण जल को अशुद्ध बना रहे हैं।

6. वस्त्र धारण

शौच कालका वस्त्र धारण करके तीर्थों में स्नान करना वर्जित है। इससे तीर्थ स्थल एवं नदियों का अपमान होता है, पुण्य कर्मों में कोरे, नवीन या शुद्ध वस्त्र धारण करें। जल में सूखे तथा स्थल में भीगे वस्त्र से संध्या ना करें अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग परिधानों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य की प्रकृति के अनुसार वस्त्र भी सात्विक, राजसिक और तामसिक होते हैं। पूजा काल में श्वेत, केसरिया, पीले वस्त्र पहने जाते हैं। जो मनुष्य के सात्विक गुणों को स्पष्ट करते हैं। राजकाज भोग विलास में चमकीले वस्त्रों का उपयोग किया जाता है। अभद्र एवं अशोभनीय वस्त्र तामसी माने जाते हैं।

महत्ता

स्नान उपरांत वस्त्र धारण करना पवित्रता और सौंदर्य का प्रतीक है। निर्वस्त्र होकर देवों का पूजन करना एवं जलाशय में स्नान करना भी वर्जित है। सिर ढक कर भगवान का पूजन करना उनके प्रति सम्मान व्यक्त करता है। कोरे अर्थात बिना धुले सिल्क के वस्त्र पूजन कार्य में शुद्ध, पवित्र माने जाते हैं। उचित परिधानों /वस्त्रों के द्वारा मानसिक विकार और दुर्भावनायें उत्पन्न नहीं होती है। ठंड, गर्मी, वर्षा से भी रक्षा होती है। वस्त्र धारण वास्तव में, विश्व में अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म और स्वभाव की पहचान है।

7. तेलाभ्यंग विधि/ तेल लगाना

सिर एवं शरीर पर तेल लगाने की प्रक्रिया को तेलाभ्यंग विधि कहा जाता है। बालों में आंवला, चमेली, नारियल का सुगंधित तेल लगाकर कंघी करना चाहिए। इसी प्रकार प्रतिदिन पूरे शरीर में तेल लगाकर मालिश करना चाहिए। यह स्वास्थ्यवर्धक प्रक्रिया है। ऐसी मान्यता है कि षष्ठी एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, मंगलवार, गुरुवार और शुक्रवार को मालिश नहीं करना चाहिए किंतु सिर के बालों में तेल लगाने में कोई दोष नहीं है।

महत्ता

बालों एवं शरीर में प्रतिदिन तेल लगाने से रक्त संचार उचित तरीके से होता है। माँसपेशियां मजबूत होने से शरीर भी ह्रष्ट-पूष्ट बनता है। त्वचा मुलायम और चमकदार बनती है। मालिश से थकावट, कमजोरी, बात जनित रोगों और अस्थि रोगों में लाभ मिलता है। नियमित तेल लगाने से बालों का गिरना, सिर दर्द, रूसी, इत्यादि समस्याएं दूर होती हैं सरसों के तेल की मालिश करने से त्वचा के सूक्ष्म छिद्र खुल जाते हैं, दृष्टि तेज होती है। शुष्की दूर होती है और शरीर में स्फूर्ति आती है रक्त संचार अच्छा होने से असमय बाल सफेद नहीं होते हैं। बालों की जड़ों के नीचे तेल ग्रंथियां होती है शरीर व अन्य स्थानों पर मालिश करने से इनमें उत्तेजना आती है और चेहरे से झुर्रियां भी दूर होती हैं, मस्तिष्क में रक्त संचार यथोचित तरीके से होने से समस्त ज्ञानेंद्रियों की क्षमता बढ़ती है और स्मरण शक्ति भी बढ़ती है।

8. शिखा बंधन

भारतीय संस्कृति में शिखा बंधन को एक अनिवार्य कर्म के अंतर्गत शामिल किया गया था। वर्तमान समय में यद्यपि इसका प्रचलन समाप्त हो चुका है। सिर में बालों के मध्य एक ऐसा बिंदु स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है जहां से बाल दाएं या बाएं चक्र के

समान घूमते हुए दिखते हैं भा इसे भौंरा, भोरिया भी कहते थे। इसी क्षेत्र के केंद्र को प्रथम मुंडन के समय पर भी छोड़ दिया जाता है अर्थात उन्हें काटा नहीं जाता है, यही शिखा कहलाती है पूजन कार्यों में यथा विधि बांधी जाती है। ऐसी मान्यता है कि इसके नीचे मस्तिष्क का बुद्धि क्षेत्र होता है जिससे कसकर पकड़ने की आवश्यकता होती है। इसलिए यहां के बालों को छोड़कर, प्रथम मुंडन कराया जाता है। बाद में विवाह के पूर्व इस शिखा को काटा जाता है जिसे बड़ा-मुंडन भी कहते हैं। इसको लपेटकर गांठ लगाने की क्रिया को शिखा बंधन कहते हैं।

महत्ता

यह मस्तिष्क का सर्वाधिक तेजस्वी स्थल माना जाता है। भारतीय संस्कृति में यह वर्णित है कि शिखा के नीचे के स्थल को मेधा शक्ति का केंद्र माना गया है अर्थात यहां के केशों को बढ़ाकर ग्रंथि बांधकर मस्तिष्क के तेज अथवा मेधा शक्ति को नियंत्रित किया जाता है इससे शक्ति वर्धन होता है। मस्तिष्क में आने वाले भावों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। हिंदू धर्म में शिखा का पुरूषों से अटूट संबंध है। यह मनुष्य के आदर्श सिद्धांतों के ऊपर अंकुश का प्रतीक है। पूजा-पाठ के समय इस में गांठ लगाने से संकलित अर्जित ऊर्जा एवं तरंगे बाहर नहीं निकल पातीं इनके अंतर्मुख हो जाने से मानसिक शक्तियों का पोषण, सद्बुबुद्धि की प्राप्ति, वासना की कमी, आत्मिक शक्ति बुद्धि शारीरिक शक्ति का संचार और अवसाद से बचाव आदि अनिष्ट कारी प्रभावों से रक्षा होती है। सुरक्षित नेत्र दृष्टि और सफलता प्राप्त करने के लिए शिखा बंधन महत्वपूर्ण परम्परा लुप्तप्राय हो गयी है।

9. यज्ञोपवीत धारण

यज्ञोपवीत गुरु दीक्षा लेने के बाद उसी समय, प्रथम बार गुरु श्री के हाथों से प्राप्त करके धारण करना अत्यंत शुभ दायक माना जाता है। यह तीन धागों का (कच्चे धागे हाथ से बने) शुभ होता है, यज्ञोपवीत श्रावणी कर्म में पूजित होना चाहिए अथवा गायत्री मंत्र से दस बार अभिमंत्रित करके, देवताओं का आव्हान करके शुद्ध करना चाहिए। यज्ञोपवीत को जनेऊ भी कहते हैं। यज्ञोपवीत छोटा अर्थात सीने से ऊपर रहने वाला अथवा नाभि से नीचेतक लंबा नहीं होना चाहिए।

महत्ता

धार्मिक कार्यों में भी अंगोछा के अभाव में दो जनेऊ धारण किए जा सकते हैं ऐसी हिंदू संस्कृति में मान्यता है यज्ञोपवीत धारण करने का विधान, मल-मूत्र त्याग के समय जनेऊ कान में लगाना चाहिए यदि भूल जाए तो पुनः जनेऊ धारण करना चाहिए। श्मशान घाट यात्रा में जाने के बाद वापस आकर नया पहने, पुराना जल में विसर्जित कर देना चाहिए। गायत्री मंत्र का जाप करते हुए सिर से पीठ की तरफ करके उतारना चाहिए। जनेऊ में ब्रह्मा विष्णु महेश का वास होता है जिसको धारण करने से सर्व सिद्धि एवं यज्ञ का अधिकार प्राप्त हो जाता है बिना इसके वेद पाठ या गायत्री जप या कोई भी पूजन का अधिकार प्राप्त नहीं होता है।

10. प्राणायाम एवं सूर्य नमस्कार

भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम अनुपम देन योग विद्या है। विश्व के अन्य किसी भी राष्ट्र में यह ज्ञान उपलब्ध नहीं है। महर्षि पतंजलि ने मनुष्यो को सर्वप्रथम इस की शिक्षा दी। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता में यह दिव्य ज्ञान सुनाया। सांसों को

नियंत्रित करना प्राणायाम है। यह अत्यंत लाभकारी प्रक्रिया है। प्राणायाम के बाद सूर्य नमस्कार की बारह मुद्राएं बनाकर नमन करना चाहिए। सूर्योदय व सूर्यास्त के समय प्राणायाम एवं सूर्य नमस्कार करना अधिक लाभप्रद होता है। इससे सूर्य किरणों से भी ऊर्जा प्राप्त होती है।

महत्ता

सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम से शरीर की समस्त इंद्रियों एवं अंगों द्वारा शुद्ध वायु एवं चेतना का संचार हो जाता है। शुद्ध हवा, प्रकाश को यथोचित विधि से सेवन करने से मनुष्य स्वस्थ, बुद्धिमान और संस्कारित बनता है। आज योग पद्धति के उपयोग द्वारा अनेक असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। अंतर्राष्टीय योग दिवस के माध्यम से यह विश्व धरोहर बन गया है।

11. ईश प्रार्थना

प्रत्येक मनुष्य को अपने आराध्य देव के समक्ष नेत्र बंद करके दो मिनट भगवान का ध्यान करना चाहिए। इसके साथ ही श्लोक, मंत्र, स्तुति का वाचन करने की प्रक्रिया ही प्रार्थना कहलाती है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या, च द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः। ।

अर्थ- तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही भाई हो, तुम ही साथी हो, तुम ही विद्या हो, तुम ही धनसंपदा हो तुम ही मेरे सब कुछ हो, तुम मेरे सब देवों के देव हो।

महत्ता

समस्त ज्ञानेंद्रियों को स्थिर रखकर, ईश्वर आराध्य देव का ध्यान करने से, मनुष्य को अपार शांति मिलती है। क्योंकि यह संयम की प्रथम सीढ़ी है। धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाकर, हमारे ऋषि-मुनियों ने अष्ट सिद्धियां प्राप्त की है। आत्मज्ञान, आत्मिक शक्ति और शांति प्राप्त की है। ज्ञानेंद्रियां-आंखें, कान, नासा, जिव्हा, स्पर्श को विश्राम देने से, इनकी कार्य क्षमता में भी वृद्धि होती है। वास्तव में यह मन को एकाग्र करने की शक्ति है। भगवान की प्रार्थना करते समय, उनकी छवि को तब तक निहारना चाहिए जब तक कि आंख बंद करने के बाद भी वही दर्शन ना हो। यही ध्यान मुद्रा है। दीपक की ज्योति के समक्ष इसका अनुभव अनवरत साधना से पूर्ण संभव है। दिव्य शक्ति के उदय होने से ईश्वर की अलौकिक शक्तियां धीरे-धीरे हमारे अंदर प्रविष्ट होने लगती हैं और मनो विकार नष्ट हो जाते हैं। यह आत्मज्ञान की सच्ची अनुभूति कहलाती है।

-----00-----

अध्याय-3: पूजन पूर्व तैयारी एवं महत्व

1. उरेन डालना या स्थान सुचिता

अर्थ एवं मान्यता

भारतीय संस्कृति में उरेन डालना शुद्धता एवं शुचिता का प्रतीक है। उरेन डालने का तात्पर्य मुख्य द्वार या पूजा स्थल पर गोबर से लीपना है। शुभ कार्यों में गोबर से पांच कोने बनाकर लीपते हैं। जबकि अशुभ कार्यों में चार कोने का लीपते है। इस संबंध में एक कथा प्रचलित है-धर्म शास्त्रों में गाय में संपूर्ण देवों का वास माना गया है। गौश्रेष्ठ कामधेनु गाय समुद्र मंथन के समय प्रकट हुए चौदह रत्नों में से एक मानी गई है। ऐसी श्रुति है कि भगवान विष्णु ने गौ माता की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए सभी देवताओं को गाय के शरीर में अपना स्थान लेने के लिए प्रोत्साहित किया। सभी देवताओं ने अपना अपना स्थान ले लिया किंतु लक्ष्मी जी एवं गंगा जी अभिमानवश वहां नहीं पहुंची, तब नारद जी ने कामधेनु गाय की महिमा समझाते हुए उन्हें भी स्थान लेने की प्रेरणा दी और अंत में जब लक्ष्मी जी और गंगा जी वहां पहुंची तब विष्णु भगवान ने हंसते हुए कहा कि अब तो केवल दो त्याज्य स्थान ही शेष है, शर्मिंदा होकर गंगा जी ने गौ मूत्र में और लक्ष्मी जी ने गोबर में अपना स्थान ग्रहण किया तभी से गोबर से लीपना शुभ माना जाता है। यदि माँगलिक कार्य करने के लिए संयोगवश गोबर उपलब्ध न हो सके तो गेरू अर्थात लाल मिट्टी या हल्दी से भी स्थान को पवित्र कर सकते हैं।

महत्ता

शास्त्रों के अनुसार गोबर से लीपना किसी भी अनुष्ठान, पूजा कार्य में तथा प्रतिदिन द्वार पर अमावस, पूर्णिमा व पर्व पर अत्यंत लाभकारी है। इससे जहां परिवार में सुख, समृद्धि, वैभव, ऐश्वर्य और संपत्ति की वर्षा होती है, वहीं वैज्ञानिक दृष्टि से नकारात्मक प्रभाव भी दूर होते हैं। वेदों में वर्णित तथ्यों के अनुसार गोबर में लक्ष्मी जी का वास है। अतः उनकी प्रसन्नता हेतु गोबर से लीपना ही शुभ कारी है। उरेन डालते समय 5 कोने बनाने के लिए उत्तर पूर्व की ईशान दिशा में 2 कोने बनाते हैं जो देवागमन का द्वार कहलाता है, तथा 5 कोने पंचतत्व-अग्नि, जल, वायु, आकाश एवं पृथ्वी का प्रतीक है। कोने की संधि-स्थल, देव-द्वार का प्रतीक है।

2. चौक पूरना/ बनाना अथवा भूमि सज्जा

चौक सौंदर्य और स्थायित्व का प्रतीक है, पूजा कार्य में बनाए गए चौक विशिष्ट आकृति के होते हैं, ये नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित करके सकारात्मक प्रभाव देते हैं। भगवान गणपति, देवी या शिव पूजन में कोई भी आकृति के चौक तथा सूर्य पूजा में गोल आकृति के चौक बनाना शुभकर है। माँ लक्ष्मी के पूजन में अष्टभुजी आठ खंडों का चौक बनाया जाता है ये 8 दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, वायव्य और नैत्रत्य के प्रतीक हैं, प्रत्येक कलियाँ/ भुजा पर कंगूरे की आकृति की लाइनों पर तीन तीन लाइने बनाई जाती है जो क्रमशः 8 प्रहर और 24 घंटों की प्रतीक है।

यह वास्तव में श्री यंत्र की आकृति का चौक है, जो लक्ष्मी जी को अति प्रिय है। चौक इष्ट देवताओं के पूजन अनुसार भी बनाते हैं। पूजन उपरांत संपूर्ण सामग्री एकत्र कर जल में विसर्जित करते हैं।

महत्ता

चौक प्रायःआटे का बनाते हैं जो धान्यलक्ष्मी या अन्नपूर्णा का प्रतीक है, इसे हल्दी रोली से भरने का अर्थ है-गुरु और मंगल ग्रह की शांति, वहीँ दूसरी ओर विसर्जन के पश्चात जलचर जीवों का कल्याण होता है। चौक पृथ्वी माँ का श्रंगारित स्वरूप है, जिसे बनाकर हम पूजन पूर्व सर्वप्रथम वसुधा माँ को सुसज्जित करके उनकी अनुमति एवं कृपा दृष्टि माँगते हैं, और कार्य की स्थिरता की कामना करते हैं।

3. चौकी स्थापना

चौकी स्थापना पूजन के पूर्व इष्ट देवता के सम्मान का प्रतीक है, अलग-अलग पूजन के लिए अलग-अलग आकार की चौकी प्रयुक्त की जाती है, सामान्यतः चौकी अर्थात चार पायो वाला आसन कहलाता है, जो लकड़ी या धातु द्वारा निर्मित होता है, यह धर्म का प्रतीक है, धर्म के चार स्तंभ सत्य, तप, दया और दान है।

चौकी के विभिन्न प्रकार

1. **चौकोर चौकी-** यह धर्म का प्रतीक स्वरूप है। सामान्यतः समस्त पूजन कार्यों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसके चारपाये, चारों दिशाओं व स्थिरता के प्रतीक हैं। नवग्रह स्थापना गणेश पूजन, शिव पूजन, देवी पूजन में इनका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। सामान्यतः यह चारों दिशाओं का भी प्रतिनिधित्व करती है।
2. **गोल चौकी-** सूर्य भगवान के पूजन एवं सुहागलों में औसान बीबी के पूजन में गोल पटा या चौकी उपयुक्त मानी जाती है। यह सूर्य भगवान का प्रतीक है और सुहागलों में अखंडता का प्रतीक है क्योंकि उसमें कोई भी जोड़ या अवरोध नहीं होता है।
3. **षट्भुजी चौकी-** यह सौंदर्य का प्रतीक है, सामान्यतया भगवत पूजन के अतिरिक्त विविध संस्कारों जैसे जन्म, विवाह, चौक, मुंडन और मोचायना आदि कार्यक्रमों में उपयोगी एवं सुंदर सुविधाजनक होती है। यह नक्षत्र और तारामंडल का प्रतीक है जो कि अटलता और अमिटता का संदेश देते हैं।

महत्ता

चौकी स्थापना का प्रमुख उद्देश्य अपने इष्ट देव को अपने से उच्च स्थान प्रदान करने की भावना का प्रतीक है, यजमान सामान्यतः जमीन में आसन बिछाकर पूजा करते हैं, इसलिए अन्य देवताओं, इष्ट भगवान को उपयुक्त चौकी में स्थापित करते हैं। धर्म के चार स्तंभ-सत्य, तप दया, और दान को हम अपने जीवन में उतार कर जन कल्याण करें। इस विशिष्ट उद्देश्य से पूजन तथा संस्कार कार्यक्रम सम्पन्न करें।

4. नवग्रह स्थापना

नवग्रह की स्थापना, प्रत्येक पूजन कार्य में अनिवार्य रूप से की जाती है। इसमें चौकोर चौकी या पटा पर ब्राह्मण या पुरोहित द्वारा सफेद कपड़ा बिछाकर आटे व हल्दी से नौं खंड बनाये जाते हैं। प्रत्येक खंड में सिक्के पर पूजा सुपारी रखकर नवग्रहों

के इच्छित रंगों के चावल रखते हैं। इस प्रकार प्रत्येक खंड की आकृति भी शास्त्र विधि के अनुसार पृथक पृथक होती है। षोडशोपचार से पूजन करके हल्दी, रोली, चावल फूल दीप नैवेद्य और जनेऊ चढ़ाकर आरती के द्वारा नवग्रह शांति करते हैं। प्रत्येक देव का पूजन यथाविधि मंत्रोच्चारण के साथ किया जाता है। जिससे समस्त विघ्नों का नाश होता है। और परिवार में सुख समृद्धि आती है अतः प्रत्येक शुभ कार्यों में नवग्रह पूज्यनीय हैं। हिंदू संस्कृति में नवग्रह-सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु हैं। सनातन धर्म में ऐसी मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इन ग्रहों के पृथक पृथक अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। अतः उनकी शांति हेतु प्रत्येक पूजन के पूर्व इन ग्रहों का पूजन अनिवार्य रूप से किया जाता है। मंत्र उच्चारण एवं उचित स्थान पूजन के द्वारा यथोचित पूजन अर्चन कर के, ग्रह शांति करवाते हैं। विशिष्ट दशाएं होने पर, पुरोहितों द्वारा आवश्यक मंत्र जाप भी संपन्न किया जाता है। पूजन समाप्ति के उपरांत ग्रहों के अनुरूप सात प्रकार के अनाज दान किए जाते हैं।

महत्ता

सनातन धर्म के अनुसार हमारे जीवन में ग्रहों के अनुकूल प्रतिकूल प्रभाव होना, जीवन चक्र की स्वाभाविक अनवरत प्रक्रिया है। ज्योतिष शास्त्र में इन से मुक्ति पाने और शांति के अनेक उपाय किए गए हैं। ग्रह दशा दोष में संबंधित ग्रह का जाप करने से कष्टों का निवारण होता है। ब्रह्मांड में यह सात ग्रह विराजमान है, जिसकी किरणें हमारे ऊपर पड़ती हैं जिनसे मनुष्य पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा भारतीय ज्योतिष-शास्त्रियों का मानना है।

5. कलश स्थापना

कलश में ब्रम्हांड की व्यापकता निहित है। इसलिए किसी भी पूजन कार्य के शुभारंभ की पूर्व कलश को अग्र स्थान देकर उसकी स्थापना की जाती है। तांबे या पीतल के कलश में शुद्ध जल भरकर, पांच या सात आम के पत्तों की टहनी लगाकर उसके ऊपर मिट्टी या तांबे का दिया रखा जाता है, उसमें रुई की दो बत्ती बनाकर तेल भरकर रखते हैं। कलश के नीचे चावल या गेहूं का छोटा सा ढेर बनाकर रखा जाता है। कलश के अंदर पांच या ग्यारह रुपये के सिक्के, चावल, हल्दी की गाँठ और सुपारी डाली जाती है। कलश के मुख में विष्णु जी, कंठ में शंकर जी और नीचे के भाग में ब्रह्मा जी का वास है, मध्य भाग में माँ शक्ति का वास है, सभी नदियों का तीर्थ जल और सभी समुद्रों का जल इस में समा कर मेरे पापों का नाश करके भगवान मुझे शांति प्रदान करें इस उद्देश्य से कलश की स्थापना की जाती है। भारतीय संस्कृति में कलश दशाधीराज वरुण भगवान का प्रतीक है। हमारे ऋषियों ने समस्त बड़ी नदियों और उनके संगम स्थल सिंधु के दर्शन घट में कराकर जल को ओजस्वी स्वरूप प्रदान किया है।

महत्ता

जीवन दायक जल की महत्ता से प्रेरित होकर मंगल दायक गौरव में भव्य प्रतीक का सजन करके ही कलश पूजन की परंपरा आरंभ हुई है। कलश मानव देह का प्रतीक है, जिस प्रकार इस का जल, विशाल जल राशि के स्वामी वरुण का अंश है, और ज्योति उसका सौंदर्य है। उसी प्रकार देहरूपी कलश में बसी, हमारी जीव आत्मा रूपी ज्योति, चैतन्य परमात्मा का अंश मात्र है। देह रूपी कलश की पवित्रता केवल तब तक है जब तक उसमें जीवन रूपी जल और प्राण दायक ज्योति है। अतः पूर्णता की अनुभूति का प्रतीक कलश जीवन का सार्थक दर्शन है। आम के पत्तों की टहनी के ऊपर मिट्टी के दीए में तेल बत्ती भरकर उसे प्रज्ज्वलित करने का भाव यह है कि जल है तो पेड़ पौधे हैं और पेड़ पौधे हैं तो खाद्य अन्न गेहूं चावल हैं अतः ये दृढ़ता और वृद्धि के प्रतीक हैं। इस प्रकार कलश माँगलिकता का प्रतीक है। इसलिए किसी भी अनुष्ठान, राज्याभिषेक, गृह प्रवेश उत्सव, विवाह यात्रा का प्रारंभ कलश स्थापना से किया जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार कलश की प्राप्ति समुद्र मंथन से अमृत कलश के रूप में हुई थी, इसलिए इसे सर्वप्रथम कलश को लाल कपड़े, स्वास्तिक, आम के पत्तों, नारियल, सिक्का, कुमकुम, अक्षत, पुष्प आदि से अलंकृत करके ब्रह्मा विष्णु महेश का पूजन करके वरुण देव का आवाहन किया जाता है। ताकि कलश हमें समुद्र के समान वैभवशाली एवं रत्न तुल्य सामग्री प्रदान करें, जिससे जीवन में खुशियों का संचार हो सके।

6. गौर गणेश स्थापना

भारतीय ग्रंथों के अनुसार आध्यात्मिक दृष्टि से हमारी इंद्रियों का एक गण है, इस गण को संचालित करने वाला मन है, अतः कार्य सिद्धि के लिए गणाधिपति गौर गणेश का पूजन, प्रत्येक स्थल में होता है, एक दांत वाले, बड़े शरीर वाले, स्थूल उदर वाले, हाथी के समान मुख वाले और विघ्नों का नाश करने वाले गणेश जी को प्रणाम करके पूजन कार्य आरंभ किया जाता है। गणपति अर्थात मन को प्रारंभ से ही शांत और स्थिर करके कार्यों को निर्विघ्नं करने के लिए ही गौर गणेश की स्थापना की जाती है। यह प्रायः गोबर या सुपारी के बनाकर सिक्के पर बैठाए जाते हैं, क्योंकि सिक्का अर्थात मुद्रा लक्ष्मी जी का प्रतीक है और गणपति जी माँ लक्ष्मी के मानस पुत्र भी हैं अतः यह आसन माँ की गोद में पुत्र स्वरूप को इंगित करता है। इसके साथ एक मान्यता यह भी है कि लक्ष्मी चंचला होती है इसलिए उन पर बुद्धि के देवता गणेश जी का अंकुश आवश्यक है। ताकि कार्य सद्भावना से निर्विघ्नं पूर्ण हो सकें। गणपति जी का स्वरूप अत्यंत सारगर्भित है उनके चेहरे की बनावट प्रसाद सवारी आदि सभी में रहस्य छिपा है। जो उन्हें पूजन में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। गणेश जी का पद्मासन इस बात का प्रतीक है कि कार्य की बैठक या आसन मजबूत होना चाहिए। उतावलापन से सफलता नहीं मिलती।

महत्ता

गौर गणपति के पास कोई बाह्य सौंदर्य ना होने पर भी आंतरिक सौंदर्य का वैभव है, जो हमें यह संदेश देता है कि कोई भी कार्य मनोकामना की सफलता हेतु हममें स्वयं भी गुण होने चाहिए। वास्तव में गणपति जी ऐसे नेतृत्व के प्रतीक है। गणपति का सिर प्रकृति के सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी हाथी का है अर्थात महान कार्य करने वाला निर्बुद्धि न हो। सूप जैसे कान का तात्पर्य यह है कि सत्व को रखकर, सत्वहीन तत्वों को हटा दो। इनकी सूक्ष्म आंखे, सूक्ष्म दृष्टि रखने की प्रेरणा देती है। गणपति जी के दो दांत हैं। पूर्ण दाँत श्रद्धा का और टूटा हुआ दांत मेधा का सूचक है, अर्थात जीवन विकास हेतु पूर्ण श्रद्धा और विश्वास आवश्यक है। गणपति जी के चार हाथ हैं। एक हाथ में अंकुश है जो मानवीय विकारों, वासना, पर संयम का परिचायक है। दूसरे हाथ में पाश है, जो इंद्रियों या अनुयायियों को आवश्यकतानुसार दंड देने की सामर्थ का सूचक है। तीसरे हाथ में मोदक है जो मोद अर्थात आनंद का सूचक है। अर्थात महापुरुषों का आहार सात्विक, मधुर और पौष्टिक हो। मोदक तत्व ज्ञान का प्रतीक है। अर्थात कार्य के समस्त पहलू एक दूसरे से मिलाकर इस प्रकार से कार्य करें कि हर बिंदु मोदक की तरह मधुर हो जाए, फीके मीठे सरस निरस मिलाकर मीठा रूप प्रदान करें। चौथा वरद हस्त भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए है।

गणपति लंबोदर भी है, जिसका तात्पर्य है कि अनंत बातों को अपने पेट के अंदर समाविष्ट करने की शक्ति होना चाहिए। गणपति जी के छोटे पैर बुद्धिमत्ता की निशानी है, जो इस बात की सूचक है कि सफलता के मार्ग में छोटे छोटे कदम रखे लंबे नहीं जाएंगे नहीं। गणपति का वाहन चूहा है जो इस बात का प्रतीक है कि सफलता के महल में छोटे रास्ते से प्रवेश करने की क्षमता हो विशालकाय वाहन द्वार पर ही रुक जाएंगे चूहा माया का भी प्रतीक है, इसकी सवारी करने वाले में अंकुश लगाने की क्षमता हो अतः मंगल मूर्ति, ज्ञान मूर्ति गणेश जी प्रथम पूज्य देव है।

7. अखंड ज्योति स्थापना

दीपक प्रकाश का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। किसी भी कार्य की सफलता हेतु अग्निदेव को साक्षी मानकर कार्य करने की मान्यता इसलिए भी है क्योंकि वेदों में वर्णित पंचतत्व भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश में से "अग्नि" भी एक है। यह पृथ्वी पर सूर्य का एक परिवर्तित रूप है अतः देवी देवताओं को प्रसन्न करने हेतु सकारात्मक ऊर्जा को केंद्रीभूत करने के लिए दीप प्रज्वलन किया जाता है। मानव जीवन का प्रभाव असत्य से सत्य की ओर अर्थात अंधेरे से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर होना चाहिए। सामान्यतः दीपक में तेल भर कर दो बत्ती एक फूल बत्ती रखकर उसे प्रज्वलित करके, ईस विनय करके, अपनी मनोकामना पूर्ण होने की मन्नत माँगते हैं। अज्ञानता के अंधकार को दूर करके ज्ञान प्रकाश फैलाने वाला श्रेष्ठ कुंज प्रतीक है दो बत्ती आत्मा और परमात्मा के एकत्व का प्रतीक है। जिन से ज्ञान रूपी प्रकाश फैलता है। दीपक वह है जो शुभ करता है, कल्याण करता है, आरोग्य रखता है, धन संपदा

देता है, दुष्ट, बुद्धि, शत्रु का नाश करता है ऐसी दीपज्योति को हम सभी नमस्कार करते हैं।

अखंड ज्योति पात्र- सामान्यतः अखंड ज्योति पात्र पीतल धातु के विशिष्ट आकृति के, आसानी से प्रयोग किए जाते हैं यदि ये उपलब्ध ना हो तो मिट्टी के दीपक में फुल बत्ती रखकर शुद्ध देसी घी डालकर जलाया जा सकता है। अखंड ज्योति पूजा स्थल में ईशान कोण में अर्थात अपने बाएं ओर और भगवान के दाहिनी ओर रखना चाहिए एवं साधक का मुंह पूर्व की ओर होना चाहिए। कार्यक्रम पूर्ण होने तक संकल्पित अवधि के लिए ज्योति जलते रहना आवश्यक है यदि यह बुझ जाए तो अनिश्चिता सूचक या अशुभ संकेत मानते हैं। अज्ञान, तिमिर हटाने और देवीय विचारों का प्रकाश फैलाने, अखंड रूप से जलते रहना चाहिए।

महत्ता

सौभाग्य, सुख, समृद्धि, वैभव, ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अखंड ज्योति जलाई जाती है। इसकी मंद मंद ज्योति मानव को अंतरात्मा की ज्योति का मार्ग दर्शन कराता है। एक दीपक में सैकड़ों दीपों को जलाने की क्षमता है जबकि आधुनिक विद्युत दीपक एक दीपक को भी प्रचलित नहीं कर सकता। अखंड ज्योति से मनुष्य को दीपक बनने की प्रेरणा मिलती है। मन में एकाग्रता आती है। देसी घी के दीपक से निकलने वाली ऊर्जा से वातावरण शुद्ध होता है, नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है, जिससे अनेक व्याधियों के जीवाणुओं का नाश होता है। ऐसी मान्यता है कि अग्निदेव को साक्षी मानकर उनकी उपस्थिति में किए गए प्रत्येक कार्य अवश्य ही सफल होते हैं। दीपक अर्थात प्रकाश, ज्ञान का भी प्रतीक है। परमात्मा, प्रकाश और ज्ञान रूप में ही सब जगह व्याप्त है। दीपक जलाने के पीछे एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि प्रभु हमारे मन में अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाए। गहरे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएं। ताकि हम भी जनकल्याण कर सकें।

8. आसन व्यवस्था

शुभकार्यों में आसन बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है। आसन दृढ़ता सम्मान और स्थायित्व का प्रतीक है। बिना आसन के किया गया पूजन अशुद्ध और निरर्थक हो जाता है। यह हमेशा उत्तर दक्षिण दिशा में रखकर बिछाना चाहिए। आसन ग्रहण करने के पूर्व उसे स्पर्श करके माथे पर हाथ लगाकर प्रणाम करना चाहिए। पूजन समाप्ति के उपरांत आसन का एक कोना पलटा कर, आचमन जल और अक्षत डालकर, आसन को प्रणाम करके, माथे पर लगाना चाहिए अन्यथा पूजन का संपूर्ण पुण्य इंद्र देव को समर्पित हो जाता है।

आसन दो प्रकार के होते हैं-पहला ब्राह्मण का आसन और दूसरा पुरोहित का आसन। यजमान का आसन नीचा होता है और पुरोहित का आसन ऊंचा होता है यह उनके प्रति सम्मान का प्रतीक है। पूजन के समय साधक का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए क्योंकि पूर्व अलौकिक शक्ति के केंद्र भगवान सूर्य की दिशा है और उत्तर दिशा देव नगरी स्वर्ग की मानी जाती है। दक्षिण दिशा यम की दिशा है। अतः अंतिम संस्कार

अथवा पितर पूजन के कार्य करते समय दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके आसन रखते हैं।

महत्ता

विभिन्न उद्देश्यों से किए गए पूजन हेतु अलग-अलग आसन का विधान है, जैसे मृग चर्म का आसन धन और मोक्ष का साधक है। कुशा का आसन ज्ञान और शांति देने वाला है। कंबल का आसन उत्तम गति या सदगति देने वाला होता है। काष्ठ, पत्थर अथवा जमीन पर बैठना न्यायसंगत नहीं है। वस्त्र के आसन से पूजा व्यर्थ हो जाती है। बिना आसन के पूजा करने से निर्धनता, व्याधियां आती हैं और अपने धार्मिक कृत्य अनुष्ठान में सिद्धि नहीं मिलती। आसन बिछाने से शरीर में आध्यात्मिक शक्ति का संचय होता है पूजा के समय प्राप्त ऊर्जा पृथ्वी में समाहित ना हो जाए इसलिए पृथ्वी और साधक के बीच में कुचालक के रूप में आसन बिछाया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से शरीर को सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है और नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। इसलिए इसे पूजा के लिए आवश्यक, महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक माना गया है।

9. पूजा थाली सजा-देवपूजा अनुरूप

हिंदू धर्म में पूजा थाली का पूजन में महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न परंपराओं, पर्वों एवं देवी-देवों के अनुसार पूजन सामग्री थाली में सजाई जाती है। पूजा सामग्री को विशिष्ट शैली से पूजा थाल में रखना ही पूजा थाली सज्जा कहलाता है। जिससे वह आकर्षक और सौंदर्यमयी प्रतीत होती है।

पूजा थाली की सामग्रियां

पूजा थाली में अनेक वस्तुओं का उपयोग देवताओं के अनुसार किया जाता है जो निम्नलिखित है-

1. जल-शुद्ध जल, गंगा जल, कुंड जल, गुलाबजल, नदियों का जल आदि।
2. चंदन-पीला, सफेद, लाल, केशर युक्त,
3. रोली-कुमकुम, सिंदूर, गुलाल आदि
4. हल्दी-पीली, काली हल्दी गांठ, पिसी हुई हल्दी आदि
5. पंचामृत-दूध, दही, घी, शक्कर, शहद,
6. अक्षत-चावल, तिली, चना दाल, जबा, सरसों-पीली एवं काली
7. पुष्प-गेंदा, गुलाब, बेला, धतूरा, केतकी, कमल, जासौन
8. पत्र-शमी, तुलसी, आम, केला, बेलपत्र, दूर्वा,
9. रक्षा सूत्र-जनेऊ, मौली, राखी, अनंत
10. वस्त्र - सफेद, पीला, लाल, हरा, गुलाबी, नीला, काला, चुनरी, दुपट्टा, बाघ अंबर जैसा गमछा।
11. नैवेद्य-लड्डू, पेड़ा, पंजीरी, चूरमा, पुए, दूध, गुड़, धना और चना
12. फल-नारियल फल अनार, केला, बेर आदि
13. पान-सुपारी, लौंग, इलायची आदि
14. मेवा-काजू, किसमिस, बादाम, चिरौंजी, मखाना, महुआ, खारक आदि

15. सप्तधान्य-चावल, गेहूं, उड़द, मूंग, भुने चने, लाई आदि
16. सोना, चांदी, मोती, माणिक, नवरत्न, ताम्बा, लोहा।

महत्ता

पूजा थाली पूजन कार्य का दर्पण है, जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसे देखकर ही पूजन कार्य का ज्ञान हो जाता है कि यह किस देव लिए लगाई गई है, उसकी उपयोगिता और कार्य का स्पष्ट दर्शन ही पूजा थाली की श्रेष्ठता है। एक बार पूजन आरंभ हो जाने के पश्चात यजमान को आसन नहीं छोड़ना चाहिए इसलिए पूर्ण व्यवस्थित ढंग से पूजा थाली सजाना चाहिए ऐसी मान्यता है की पूजा समाप्ति के पूर्व स्थान छोड़ने से पूजन का संपूर्ण पुण्य इंद्र देवता को प्राप्त हो जाता है और हमारे आराध्य रुष्ट हो जाते हैं अतः पूर्णता, शांति और फल प्राप्ति के लिए यथोचित सामग्री थाल में सजाई जानी चाहिए।

10. गठबंधन

गठबंधन विवाह संस्कार एवं धार्मिक कार्यों में विवाहित होने का प्रतीकात्मक स्वरूप है। इसका तात्पर्य है वधू का दायित्व वर द्वारा अपने कंधों पर उठाना। वर के कंधे पर रखे जाने वाले दुपट्टे से वधू की साड़ी या चुनरी का एक कोना बांधना ही गठबंधन कहलाता है। इस गठबंधन में सिक्का, पुष्प, हल्दी, दूर्वा और अक्षत बांधते हैं इस बंधन का तात्पर्य है कि दोनों शरीर एवं मन से एक इकाई के रूप में जीवन लक्ष्य की यात्रा में एक दूसरे के पूरक बनकर चलेंगे। यही अटूट बंधन है। गठबंधन प्रत्येक पूजन कार्य में अनिवार्य माना जाता है। पत्नी के अनुपस्थित रहने, असमर्थ रहने पर भी इसे बनवाकर ही अपने साथ लेकर ही पूजन करते हैं। गठबंधन के लिए यदि पत्नी उपस्थित नहीं है तो उसकी प्रतिमा के साथ भी पूजन किया जा सकता है।

महत्ता

गठबंधन में बान्धी जाने वाली प्रत्येक सामग्री का अपना महत्व है जो क्रमशः सिक्का-धनसंपदा, पुष्प-प्रसन्नता, हल्दी-आरोग्यता, दूर्वा-अमूल्यता और अक्षत-अखंडता का प्रतीक है। विवाह में वर अपने कंधे पर वधू के लिए उक्त सभी बातें पूर्ण करने का दायित्व लेता है। इसके द्वारा ही पूजन करने से सिद्धि प्राप्त होती है एवं कार्य सफल होते हैं। वधू की चुनरी मान मर्यादा का प्रतीक है जिसमें बांधी गई प्रत्येक सामग्री का भाव उसकी खुशी स्वास्थ्य और अमूल्यता की रक्षा है जिससे वह अपने कंधे पर उठाता है।

-----00-----

अध्याय-4: पूजन हेतु आवश्यक पात्र

1. आचमन पात्र एवं आज मनी

भगवान को पूजा के समय जल चढ़ाने के लिए प्रयुक्त पात्र को आचमन पात्र अथवा पंच पात्र कहते हैं। पूजन कार्य के पूर्व स्वयं को, जल हाथ में लेकर शुद्ध करने की प्रक्रिया को आचमन कहते हैं। आचमन का तात्पर्य है कि हम तन, मन, धन और भावना रूपी इन शक्तियों से समाज की सेवा कर सके अपनी समस्त बुराइयों को धोकर स्वच्छ निर्मल और पवित्र समाज का निर्माण कर सकें।

विभिन्न धातुओं के पात्र अलग-अलग ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं आचमनी एवं आचमन पात्र तांबे की सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। लाल रंग मंगल ग्रह का प्रतीक होने से सर्वमंगलता प्रदान करती है। पीतल के पात्र, पीले रंग के स्वामी गुरु का प्रतीक है। यह ज्ञान और समृद्धि दायक है। स्टील के पात्र राहु व शनि ग्रह के परिचायक है। यह विशिष्ट पूजन में उपयुक्त है।

महत्ता

जल भगवान के निराकार स्वरूप का प्रतीक है, साथ ही निर्मलता, शीतलता और जीवन रक्षा का भी परिचायक है। पंचपात्र ताम्बा या अष्टधातु का बना हुआ होता है जो समुद्र अर्थात वरुण देव का प्रतीक है और इसमें रखी गई आचमनी का शीर्ष भाग नाग की आकृति का होता है जो समुद्र मंथन के समय वासुकी नाग है। निचला भाग सुमेरु पर्वत का प्रतीक है। अतःइसका प्रमुख भाव यह है कि जिस प्रकार समुद्र मंथन से रत्न प्राप्त हुए थे उसी प्रकार से मैं भी इस पात्र से अपने ह्रदय को मथ कर, निकाले गए सद्भाव रूपी रत्न, आपको समर्पित करता हूं। पीतल या तांबे के आचमन पात्र में रखा हुआ जल लंबे समय तक दूषित नहीं होता। इसका सेवन करने से हमारे शरीर को सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है यही नहीं इसके संपर्क में आने से हमारे शरीर के अंदर के जलीय तत्त्व भी सकारात्मक प्रभाव देने लगते हैं। अतः प्रतिदिन कम से कम सुबह शाम तीन आचमानी जल अवश्य पीना चाहिए। इससे उष्णता नियंत्रित होती है और शरीर को शीतलता प्राप्त होती है।

2. गरुड़ घंटी

वेदों में गरुड़ जी पक्षियों के राजा कहे गए हैं। इसलिए इन्हें पक्षीराज गरुड़ भी कहते हैं। गरुड़ घंटी नाद, देव आगमन का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है-कि श्री शेषशायी भगवान को योग निंद्रा से जगाने के लिए इसे बजाते हैं क्योंकि गरुड़ जी भगवान विष्णु के वाहन देव है। इसलिए प्रभु का आवाहन, स्मरण, पूजन शुरू करने की पूर्व गरुड़ घंटी बजाने की प्रथा है। घंटी की आवाज से समस्त देवताओं का आवाहन होता है। यह देवताओं के आगमन और उपस्थिति का प्रतीक है। घंटे की ध्वनि की तीव्रता इतनी होना चाहिए कि सौ मीटर की दूरी तक उसका कंपन सुनाई दे, तभी वातावरण में शुद्धता और सुरम्यता प्रसारित होती है।

महत्ता

भगवत पूजा में घंटी की अपनी महत्ता है। गरुड़ विष्णु भगवान का वाहन है। जो आकाश में बहुत ऊंचाई पर उड़ता है यह हमें समझाता है कि मन की व्यापकता हेतु, संसार की छोटी-छोटी तुच्छ बातों को त्याग कर प्रभु के आश्रय में उड़ने की हिम्मत रखना चाहिए। गरुड़ घंटी के निचले भाग में लगी घंटी की ध्वनि हमारी अंतरात्मा का प्रतीक है। जो प्रभु के पूजन के समय किए गए मंत्रोच्चारण कामना के स्वर के भेद से अपने आराध्य तक पहुंचने का संकेत मात्र है। अंतः करण से की गई भक्ति हमारे मन को आकाश जैसा ही विशाल बनाएगी। घंटी ध्वनि में पूजा स्थल के आसपास की नकारात्मक उर्जा नष्ट करने की शक्ति होती है। रोग फैलाने वाले सूक्ष्म जीवाणु उस स्थल से दूर चले जाते हैं।

3. अभिषेक पात्र

अभिषेक पात्र वह है, जिसमें जल, गंगाजल, पूज्यनीय नदियों या तीर्थों का जल भरकर, आराध्य देव के ऊपर निरंतर जल धारा प्रवाहित की जाती है। ये कलश की आकृति के होते हैं किंतु तली में नुकीले होते हैं, सबसे नीचे बारीक छेद होता है, जिससे पतली धार में जल-स्नान को ही अभिषेक कहते हैं। यह मंत्रोच्चारण के साथ किया जाता है। यह पात्र भी तांबे या पीतल का होना श्रेष्ठ है।

महत्ता

अभिषेक पात्र से अभिषेक का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार जल अंतिम बिंदु तक भगवान को शीतलता प्रदान करता है। उसी प्रकार से मैं भी अपने जीवन के अंतिम रक्त बिंदु या अंतिम सांस तक संसार को शीतल करने के लिए कार्य करूंगा और विश्व शांति हेतु कार्य करूंगा। जब किसी को क्रोध आता है तो यह कहा जाता है कि एक लोटा ठंडा पानी डालो अर्थात इसी देवताओं की क्रोध अग्नि शांत करके जीवन में सुख शांति प्राप्त हो। यही इसका आधार है। वैज्ञानिक दृष्टि से किसी भी पात्र में पानी होने के कारण हवा ऊपर रहती है, तथा पानी का दबाव नीचे की ओर जाता है, जिससे सतत धारा बहती रहती है। पूजन उपरांत अभिषेक के जल को नदी तालाब या पेड़ पौधों में विसर्जित करने का कारण यह है कि अन्य जल भी, इस तांबे पात्र के जल के संपर्क से शुद्ध हो जाए और पेड़-पौधों को भी इस धातु के खनिज तत्व प्राप्त हो सके। वैज्ञानिक आधार को समझे बिना हम दूषित जल भी नदी, तालाब, कुएं में डाल देते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है। अभिषेक के लिए कलश के स्थान पर गौकरणी का भी प्रयोग किया जाता है जो गाय के कान के आकार की होती है। इसी प्रकार हाथी की सूंड की आकृति का भी पात्र होता है, जो कि अभिषेक के कार्य में उपयुक्त माना गया है।

4. कुशा

पुराणों में ऐसी मान्यता है, कि भगवान शंकर ने भागीरथी गंगा जी को, स्थान देने के लिए अपनी जटाओं को खोलकर, पृथ्वी पर पटक दिया था जिससे गंगा जी उसमें समाहित हो गई थी किंतु कुछ जटाएँ जो जमीन पर थी वहां वनस्पतियां निकल आई थी वह गंगा जी के प्रभाव से शुचितादायनी कुशा बन गई थी। कुषा पूजन कार्य के लिए

अनिवार्य रूप से प्रयुक्त की जाती है। अत्रि ऋषि के मतानुसार दो कुशा की पवित्री बनाकर दाहिने और तीन भुजाओं की बाएं हाथ की अनामिका अंगुली में पहनकर संध्या कार्य और देव पूजन आदि किया जाना चाहिए। पूजन कार्य में शरीर शुद्धि और आत्म शुद्धि के लिए कुशा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अपवित्र जगह में पड़ी हुई अथवा तर्पण कार्य में प्रयुक्त की गई कुशा अपवित्र हो जाती है इसे प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

महत्ता

कुशा के बिना संध्या स्नान आदि और बिना संकल्प किया हुआ दान और अगणित जप भी निष्फल हो जाता है। कुशा को गंगा जी की ही तरह पवित्र माना जाता है, इसलिए इससे जल सिंचित करने से गंगा स्नान के सदृश्य शरीर शुद्ध हो जाता है। कुशा वनस्पतियों की उपयोगिता को दर्शाती है ताकि मनुष्य अपने जीवन में वनस्पतियों की सुरक्षा करें और उनका सम्मान करें।

5. देव घंटा

भारतीय संस्कृति में देवों के आव्हान और स्थल शुद्धि के लिए देव घंटा को पूजनीय मानते हैं अतएव घंटा बजाने के पूर्व एवं बाद में इसका पूजन अवश्य किया जाना चाहिए। देव घंटा सामान्यतः घरों में प्रयुक्त किया जाने वाला पीतल या कस्कूट (पीतल, तांबा, कांसा इन तीन धातुएँ) का मोटा, भारी, थाली नुमा गोल पात्र है जिसे लकड़ी, लोहे, पीतल की डंडी/ हथौड़ी से बजाए जाता है। मंदिरों में गरूड़ घंटी जैसे आकार वाले घंटे पूजा स्थल की छत के कड़े में रस्सी या जंजीर से लटकाये जाते हैं। इन्हें हिलाकर बजाते हैं। ये जितने मोटे भारी होंगे उनकी ध्वनि उतनी ही तीव्र और मधुर होगी। इन्हें बजाने के पूर्व शुद्ध जल से धोकर पूजन करके इनका प्रयोग करना उचित माना गया है एवं समाप्ति के पश्चात उनको नमन करके यथा स्थान रखना चाहिए भूल कर भी इनमें पैर नहीं लगना चाहिए यदि धोके से पैर लग जाता है तो क्षमा याचना करके प्रणाम करना चाहिए क्योंकि यह देव तुल्य है।

महत्ता

पुराणों में पुराणों में वर्णित है कि घंटे की कर्णप्रिय ध्वनि मानव जीवन में निसंदेह संगीत का निर्माण कर सकती है मंदिर पूजा स्थल में घंटा ध्वनि, वातावरण को आनंदमय बनाती है। इसकी गूंज कानों में दिनभर गुंजायमान होने से जहां नई स्फूर्ति का संचार होता है वहीं आसपास विचरण करने वाले हिंसक जीव-जंतु जैसे जंगली जानवर सांप, बिच्छू, नेवला आदि भाग जाते हैं। भूत प्रेत एवं उनके दुष्प्रभावों जैसी नकारात्मक शक्तियां भी घंटा नाद से प्रभावहीन हो जाती है नवीन वैज्ञानिक शोधों से भी यह स्पष्ट हो गया है कि-हृदय फेफड़े का रोग एवं अनेक बीमारियों में ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर प्रभावी परिणाम देते हैं। घंटा बजाने के उपरांत भी वातावरण में उसकी गूंज विद्यमान रहती है जो हमारे शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

6. शंख

शंख-भारतीय संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पाञ्चजन्य शंख की उत्पत्ति समुद्र मंथन के समय हुई थी। यह चौदह रत्नों में से एक है, इसलिए शंख लक्ष्मी जी को अति प्रिय है इसे इनका भाई भी कहते हैं। दांयावर्ती शंख पूजन में सुख समृद्धि वैभव के लिए प्रयुक्त किया जाता है इस शंख के नीचे चावल रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है। अथर्ववेद के चौथे कांड के दसवें सूक्त में वर्णित है कि शंख वायु ज्योतिर्मंडल और सुवर्ण से युक्त है इसकी ध्वनि शत्रु नाशक है। पूजा-पाठ, हवन आदि धार्मिक अनुष्ठानों में बांयावर्ती शंख बजाने का विधान है। विवाह विजय उत्सव राज्य अभिषेक आदि शुभ कार्यों में शंख वादन मंगलकारी माना गया है। इससे सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

महत्ता

शंख दैत्यों पिशाचों को वशीभूत करने वाला, अज्ञानता दरिद्रता को मिटाने वाला, व्याधिनाशक और आयुवर्धक है। शंख ध्वनि वादन से हृदय, फेफड़े-पुष्ट एवं शक्तिशाली बनते हैं दमा, खांसी, हृदय रोग आदि में भी यह प्रभावकारी है। धार्मिक अनुष्ठानों में शंख में जल भरकर छिड़कने से वातावरण में पवित्रता एवं निर्योग्यता आती है। क्योंकि शंख में गंधक, फास्फोरस और कैल्शियम की मात्रा बहुत अधिक होती है। यह कीटाणुनाशक शक्ति से परिपूर्ण होने के कारण इनका जल पीना भी स्वास्थ्यवर्धक है। शंख ध्वनि से वायुमंडल के रोगाणु इसके कंपन से नष्ट हो जाते हैं। प्राचीन काल में शंख की विभिन्न प्रजातियां थी जिनका प्रयोग ऋषि-मुनियों द्वारा विभिन्न कार्यों की विशिष्ट सिद्धि के लिए किया जाता था। शंख सफेद कलर के पीले एवं चितकबरी रंग के होते हैं जो कि समुद्र से प्राप्त होते हैं। यह वास्तव में शंख का कंकाल है जिन्हें की पूजन कार्य में प्रयुक्त किया जाता है।

7. चंदन उरसा / चंदन घर्षण पात्र, चंदन

चंदन उरशा भगवान को अर्पित किए जाने वाले चंदन के लिए प्रयुक्त किया जाता है यह गोल आकार का पत्थर के छोटे पटे के समान होता है। इसमें चंदन बनाने के लिए केशर और पानी डालकर चंदन की लकड़ी से घिश्ते हैं तब पवित्र सुंदर चंदन का लेप तैयार होता है जिसे मनुष्य अपने मस्तक पर लगाता है।

महत्ता

कठोर पत्थर पर घिसकर ही चंदन की लकड़ी से सुगंधित चंदन बनता है। जिसमें पानी की भूमिका अहम होती है तथा केशर से सुंदर रंग प्राप्त होता है। अर्थात कोई भी पत्थर या लकड़ी की तरह सख्त रहकर जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता प्रेम का जल और गुणों का केसर मिलाने पर ही ऐसा लेप तैयार होता है जो मानव शरीर के सर्वश्रेष्ठ अंग मस्तक पर चढ़ाया जाता है। तात्पर्य है कि मनुष्य में प्रेम सद्गुण होना आवश्यक है तभी जीव निर्जीव वस्तुओं के सहयोग से सफलता प्राप्त कर सकता है। चंदन की लकड़ी दो-तीन तरह की होती है जैसे लाल पीली सफेद और उसी आधार पर उसका चंदन भी घिसा जाता है एवं आराध्य देव को अर्पित किया जाता है।

8. गोमुखी माला

भारतीय उपासना पद्धति में जाप का महत्वपूर्ण स्थान है जो की माला के द्वारा पूर्ण किया जाता है। माला मोती या मनका का संगठित स्वरूप है। इसका तात्पर्य-प्रभु को अर्पित की जाने वाली माला से कदापि नहीं है। माला, प्रेम और सत्य के धागे में मन के भावों रूपी मोती का संगठित स्वरूप है। यह रुद्राक्ष, तुलसी, वैजयंती, मोती, मूंगा, कमलगट्टा या स्फटिक के नगों की बनती है। राशि एवंअपने आराध्य देव के अनुसार अलग-अलग माला का प्रयोग किया जाता है। माला का जप करते समय दाहिने हाथ की उंगलियों पर अंगूठे के पोर से मोतियों को सरकाएँ। नाखून का स्पर्श माला को नहीं लगना चाहिए क्योंकि ये दूषित और अपवित्र माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त बांये हाथ का भी स्पर्श भी नहीं होना चाहिए।

महत्ता

जप करने के लिए रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इसमें कीटाणु नाशक शक्ति के अतिरिक्त विद्युत चुंबकीय शक्ति होती है माला के दाने "एक सौ आठ" होते हैं जिसका प्रमुख कारण यह है कि "बारह" राशियां और नौ ग्रह की शांति हेतु उनके गुणनफल अर्थात एक सौ आठ होते हैं। इसलिए माला के मोती 108 होते हैं। इसके अतिरिक्त 27 नक्षत्र एवं प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस तरह 27 से 4 का गुणनफल 108 होता है जो की माला के लिए शुभ माना जाता है। माला में गूथे हुए दानों को ही मनका कहते हैं। इनका प्रयोग सामान्यतःमंत्र जाप की गिनती के लिए किया जाता है ताकि गणना में कोई गलती ना हो। मंत्र जाप करते समय जमीन में शुद्ध आसन बिछाकर पद्मासन, सुखासन या पालथी मारकर बैठे। चेहरा सीधा रखें माला करते समय साधक का ध्यान अपने आराध्य देव की ओर होना चाहिए और जिस मंत्र का जाप किया जाए वह एक मंत्र पूरा होने के बाद ही माला को आगे सरकाया जाता है। इस प्रकार माला मंत्र जाप का एक प्रतीक है। गौमुखी कपड़े या ऊन की बनती है जो गाय के मुख और अंग्रेजी के एल अक्षर के समान होती है। साधक माला जपते समय गोमुखी के अंदर हाथ रखकर अपनी उंगली को चलाते हैं ताकि बाहरी दृष्टि ना पड़े। गौमुखी में मंत्र जाप करने से गौशाला के बराबर-सौ गुना मंत्र जाप का पुण्य प्राप्त होता है। यह लाल पीले सफेद रंग की होती है। गाय के कंठ में सरस्वती जी का स्थान है। इसलिए वेदों में ऐसा कहा जाता है कि माला का जाप हमेशा गौमुखी के अंदर करना चाहिए और इस प्रकार से यह जाप प्रमाणिक और लाभप्रद है।

9. आरती पात्र

वैदिक संस्कृति में पूजन कार्य में आरती का सर्वाधिक महत्व माना गया है इसके बिना जहां पूजा अधूरी होती है वही आराध्य देव की रुष्टता का भी भय रहता है वास्तव में यह क्षमा याचना स्वरूप की जाती है।

आरती के लिए अलग-अलग पात्रों का प्रयोग समयानुसार किया जाता है जैसे एक आरती पात्र या एकदीप, पंचप्रदीप, नवप्रदीप, महाआरती पात्र समाई। एक आरती वाले पात्र या एक दीप का प्रयोग प्रति दिन सुबह, शाम की आरती के लिए किया जाता है। पंचप्रदीप तथा पांच बत्तियों वाली आरती पात्र का प्रयोग विशेष पूजा जैसे पंचानन-शिव

जी और हनुमान जी के लिए बहुत उपयुक्त माना गया है इस आरती पात्र में शेषनाग फन फैलाए हुए ऊपर रहते हैं। नौ आरती वाला पात्र नव आरती या नवदीप पात्र कहलाता है यह पात्र देवी दुर्गा के लिए उपयुक्त होता है क्योंकि यह नौ देवियों की आरती एक साथ करता है। एक सौ आठ फूल बत्ती वाला आरती पात्र महाआरती पात्र कहलाता है। यह आराध्य देवों की विशिष्ट तिथियों के दिन प्रयुक्त किया जाता है जैसे नवरात्रि में दुर्गाअष्टमी पूजन में हनुमान जयंती, श्री राम जयंती, कृष्ण जन्माष्टमी एवं गंगा, नर्मदा जयंती आदि। ये पात्र भी पीतल के ही उपयुक्त माने गए हैं क्योंकि पीतल में पीले रंग का अर्थात गुरु का वास माना गया है। यह पीला रंग उन्हीं का प्रतीक है। इसलिए गुरु अर्थात ज्ञान का प्रतीक है इसलिए ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए आरती पात्र का पीतल का होना सर्वोत्तम माना गया है।

महत्ता

आरती पात्र में रखी गई बत्तियां ज्योतिपुंज है। इसलिए उन्हें उचित स्थान देना आवश्यक है। पुराणों के अनुसार आरती पात्र में आरती करना नीति संगत है। शुद्ध घी की बत्तियों के प्रज्ज्वलन से वायुमंडल का प्रदूषण दूर होता है। पंचप्रदीप आरती प्रकृति के एकत्व भाव को प्रदर्शित करती है। इसके साथ ही यह पंच तत्व अर्थात अग्नि, जल, वायु, भूमि और आकाश इन की महत्ता को प्रदर्शित करती है। नवप्रदीप पात्र नव ग्रहों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और राहु, केतु के प्रतीक हैं। कर्पूर पात्र से कपूर की आरती करते हैं जो वायुमंडल की नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित करने में सर्वोत्तम है। भारतीय संस्कृति और वेदों में किसी भी व्यक्ति अथवा शक्ति को पूर्ण सम्मान देने के लिए उसका आसन अवश्य दिया जाता है। यही कारण है कि आरती पात्र भी ज्योतिपुंज के लिए आसन स्वरूप है।

10. धूपबत्ती पात्र

पूजन में धूपबत्ती अगरबत्ती लगाने के लिए भी विशिष्ट पात्रों का उपयोग किया जाता है। जिसमें छिद्र होते हैं और इन्हीं में अगरबत्ती लगाई जाती है ये किसी भी धातु या मिट्टी के हो सकते हैं। पूजन कार्य में अगरबत्ती का भी एक महत्वपूर्ण स्थान होता है।

महत्ता

अगरबत्ती पात्र का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का आसन ही उसकी शोभा है। जो उसके गुणों के अनुसार ही प्राप्त होता है। साथ ही इससे यह भी संदेश मिलता है किसी के भी हृदय में जगह बनाने के लिए उसके अनुरूप बनना पड़ता है चाहे वह कितना भी उच्च या निम्न हो जैसे अगरबत्ती पात्र चाहे सोने का हो या मिट्टी का उसमें छिद्र होना आवश्यक है। अर्थात बिना गुणों के कोई भी व्यक्ति का अपना कोई महत्व नहीं है। अगरबत्ती पात्र का उपयोग पूजन कार्य में अवश्य किया जाता है। जमीन पर रखी गई अगरबत्तियां अपवित्र हो जाती हैं।

11. हवन पात्र / हवन कुंड

हवन कुंड का तात्पर्य ऐसे पात्र या स्थान से है जिसमें प्रज्वलित अग्नि को स्थान देते हैं अर्थात हवन कुंड अग्नि का निवास स्थल है हवन के उद्देश्य के आधार पर उसका आकार एवं स्वरूप निश्चित किया जाता है सामान्यतः हवन कुंड वर्गाकार चौकोर

बनाए जाते हैं इनकी चारों भुजाएं चार दिशाओं, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम का प्रतिनिधित्व करती है। सामान्यतःगहरा एवं अंदर की ओर पिरामिड के आकार का हवन कुंड श्रेष्ठ माना जाता है इससे अग्नि देव के दर्शन भी होते हैं और चारों चारों और बैठने वाले व्यक्तियों को भी हवन में सुविधा होती है। प्रतिदिन घर में हवन करने के लिए मुट्ठी के बराबर हवन कुंड भी उपयुक्त है इसकी पेंदी 1 इंच से लेकर 6 इंच तक की हो सकती है। आहुतियों की संख्या के आधार पर इसका आकार बड़ा, छोटा निश्चित किया जाता है। गोल हवन कुंड महाकाली को प्रसन्न करने के लिए हाथ में लिया जाता है। यज्ञ अनुष्ठान में बनाए गए हवन कुंड के ऊपर तीन सीढ़ियांनुमा बनाई जाती है जो क्रमशः त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु, महेश और त्रिकाल-भूत, वर्तमान, भविष्य एवं त्रिगुण-सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण के परिचायक हैं। हवन कुंड खुले स्थान आंगन में बनाया जाता है ताकि प्रज्वलित अग्नि की आहुति को उचित ढंग से प्रसारित किया जा सके इसके धुंआ में वायुमंडल को शुद्ध व्याधिनाशक बनाने की क्षमता होती है अर्थात नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित कर के सकारात्मक ऊर्जा फैलाने में सहायक है। साथ ही वातावरण की आद्रता को शोषित करके ऊष्मता प्रदान करता है।

12. नैवेद्य पात्र

नैवद्य शब्द संस्कृत भाषा का है जिसका अर्थ भोजन, पकवान है। भगवान को अर्पित किए जाने वाले भोजन के अनुरूप ही नैवद्य पात्र होना चाहिए। ये अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। पकवान के अनुरूप ही पात्र का उपयोग करते हैं ये सोना चांदी, पीतल, और तांबे के उत्तम माने गए हैं जो ऐश्वर्य धन संपदा के परिचायक होते हैं। बिना पात्र के नैवेद्य अर्पित करना अनुचित है उससे भोजन अशुद्ध और अपवित्र हो जाता है। प्राचीन काल में पत्तों के पात्र सर्वाधिक शुद्ध माने जाते थे क्योंकि यह प्रकृति की प्रधानता के प्रतीक हैं।

महत्ता

ये इस बात का संदेश देते हैं कि अपने जीवन में प्रत्येक व्यक्ति एवं वस्तुओं को उसके अनुरूप ही सम्मान देना चाहिए। छोटे-बड़े में असमानता नहीं होना चाहिए। पत्तों में नैवेद्य रखने से उसमें नकारात्मक ऊर्जा नहीं आती वरन प्रयुक्त किए गए पत्तों के सकारात्मक गुण उसमें शामिल हो जाते हैं। जबकि कुछ धातुओं के पात्र में भोजन दूषित भी हो जाता है। कांच के पात्र संबंधों की दुर्बलता और अनिश्चितता के परिचायक है क्योंकि यह टूट सकते हैं। अतः ऐसी कोई वस्तु नहीं होना चाहिए जो टूट जाए। पात्र हमेशा शुद्ध धातु के या पत्तों के पात्र होना चाहिए।

-----00-----

अध्याय-5: पूजन में अर्पण की जाने वाली सामग्री

1. शुद्ध जल, गंगाजल

शुद्ध जल

शुद्ध जल से भगवान आराध्य देव को स्नान कराना जलाभिषेक कहलाता है। यह जल, साधक को स्वयं स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर शुद्ध स्थान-कुएं, तालाब या नदी से भरना चाहिए। जलपात्र भी स्वच्छ हो, टूटा-फूटा ना हो। सामान्य जल चढ़ाना स्नान कहलाता है। इसमें पवित्र नदियों का जल एवं सुगंधित द्रव्य-गुलाबजल, इत्र डालकर मंत्रोच्चारण सहित अपने आराध्य को जल अर्पित करना ही जलाभिषेक है। यह अभिषेक पात्र, तुरही गौमुखी पात्र में भरकर अर्पित करना श्रेयस्कर है। विभिन्न नदियों के जल गुणकारी व्याधिनाशक होने से ही लंबे समय तक रख सकते हैं।

महत्ता

वेदों के अनुसार जल शुद्धता, पवित्रता और शीतलता का प्रतीक है। विधानपूर्वक चढ़ाए गए जल से आराध्यदेव की कृपादृष्टि एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। शीतल, पवित्र, सुगंधित जल से उनका क्रोध, आवेश शांत हो जाता है। वहीं दूसरी ओर स्वच्छ, पवित्र जल प्राप्त करने हेतु साधक का परिवार, संबंधी भी आसपास का वातावरण शुद्ध करके स्वयं भी स्नान करते हैं, जिससे आरोग्यता एवं जीवाणु रहित वातावरण निर्मित होता है फलतः परिवार, समाज स्वस्थ आनंदित रहते हैं।

गंगाजल, तीर्थ जल

भारत की विभिन्न नदियों व तीर्थों के जल में अनेक ऐसे खनिज तत्व है जो अनेक व्याधियों का नाश करते हैं। भूमि को श्रेष्ठ उर्वरता प्रदान करते हैं। हिंदू संस्कृति में इनमें मलमूत्र, त्याग पर निषेध है। अंतिम संस्कार के पश्चात अस्थि फूल राख के विसर्जन से उसमें विद्यमान तत्व जल को शुद्ध पवित्र करते हैं, जिससे यह संग्रहित करने पर भी इसमें जीवाणु नहीं होते, जबकि जल इनसे दूषित हो जाता है। वैज्ञानिक अनुसंधानो से गूढ़ रहस्य का पता लगाया जा रहा है।

2. पंचामृत

शास्त्रों में वर्णित "पंचामृत" का अर्थ-दूध, दही, घी, शहद, शर्करा से है। आराध्य देव का पूजन पंचामृत स्नान के बिना अधूरा है। पंचामृत आत्मा उन्नति में सहायक है। कामधेनु गाय उपनिषद का प्रतीक एवं चौदह रत्नों में से एक है। अतः गाय का दूध, दही, घी ही सर्वोत्तम है।

महत्ता

पंचामृत का दूध शुभ्रता का प्रतीक है। यह विशुद्ध, बुद्धिदायक एवं पुष्टि दायक है। अतः इसको अर्पण करने हमारे साधक के जीवन में भी शुभ्रता, चरित्र उज्जवलता, कीर्तिधवलता और कर्मविशुद्धता आये ताकि साधक इन गुणों से परिपूर्ण होकर पूजन करें। पय स्नान के पश्चात दधि स्नान, चंद्रमासी धवलता, शीतलता और स्नेह का प्रतीक है। एक चम्मच दही में, आधे मन दूध को भी अपने जैसा बनाने का सामर्थ्य है। परदेश गमन या अन्य शुभकार्यों के लिए प्रस्थान करते समय दही सेवन किया

जाता है ताकि व्यक्ति के भीतर भी परावर्तक शक्ति उत्पन्न हो। दधि स्नान के पीछे साधक को अपने जैसा सदशील, सदवृत्ति, परावर्तक शक्ति संपन्न बनाने का भाव है। दधिस्नान के उपरांत घृतस्नान स्निगधता का प्रतीक है। साधक को अपना जीवन घृत, सदृश्य, स्निगध और स्नेहयुक्त बनाना है। अपने जीवन को घी की तरह मथकर, सारगर्भित मक्खन निकालकर, तपाकर घी जैसा शुद्ध बनाना है। घृत स्नान के पश्चात मधुस्नान पुष्टता, कर्मठता का प्रतीक है। मधुमक्खी के परिश्रम से बना मधु इस बात का द्योतक है कि साधक का जीवन भी मधुरता, सरसता, पौष्टिकता से भरे और वह शक्तिवर्धक सामर्थ्यवान बने।

अंततः शर्करा स्नान पूर्णता औचित्य का प्रतीक है। जिस प्रकार शर्करा अपना अस्तित्व खोकर दूध को मीठा बनाती है, उसी प्रकार साधक मनुष्य भी समाज, राष्ट्र एवं विश्व को मिठासमय बनाये। इस प्रकार पंचामृत स्नान, शुभ्रता, परावर्तनता, स्निग्धता, सरसता, स्वच्छता और मधुरता का प्रतीक है।

3. वस्त्रार्पण, अलंकरण

वस्त्रार्पण- शारीरिक सुरक्षा एवं सौंदर्य के लिए वस्त्रार्पण किया जाता है। वस्त्र व्यक्ति की भावनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। हिंदू संस्कृति में वस्त्रों की अत्यधिक महत्ता है। अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग वस्त्र तथा प्रत्येक देवता के लिए अलग रंग के वस्त्र अर्पित करते हैं। नर-नारियों बच्चों के लिए भी वस्त्र विभेद है। मनुष्य की तीन प्रवृत्ति हैं: सात्विक में-खेत, पीले भगवा वस्त्र, राजसी प्रवृत्ति में रेशमी चमकीले और तामसी प्रवृत्ति में काले अप्रिय वस्तुओं का प्रयोग होता है।

अलंकरण- आभूषणों द्वारा आराध्य देव का श्रंगार करना अलंकरण कहलाता है यह मात्र तन की शोभा नहीं है वरन उनका वैज्ञानिक आधार भी है कमर के ऊपर के अंगों में स्वर्ण हीरे जवाहरातों के आभूषण अलंकृत करते हैं। ये अंगों को सौंदर्य के साथ नियंत्रित करके शरीर को स्वस्थ रखते हैं। कमर के नीचे रजत आभूषण अर्पित करना नकारात्मक ऊर्जा को पैरों के तलवे के माध्यम से दूर रखने के भाव को दर्शाता है।

4. हल्दी

हल्दी आरोग्यता का प्रतीक है। यह शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए बहुत उपयोगी है। हल्दी का सम्मान बृहस्पति ग्रह से माना गया है क्योंकि पीला रंग गुरु का प्रतीक है अतः सुखद दांपत्य जीवन की प्राप्ति हेतु पूजा में हल्दी चढ़ाई जाती है मुख्य द्वार पर हल्दी का स्वास्तिक बनाना घर की सीमावर्ती दीवार पर हल्दी की रेखा खींचना मुख्य द्वार की देहरी हल्दी से टिकना आदि कार्य करने से सुख समृद्धि बढ़ती है विवाह कार्य जल्दी करने के लिए भी गणेशजी एवं विष्णु भगवान को हल्दी चढ़ाते हैं।

महत्ता

हल्दी वैज्ञानिक आधार पर भी उचित मानी गई है क्योंकि इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक होती है इसलिए पूजन के समय पैर में हल्दी लगाना तिलक लगाना हल्दी चढ़ाना शुभ है। हल्दी हमें यह संदेश देती है कि किसी भी वस्तू को छोटा न समझा जाए क्योंकि यह लघु होते हुए भी मनुष्य के लिए गुणकारी है।

5. कुमकुम / रोली

महत्ता

कुमकुम लाल सिंदूर या रोली पूजन के समय देवी देवताओं के कोप से बचने के लिए दोनों भृकुटि के मध्य आज्ञा चक्र के स्थान पर लगाया जाता है। यह सौभाग्य एवं सौंदर्य का प्रतीक है। यह स्त्रीत्व का प्रतीक है इसे चढ़ाने का भाव यह है कि जैसे विवाह उपरांत पत्नी पति को अपना जीवन समर्पित करके, अपना अस्तित्व उसमें ही समाहित करती है ठीक वैसा ही समर्पण भक्त या साधक का आराध्य के प्रति हो जाता है।

6. चंदन

पापों का नाश करने, पुण्य प्राप्ति व पवित्रता हेतु चंदन का महत्तव है। यह विपत्तियों का नाश करता है। नित्य इसका प्रयोग करने से लक्ष्मी सदैव स्थिर रहती हैं।

महत्ता- दोनों भृकुटि के मध्य स्थित नाड़ी पर चंदन का तिलक लगाते हैं क्योंकि इस स्थान पर हल्का सा दबाव देकर क्रोध पर नियंत्रण किया जाता है। देवी-देवताओं के प्रकोप से बचने के लिए उनके माथे पर चंदन का तिलक लगाते हैं। चंदन शीतलता प्रदान करता है इसीलिए क्रोध शांत करने के लिए चंदन चढ़ाया जाता है एवं पुरोहित तथा स्वयं को भी चंदन का टीका लगाते हैं ताकि किसी को भी क्रोध आवेश न आये, अन्यथा मनोकामना प्राप्ति एवं सिद्धि पूर्ति में आशंका रहती है। अतः चंदन शीतलता, सौंदर्य एवं सौभाग्य का प्रतीक है। चंदन सुगंध फैलाने वाली देवकाष्ट है जो हवा पानी के स्पर्श मात्र से दशों दिशाओं को सुरभित कर देता है। चंदन वृक्ष में विषधर नाग लिपटे रहने के बाद भी विष का प्रभाव उसकी प्रकृति को नहीं बदल पाता। अतः चंदन सद्गुण ग्राही देवत्व का प्रतीक है। चंदन शरीर के विभिन्न अंगों में लगाने का तात्पर्य यह है कि हमारे जीवन का अंग-अंग चंदन की तरह महके।

7. तिलक

हिंदु धर्म में तिलक धारण करना आवश्यक धार्मिक कार्य मानते हैं। तिलक या बिंदी तीसरी आंख का प्रतीक है जिसमें कामदहन करने की शक्ति है, वहीं स्त्री पुरुषों के मध्य भ्रातत्व एवं भगिनित्व का भाव जागृत करता है। एवं कामदृष्टि व दुर्भाव का नाश करता है। तिलक आस्तिकता का चिन्ह है। तिलक विहीन ललाट रखने में व्यक्ति के जीवन से वैभव, सत्ता, कीर्ति आदि गुणालंकार भी निस्तेज हो जाते हैं। तिलक इष्टदेव के अनुसार अलग-अलग तरीके से लगाए जाते हैं अर्थात विभिन्न संप्रदाय के तिलक चिन्ह पृथक-पृथक हैं जो निम्नलिखित हैं----

1. श्री गणेश तिलक
2. श्री लक्ष्मी तिलक
3. श्री रामानुजीय तिलक
4. श्री रामानंदीय तिलक
5. श्री सूर्य तिलक
6. श्री शैव तिलक
7. श्री शाक्त तिलक
8. श्री माधव वैष्णव तिलक

9. श्री निंबार्क तिलक
10. श्री गौडीय तिलक
11. श्री पुष्टिमार्गीय तिलक (वैष्णव)

महत्ता

भारतीय परंपरानुसार तिलक लगाना सम्मानसूचक, शुभ कार्य यात्रा में जाते समय शुभकामनायें प्रकट करने, अनिष्ट से बचाने का सूचक है। तिलक धारण करने का वैज्ञानिक कारण यह है कि आवश्यकता से अधिक काम लेने पर भृकुटी और ललाट के मध्य पीड़ा उत्पन्न होती है, ठीक इसी स्थान पर तिलक लगाते हैं। यह मस्तिष्क को नियंत्रित रखकर शीतलता प्रदान करता है, एवं ज्ञान तंतुओं को सुचालित करता है। आयुर्वेद के अनुसार सिर के अनेक रोगों, व्याधियों को शांत करता है। तिलक भ्रू भाग में लगाना शुभकारी, प्रभावकारी होता है।

8. अबीर /गुलाल, भस्म, सिंदूर

अबीर/गुलाल

यह अभ्रक से बनाया गया सफेद गुलाबी रंग का चूर्ण है जिसका प्रयोग भारत के प्रांतों मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार एवं राजस्थान में अधिक किया जाता है। शिवजी हनुमानजी को सफेद अबीर चढ़ाने से मनोकामना पूर्ण होती है। पीपल के पेड़ के नीचे बैठे हनुमान जी को अभीर चढ़ाने से रोजगार के द्वार खुलते हैं। मान्यता है कि चांदी के पात्र में सफेद अबीर पान का बीड़ा लगाकर पूर्णिमा के दिन रखने से माँगलिक कार्य शीघ्र पूर्ण होते हैं।

भस्म-

शमशान घाट से लायी गई राख-भस्म कहलाती है जो भगवान महाकाल अर्थात शिवजी को अर्पित की जाती है, जिसे महिलाएं नहीं चढ़ाती हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि शरीर नश्वर है जो एक दिन जलकर राख हो जाना है। मृत्यु के देवता के धाम जाना है इसीलिए सत्कर्म कर लें। महाकालेश्वर अपनी शरण में ले लेंगे, मुक्ति देंगे।

<u>सिंदूर-</u>

यह हनुमान जी गणेश जी को अर्पित किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियां इसे अपनी माँग में लगाती हैं। यह प्रेम शीतलता का प्रतीक है। सीताजी ने हनुमानजी के लिए कहा था कि उनके तन पर सिंदूर चढ़ाकर/चोला चढ़वाकर उनका पूजन अर्चन जो भी करेगा उनको भगवान सीताराम की अगाध भक्ति प्राप्त होगी। सिंदूर चढ़ाने का महत्व यह है कि यह पारा द्वारा निर्मित होने के कारण शरीर की उष्मा खींचकर शीतलता प्रदान करता है। माथे में प्रज्ञास्थल पर, अथवा महिलाओं द्वारा माँग में लगाया जाता है।

9. अक्षत, चना दाल, तिल

अक्षत चावल: संस्कृत में अक्षत का अर्थ है जो टूटा नहीं है अतः वे चावल जो टूटे हुए नहीं हैं अक्षत कहलाते हैं। भगवान को पूजन कार्यों में अक्षत ही चढ़ाए जाते हैं।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभितः।
मया निवेदिता भक्तया ग्रहण परमेश्वरः।।

महत्ता

अक्षत' चढ़ाने का तात्पर्य है स्वयं की अखंड भक्ति को भगवान को समर्पित करना। 'अक्षत' आत्मा का प्रतीक है-जैसे धान को दर कर अर्थात छिलका हटाकर चावल बनता है तथा चावल को पुनः बोकर कृषि कार्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है अर्थात् धान उत्पन्न नहीं की जा सकती, ठीक इसी प्रकार आत्मा भी संसार के माया मोह रूपी चक्की के पाटों में पिसकर काया रूपी छिलके को हटाकर ईश्वर अर्थात परमात्मा में समायेगी, अर्थात स्वयं को ऐसी आत्मा बनाना, जो जन्म मृत्यु के पाटों में न दोबारा पिसे और न उत्पन्न हो, बल्कि 'अक्षत' की भांति बनकर ईश्वर में समाहित हो जाऐं।

'अक्षत' चढ़ाने का दूसरा भाव यह है कि मनुष्य द्वारा स्वयं अर्जित की गई संपत्ति का पूरा भाग स्वयं पर क्षत ना करें बल्कि उसका एक अंश भगवान और उसके द्वारा बनाए गए अन्य जीवो पर भी लगाएं।

तीसरा भाव यह है-कि 'अक्षत' स्वयं अन्नपूर्णा माँ का प्रतीक हैं। अतः जो अन्य पकाएं वह अकेले नहीं बल्कि मिलजुल कर खाएं, सामाजिक उत्तरदायित्व को ध्यान में इसलिए वैवाहिक कार्यक्रमों, धार्मिक अनुष्ठानों में कलश आदि के नीचे 'अक्षत' का ढेर लगाकर रखते हैं और अंदर भी अक्षत डालते एवं कथावार्ता में हाथ में अक्षत लेकर छिड़कते हैं।

11. पुष्प

पुष्प, प्रसन्नता और हंसी, खिलखिलाहट का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में अलग-अलग देवी-देवताओं को अलग-अलग पुष्प अर्पित करने की परंपरा है जो अलग-अलग कार्यों व भावों के प्रतीक हैं जैसे गणेशजी, लक्ष्मी जी को लाल पुष्प प्रिय हैं। लाल रंग क्रांति प्रेम का सूचक है जो उद्यमशीलता से संभव है।

महत्ता

पुष्प में जैसी सुगंध, रंग, मकरंद और माधुर्य है, ठीक वैसा ही हमारा जीवन सत्कर्मों के सौरभ से महके, भक्ति के रंग में रंगा हुआ हो, ज्ञान के मकरंद से पूर्ण हो और पंखुडी के समान कोमल होना चाहिए। भगवान द्वारा खिलाया गया पुष्प उनके चरणों में अर्पित करने का प्रतीक भाव यह है कि हमें वाणी पुष्प, कर्म पुष्प और जीवन पुष्प से ईशपूजन करना चाहिए। पुष्पों में कमल पुष्प अति श्रेष्ठतम है क्योंकि इसमें अना शक्ति का आदर्श, माँगल्य की महिमा, प्रकाश का पूजन, सौंदर्य का सर्जन और जीवन का दर्शन है।

11. बिल्वपत्र

बिल्वपत्र शंकर जी को अति प्रिय हैं इसलिए शिव परिवार को भी चढ़ाने से प्रभु की कृपा प्राप्त होती है। बिल्ववृक्ष लक्ष्मी जी द्वारा भूमि पर लाया गया है। यह एकमात्र ऐसा वृक्ष है जिस में फूल नहीं होते, बिना फूल के ही इसमें फल लगते हैं। इस फल के गूदे से लक्ष्मीजी को आहुति देने से प्रसन्नता समृद्धि प्राप्त होती है।

महत्ता

बिल्वपत्र इस बात के प्रतीक हैं कि प्रेम पूर्वक प्रसन्न मन हृदय से भगवत चरणों में अर्पित कम मूल्य की छोटी से छोटी वस्तुएं भी अमूल्य बन जाती हैं। वैज्ञानिक

दृष्टि से यह औषधीय वृक्ष है, अनेक व्याधियों मधुमेह हृदय रोग में इसकी पत्तियों फल का सेवन अत्यधिक लाभकारी है।

त्रिदलं त्रिगुणा कारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवर्पणम। ।

12. शमीपत्र

शमीपत्र पवित्र कल्याणकारी वनस्पति है भगवान शिवजी, गणेश जी को शमीपत्र विशेषत: अर्पित किया जाता है। एक शमी पत्र चढ़ाने से 100 बिल्वपत्र चढ़ाने का फल प्राप्त होता है। शमी पत्र के संबंध में यह प्रचलित है कि राजा रघु ने गुरुदक्षिणा के 14 करोड़ माँगने पर राजकोष की समस्त स्वर्ण मुद्राएं ऋषि कौत्स को दे दी। फिर बाद में कुबेर देव को प्रसन्न करने के लिए उनसे याचना की तो उन्होंने प्रसन्न होकर शमीपत्र के वृक्ष पर सोने की वर्षा की इसलिए यह समृद्धि लक्ष्मी का प्रतीक है। शेष मुद्राएं गरीबों में लुटा दी।

महत्ता

इस उदार भाव के रूप में दशहरे को शमीपत्र का आदान-प्रदान होता है। जिसका आशय यह है की वैभव को भी मिल बांट कर खाओ, अकेले उपभोग नहीं करो। पांडवों ने अज्ञातवास के समय अपने अस्त्र-शस्त्र भी शमी वृक्ष में छुपाए थे इसलिए शमीपत्र को शक्ति रक्षक के रूप में मानते हैं तथा पूजन में साधक धन समृद्धि शक्ति सुरक्षा हेतु शमीपत्र चढ़ाते हैं।

13. तुलसीपत्र

तुलसी पत्र नारायण प्रिय है बिना इसके भगवान जल, अन्न कुछ भी स्वीकार नहीं करते। वनस्पति प्रतीक रूप में पूजनीय हैं।

तुलसी श्री सखी, पाप हरिणी पुण्य दे।
नमस्ते नारदनुते नमो: नारायण प्रिये। ।

महत्ता

तुलसी पत्र नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। पुराणों में वर्णित है कि मानव देह के स्वामी स्वयं भगवान है।

मानव देह ऐसे खेत सदृश्य हैं जिसमें क्या बोला है यह स्वामी ही निर्धारित करता है, इसमें जो भी कार्य होता है प्रभु को प्रीतयार्थ किया जाता है अर्थात तुलसी पत्र प्रभु को चढ़ाने एवं अपने मुंह में रखने का भाव समर्पण है।

इसके अतिरिक्त तुलसी का पौधा 24 घंटे ऑक्सीजन छोड़ता है जिससे वातावरण वस्तुओं एवं मानव से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसों को अवशोषित करता है। तुलसी पत्र चिकित्सा जगत की रामबाण औषधि है। भवसागर, मोक्षप्राप्ति के लिए तुलसीपत्र श्रेष्ठ है। तुलसीपत्र में पारा होता है इसीलिए दांतो से चबाना वर्जित है। साबुत निगलने से शरीर के तापमान को नियंत्रित करती है।

14. अपराजिता, दूर्वा

दूर्वा

"दूर्वा" अटूट प्रेम, न मुरझाने वाले निर्माल्य प्रेम का प्रतीक है जैसे दूबा सूखी होने पर पानी में डालने से फिर हरी हो जाती है वैसे ही मनुष्य जीवन भी ईश्वर प्रेम, भक्ति,

पूजन के निर्मल जल से फिर हरा-भरा, सुखी, प्रसन्न हो जाता है। गणपति जी को दूर्वा अति प्रिय है।

महत्ता

दूर्वा गंधहीन, आकर्षणहीन, तृण या घास है जिसका आशय यह है कि जो रूप दुनिया की दृष्टि से मूल्यहीन है, ऐसे कर्म भी यदि प्रभु को प्रेमपूर्वक अर्पित करेंगे तो प्रभु को स्वीकार्य हैं। दूर्वा का एक भाग यह भी है कि यह स्वयं ही ऊंचाइयों को प्राप्त नहीं करती बल्कि अपने आत्मविश्वास से, अपने सहारे से पूरे क्षेत्र को हरा-भरा कर देती है अर्थात जिनको हम निम्न समझकर पैरों तले रौंद भी देते हैं ऐसे व्यक्ति अपने कर्मों से आसपास के क्षेत्र को भरा पूरा रखने की क्षमता रखते हैं। इसलिए सभी का सम्मान करना चाहिए।

अपराजिता

अपराजिता के पुष्प अर्पित करना एवं कलश में इसकी बेल लगाना शुभकारी है। इसके पुष्प सभी भगवान को अर्पित किए जा सकते हैं। इनको चढ़ाने का भाव यह है कि जैसे-जैसे इसकी बेल वृद्धि होती है वैसे-वैसे घर में भी धन-धान्य, वैभव, यश, ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

15. धूपबत्ती

धूपबत्ती

धूपबत्ती और अगरबत्ती आरती के पूर्व जलाई जाती हैं। ये खुशबू दायक ज्वलनशील पदार्थों द्वारा निर्मित की जाती है। इसके प्रयोग से भी वातावरण शुद्ध, सुगंधित हो जाता है। हवन सामग्री की तरह ही यह नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करके सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

महत्ता

अगरबत्ती जलाने का प्रमुख उद्देश्य है कि हमारा वातावरण शुद्ध एवं सुगंधित रहे और यह संदेश देता है कि-हमें भी अपने जीवन में ऐसे कार्य करना चाहिए। जिससे सभी लोगों का जीवन सुखमय हो सके और हम खुशियों की खुशबू बिखेर सकें।

कपूर

कपूर सफेद रंग का, तीव्र ज्वलनशील पदार्थ है। इसमें भीनी मोहक खुशबू होती है। कपूर की आरती बहुत शुभ मानी जाती है। आरती के समान ही कपूर की आरती भी की जाती है। यह बिना तेल घी के स्वयं ही जलने वाला पदार्थ है जिसका वायुमंडल की विषैली गैसों एवं जीवाणुओं के नाश में महत्वपूर्ण स्थान है। कपूर के द्वारा हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगाना चाहिए। जिस प्रकार कपूर बिना किसी सहयोग के स्वयं ही जलकर प्रकाश फैलाता है वैसे ही मनुष्य को स्वाभिमानी बनकर अपने जीवन को प्रकाशित करना चाहिए।

16. नैवेद्य प्रसाद

'नैवेद्य' का अर्थ है 'पकवान'। 'नैवेद्य' अर्पण भगवान को रुचिकर, छप्पन भोग अर्पित करना है। वे प्रसन्न होते हैं। भगवान गणेश को मोदक, देवी को हलवा पुड़ी और हनुमान जी को गुड़ चने का भोग लगाना श्रेयस्कर है।

महत्ता

भगवान को नैवेद्य अर्पित करने का भाव यह है कि उनके पास अन्नकूट रखना अर्थात भगवान की शक्ति से ही सब कुछ मिलता है इसीलिए उनको अर्पित करके उसमें से प्रसाद स्वरूप ही ग्रहण करें। शेष भोग सबको वितरित करना चाहिए यह ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का परिचायक है। इसमें सर्वहिताय की भावना निहित है एवं कोई भी भूखा ना रहे इसलिए प्रसाद वितरण, नैवेद्य अर्पण के पश्चात, पूजा समाप्ति पर अवश्य किया जाता है। समाज का हर वर्ग पकवानों का स्वाद ले सके इस भावना से यदि व्यक्ति प्रसाद बांटता है तो सुख समृद्धि धन की प्राप्ति अवश्य होती है।

17. ऋतुफल, नारियल

नारियल-

'सज्जन' व्यक्ति नारियल फल के समान होता है जो बाहर से सख्त और अंदर से कोमल होते हैं। जबकि दुर्जन व्यक्ति बेर की तरह बाहर से कोमल और अंदर से कड़े होते हैं।

महत्ता

नारियल को भारतीय संस्कृति में शुभ, समृद्धि, सम्मान, उन्नति व सौभाग्य का प्रतीक मानतें हैं। प्रत्येक शुभ कार्यों में अग्रणी भगवान शिव का परमप्रिय फल है। नारियल में चिन्हित तीन बिंदियां 'त्रिनेत्र' का प्रतीक हैं अथवा ब्रहमा, विष्णु एवं महेश 'त्रिदेव' का भी प्रतीक हैं। इसी मान्यता के साथ कई लोग पूर्ण नारियल और कुछ लोग तोड़कर अपने आराध्य देव को चढ़ाते हैं। नारियल शीतलता प्रदान करने वाला, संपूर्ण विटामिन्स खनिज तत्वों से भरपूर फल है जो स्वास्थ्यवर्धक है और कुपोषण को रोकता है। प्रभु भक्ति के माध्यम से हर व्यक्ति इनका सेवन कर सके, ऐसी धारणा के साथ हमारी संस्कृति ने इसको अनिवार्य पूजन सामग्री में रखा है। नारियल के जटाओं का व्यवसायिक महत्व भी है। प्रकृति में इनका उत्पादन, संतुलन बना रहे-यही वैज्ञानिक आधार भी है।

ऋतुफल

भगवान के पूजन में कोई भी ऋतुफल अर्थात मौसम के अनुसार मिलने वाला कोई भी फल चढ़ाना चाहिए। जिस कामना से व्रत पूजा की गई है उसका प्रतिफल प्राप्त करने के लिए ही फल चढ़ाने का विधान है।

महत्ता

फल का अर्थ है 'कर्मफल', जिसकी शक्ति से कर्म होते हैं वही कर्मफल का सच्चा अधिकारी है। 'मनोकामना' की पूर्ति हेतु उसके फल के लिए ही भगवान को फल अर्पित करते हैं। फल समृद्धि का एवं संततिवृद्धि का प्रतीक भी हैं क्योंकि फल के अंदर ही बीज निहित होते हैं। ऋतुफल अर्पण करने के पीछे वैज्ञानिक तर्क यह है कि प्रत्येक पल प्रत्येक व्यक्ति खाए और प्राकृतिक गुणों से लाभान्वित हो सके क्योंकि इनमें ऋतु के अनुरूप रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता निहित रहती है। प्रकृति में निरंतरता बनी रहे इसलिए ऋतुफल चढ़ाये जाते हैं।

18. पान या तांबूल

संस्कृत भाषा में पान को तांबूल कहा जाता है। यह सौंदर्य का प्रतीक है। पूजन कार्य में सभी देवताओं को पान अवश्य चढ़ाया जाता है। यह साबुत, डंठल समेत ही चढ़ाते हैं। कटा-फटा, डंठल रहित पान अशुद्ध माना जाता है। यह भी वनस्पतियों का प्रतिनिधित्व करता है। इसको सीधा चढ़ाना चाहिए अर्थात चिकना हिस्सा ऊपर और हल्का हरा हिस्सा देव प्रतिमा की तरफ होना चाहिए। यह मुख-शुद्धता के लिए अर्पण किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि-इसमें ऐसी संजीवन-औषधि होती है जो मरते हुए व्यक्ति को भी कुछ समय का जीवन दे सकती है। इसलिए इसे अमृत-पत्र भी कहते हैं। पान चढ़ाने का प्रमुख महत्व यह है कि हम अपनी वनस्पतियों को संरक्षण दे सकें तभी वह देवी-देवताओं के लिए प्रयुक्त की जा सकती हैं।

सुपारी /ताम्बूल फल

सुपारी को संस्कृत भाषा में तांबूल फल कहते हैं। यह देव-स्वरूप, प्रतीक के रूप में, नवग्रह-स्थापना में प्रयुक्त किया जाता है। यह भी कहीं से टूटी, कटी हुई नहीं होना चाहिए। पान के साथ सुपारी, मुद्रा, अवश्य चढ़ाई जाती है। यह भी मुख-शुद्धता के उद्देश्य से चढ़ाई जाने वाली वस्तुएं हैं।

महत्ता

सुपारी के द्वारा हमें यह संदेश मिलता है कि एक छोटी सी वस्तु भी किसी देवी देवता और किसी मनुष्य का प्रतिनिधित्व कर सकती है अर्थात हमें किसी भी बड़े, महत्वपूर्ण आयोजन कार्यक्रमों में भी, स्वयं को छोटा, गरीब या छोटे पद का न समझकर, अपनी उपस्थिति अवश्य देना चाहिए।

19. मुद्रा या सिक्का

सिक्का या मुद्रा लक्ष्मी जी का प्रतीक है। ये इस बात का संदेश देते हैं कि-धन पर किसी एक का अधिकार नहीं होगा वरन समान रूप से सभी का अधिकार है। खर्च करने में भी दोनों पक्ष की सहमति होना चाहिए। यदि पूजन कार्य में कोई वस्तु उपलब्ध ना हो सके तो इसके बदले में उसके मूल्य के बराबर राशि चढ़ाई जा सकती है। यही कारण है कि-माँगलिक, अमाँगलिक कार्यों में अनेक सामग्रियों के बदले में नकद रूपये निश्चित राशि में दे दिए जाते हैं।

महत्ता

मुद्रा या सिक्का लक्ष्मी जी का प्रतीक है। बिना लक्ष्मी की कृपा के कोई भी कार्य संभव नहीं है। जन्म, मरण, परण के सभी माँगलिक अमाँगलिक कार्य धन द्वारा ही संभव हैं। इसलिए मनुष्य को धनार्जन और संचय हेतु परिश्रम, एवं व्यावसायिक कर्म अवश्य करना चाहिए।

20. सुगंधित द्रव्य, इत्र

सुगंधित द्रव्यों से तात्पर्य रुचिकर सुगंधयुक्त सामग्री जैसे गुलाबजल, केवड़ाजल एवं फूलों की खुशबूमय द्रव्य इत्र आदि से है। ये वातावरण को सुरभित मनमोहक बना देते हैं। नकारात्मक ऊर्जा दूर करते हैं। देवी देवताओं की प्रसन्नता हेतु प्रत्येक इष्टदेव को सुगंधित द्रव्य जल में मिलाकर या लोंग में इत्र लगाकर अवश्य अर्पित करना चाहिए।

महत्ता

सुगंधित द्रव्य देवप्रतिमाओं पर चढ़ाने का भाव यह है कि जिस प्रकार सुगंध अपने प्रभाव से समस्त वातावरण को सुरभित कर देती है, ठीक वैसे ही हम भी अपने कृत्यों को ऐसा करें कि हमारा प्रभाव दूसरों पर जमा सकें। अप्रिय वातावरण को भी सुरभित बना सकें। स्वयं को प्रभावशाली बनाने के लिए सत्कर्मों का लेपन, अभीसिंचन भी करें। ईश्वर प्रदत्त देह को ऐसा स्वरूप प्रदान कर सकें जो आसपास के वातावरण से नकारात्मक तत्वों को हटाकर अपनी खुशबू से आनंदमय परिस्थितियां उत्पन्न करें। हमारे हाथ हमेशा ऐसे कृत्य करें जिससे समाज सुरभित हो। अलग-अलग देवी-देवताओं को उनकी प्रकृति के अनुरूप अलग-अलग द्रव्य अर्पण करने का विधान है जिसका आशय यह है कि रुचि के अनुरूप गुणों में अभिवृद्धि की जाये।

21. पंचरत्नी

प्रकृति से उत्पन्न पांच प्रमुख रत्न-सोना, चांदी, मूंगा, मोती, तांबा अथवा कोई भी एक नग (पन्ना, हीरा, माणिक) को पंचरत्नी कहा जाता है। इन रत्नों के स्थान पर अपनी सामर्थानुसार उपरत्नों का प्रयोग कर सकते हैं। एक छोटी सी थैली या कागज में लपेट कर शुभ-अशुभ कार्यों में अर्पण किया जाता है। सोना चांदी तांबा आदि धातुओं के छोटे-छोटे टुकड़े एवं मूंगा मोती प्रति नग के रूप में संग्रहित करते हैं। यह नवग्रह के कल्याणकारी स्वरूप के प्रतीक है। ये चंद्र, मंगल, गुरु आदि ग्रहों की अनुकूलता को दर्शाते हैं। सोना-गुरु ग्रह का, चांदी-राहु, मूंगा-मंगल ग्रह का, मोती-चंद्र ग्रह का और अन्य नग भी अन्य ग्रहों के प्रतीक एवं रत्न प्रतिनिधि कहे जाते हैं संसार की बहुमूल्य धातुओं के की उपलब्धता एवं दुर्लभता को प्रदर्शित करते हैं।

महत्ता एवं कारण

पंच रत्नी आराध्य देव को अर्पित करने का, मूल भाव यह है कि-जीवन में इन सब के सहयोग से नव ग्रहों की संतुष्टि व प्रसन्नता बनी रहती है। ये अपने-अपने स्वरूप के अनुरूप सुख, शांति, शीतलता मंगलता प्रदान करते हैं ताकि मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त कर सके। प्रकृति से दुर्लभ मूल्यवान तत्वों को संग्रहित करके जीवन को सुखमय बनाने की भावना भी निहित है यह हमें भावी संकटों से बचाने का संदेश भी देते हैं।

22. सप्तधान्य

सात प्रकार के अनाजों को सप्तधान्य या सतनाजा भी कहते हैं। इसमें गेहूं-मंगल ग्रह, चावल-चंद्र ग्रह, चना दाल-गुरु ग्रह, उड़द या काली तिल-शनि ग्रह, जौ-शुक्र ग्रह, मूंग दाल-बुध ग्रह, और शक्कर-सूर्य ग्रह का प्रतिनिधित्व करते हैं। अनेक माँगलिक, अमाँगलिक कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है।

महत्ता

सप्तधान्य का पूजन में अत्यधिक महत्व है। ये हमें इस बात का संदेश देते हैं कि-अनाज मनुष्य की प्रथम जीवन रक्षक आवश्यकता है। अतः इसका उत्पादन और संग्रह दोनों ही प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

23. आरती

आरती को आरा त्रिका अथवा आरार्तिक कहते हैं। आरती, पूजा के अंत में की जाती है। स्कंद पुराण में वर्णित है कि पूजन मंत्र हीनं क्रिया हीनं होते हुए भी आरती अर्थात निराजन कर लेने से उसमें पूर्णता आ जाती है आरती आरंभ करने से पूर्व इष्ट देवता के मंत्र से तीन पुष्पांजलि देना चाहिए तदुपरांत ढोल नगाड़े संग और वाद्य यंत्रों से करना चाहिए। आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में चार बार, दो बार नाभि में एक बार मुख मंडल पर और सात बार समस्त अंगों में घुमाना चाहिए। आरती के पांच प्रमुख अंग हैं-प्रथम-दीपमाला द्वारा, दूसरा-जलयुक्त शंख द्वारा, तीसरा-धुले हुए वस्त्र द्वारा, चौथा-आम या पीपल के पत्तों द्वारा, पंचम-साष्टांग दंडवत से आरती करना श्रेष्ठ माना गया है। पांच बत्तियों की आरती-पंच प्रदीप। एक सौ आठ की बत्तियों की आरती महाआरती कहलाती है। रुई की तीसा बत्ती के लिये तीस धागेनुमा बत्ती को इकतीसवीं से बांधकर बंडल जैसा बनाने की आकृति को तीसा कहते हैं। शंकर जी को तीन बार, विष्णु जी का पाँच और गणेश जी को चार तार का तीसा बनाया जाता है। तीसा बत्ती जलाने के लिए उसे शुद्ध देशी घी में डूबा कर, इसका प्रयोग किया जाता है।

24. हवन सामग्री

हवन सामग्री को शाकल्य या समिधा भी कहते हैं। इसमें चंदन का बुरादा, जवा चावल, शक्कर, काली तिल, बेल का गूदा, कमलगट्टा, मजीठ, मेवा, कपूर आम के पत्ते, इत्यादि वस्तुएं मिलाई जाती है जिनकी एक निश्चित मात्रा होती है। चंदन का बुरादा मनचाही मात्रा में लिया जा सकता है। शेष वस्तुएं जैसे जवा एक पाव तो शक्कर उससे आधी, चावल शक्कर से आधे, काले तिल चावल से आधी मात्रा में मिलाए जाते हैं। इन सभी को गाय का घी, कपूर इत्यादि डालकर मिश्रण बना देते हैं।

हवन विधि

हवन किसी भी धार्मिक अनुष्ठान पूजा मंत्र जाप करके, अमुक देवता को, स्वाहा कहकर, हवन सामग्री अग्निकुंड में अर्पित करने की प्रक्रिया है। इसे आहुति देना' भी कहते हैं। 'स्वाहा 'का अर्थ है सही नीति से पहुंचाना।

महत्ता

स्वाहा से संबंधित कथा पुराणों में वर्णित है। स्वाहा प्रकृति की एक कला है जिसका विवाह देवताओं के आग्रह पर अग्निदेव के साथ संपन्न हुआ। भगवान कृष्ण ने स्वाहा को वरदान दिया था केवल उसी के माध्यम से देवता, हवन में अर्पित की जाने वाली सामग्री ग्रहण करेंगे। कोई भी यज्ञ पूजा तब तक सफल नहीं होती जब तक की अग्नि में स्वाहा के माध्यम से हवन सामग्री अर्पित ना की जाए। हवन में प्रयुक्त सामग्री अग्नि में जलाने से वातावरण शुद्ध, प्रदूषण रहित हो जाता है नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार होता है।

-----00-----

अध्याय-6: पूजा प्रतीक चिन्ह

1. ऊँ-ओंकार

हिंदू संस्कृति में ऊँ पवित्र, महिमामय, कल्याणकारी प्रतीक है। उसके उच्चारण में क्रमशः आ, ऊ, म-यह तीन अक्षर आते हैं जिनका गूढ़ अर्थ निम्नलिखित है:

'अ'-का अर्थ है-अज अर्थात ब्रह्मा जी जो सृष्टि के रचयिता है।

'ऊ'--अर्थात उपेंद्र-विष्णु भगवान, जोकि जगत के पालनहार हैं।

'म'--अर्थात महेश अर्थात भगवान शंकर जो कि संहार कर्ता हैं।

अतः ओम मंत्र का उच्चारण करने से 'त्रिदेव'-'का आवाहन होता है। इस बीज अक्षर को अत्यंत महत्वपूर्ण, रहस्यमय एवं शक्तिशाली माना गया है। प्रत्येक शुभ कार्य में इसका वाचन उच्चारण, अनिवार्य एवं चमत्कारिक है। इसके तीनों अक्षर क्रमशः-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद का प्रतिनिधित्व करते हैं।

महत्ता

ऊँ/ओम शब्द हिंदू धर्म शास्त्रों का उदगम स्त्रोत है। 'नाद'-अर्थात ध्वनि का मूल स्वरूप ऊँ कार/ओंकार माना गया है। ओम ही नाद ब्रह्म है इसके उच्चारण के बिना कोई भी जप, तप, दान और अनुष्ठान इसके उच्चारण के बिना संपन्न नहीं हो सकता है। यह पवित्र, अनिष्ट-निवारक और समृद्धि दायक है। समस्त माँगलिक चिन्हों में यह श्रेष्ठतम माना गया है। मनुष्य के शरीर में ब्रह्म प्रकाश स्थित है जो ऊँ/ओम के नाद से क्रियाशील होता है। यह शक्ति, संपन्नता का प्रतीक है। यह वास्तु दोषों का निवारण कर्ता है। गीता के आठवें अध्याय के तीसरे श्लोक में कहा गया है-'अक्षरा ब्रह्मा परमं' संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति ऊँ/ऊओम से हुई है इसलिए किसी भी मंत्र के प्रारंभ में ऊँ/ओम का उच्चारण करने पर ही वह पूर्ण माना जाता है जैसे-'ओम नमः शिवाय' वैज्ञानिक सत्यता के आधार पर भी ऊँ/ओम शब्द को सही माना गया है। यह विश्वास किया गया ह कि ब्रह्मांड में ओम/ऊँ शब्द की ध्वनि सर्वत्र विद्यमान है।

2. स्वास्तिक

स्वास्तिक का चिन्ह धार्मिक सौभाग्य, श्रेष्ठता, मंगल कल्याण, सुख, , सौहार्द और संपन्नता का प्रतीक है। इसमें "वसुधैव कुटुंबकम" का एवं सर्व बंधुत्व का भाव व्याप्त है। इसे गणपति, शिव, विष्णु, लक्ष्मी जी का प्रतीक भी माना जाता है। गणेश पुराण में वर्णित है कि 'स्वास्तिक' गणेश जी का प्रतीक है। माँगलिक कार्यों में इसकी स्थापना अति अनिवार्य है। धार्मिक कार्यों में इसकी प्रतिष्ठा किए बिना निर्विघ्नं सफलता प्राप्त करना कठिन और संशय पूर्ण होता है। विश्व के सभी धर्मों ने इसे पवित्र और मंगलमय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। इसे हिंदू संस्कृति में 'सातिया' के नाम से भी जानते हैं। जो कि सुदर्शन चक्र का प्रतीक है। स्वास्तिक के चमत्कारिक स्वरूप की सबसे बड़ी अद्भुत विशेषता यह है कि इसे किसी भी ओर से दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे, घुमाया जाए, इसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आता है। वह हर ओर से एक जैसा ही दृष्टिगोचर होता है। तात्पर्य है कि यह समदर्शी और सर्वव्यापी है। स्वास्तिक की चार भुजाएं, चारों दिशाओं-उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, की ओर संकेत करती हैं। इसमें बनाई गई बिंदियाँ

भी अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, को प्रदर्शित करती हैं। अर्थात शुभ कार्य के लिए इन पर संयम रखकर ही मंगल कार्य किए जाना संभव है।

महत्ता- पुराणों में दो प्रकार के स्वास्तिक स्वरूपों का वर्णन किया गया है -

प्रथम स्वरूप गणेश जी का प्रतीक है, जिसकी भुजाएं बाहर की ओर फैली हुई होती है, जो इस बात का प्रतीक है कि बुद्धि का विस्तार चारों ओर से करो अर्थात हमेशा बाहरी शक्तियों से अर्जित करते रहने का संदेश देते हैं।

द्वितीय स्वरूप लक्ष्मी जी का प्रतीक है, जिसकी भुजाएं अंदर की ओर झुकी हुई होती है, जो इस बात का संकेत है कि चारों दिशाओं से प्राप्त शक्ति को संचित करके आत्म विकास का प्रयास करो। धन को संचित करो। समय आने पर ही उसका प्रयोग करो। अर्थात स्वास्तिक का चतुर्दिक स्वरूप कल्याण और सर्व व्यापकता का प्रतीक है। स्वास्तिक हमें यह समझाता है की जीवन में संचय करना अत्यंत आवश्यक है। इसकी भुजाएं अंदर की ओर झुकी हुई होती हैं जो यह संदेश देती हैं कि संचय और बुद्धि के द्वारा व्यक्ति जीवन में सफलताएं अर्जित कर सकता है।

3. शुभ लाभ

वेद-पुराणों में स्वास्तिक के दो स्वरूप बतलाये गये हैं। प्रथम-बुद्धि के देवता गणपति परिवार का प्रतीक है और दूसरा-लक्ष्मी जी का। प्रथम स्वास्तिक जो बुद्धि के स्वामी भगवान गणेश जी का प्रतीक है उसके अंदर बनी चार बिंदिया-क्रमशः--अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की परिचायक हैं अर्थात जीवन में चारों में संतुलन बनाकर कार्य करना ही बुद्धिमत्ता है। स्वास्तिक के दोनों ओर दो बिंदिया दो डांडिया हैं जो ऋद्धि एवं सिद्धि देवी का प्रतीक हैं। ये गणेश जी की दो पत्नियाँ हैं, जो यह दर्शाती हैं कि बुद्धि के अधीन रहकर ही मनुष्य को ऋद्धि और सिद्धि की प्राप्ति हो सकती है। इन पर बुद्धि अर्थात गणेशजी का नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। इन डन्डियो के दोनों ओर दो छोटी डांडिया और बनायी जाती हैं, जो क्रमशः-बाँये ओर ऋद्धि-पुत्र शुभ, और दाएं ओर सिद्धि-पुत्र लाभ की प्रतीक हैं। जो दोनों अपनी माताओं द्वारा संस्कारित और संयमित होते हैं। मध्य में स्थित बिंदी गणेश जी की बेटी माँ संतोषी का प्रतीक हैं। इस प्रकार बुद्धि दाता गणेश जी का संपूर्ण परिवार ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ और संतोषी माँ, मनुष्य की सफलता पूर्णता और प्रसन्नता का प्रतीक हैं। इस स्वास्तिक का स्वरूप ऐसा है। इसके अतिरिक्त इस स्वास्तिक की चारों भुजाओं के सिरे बाहर की ओर खुले हुए होते हैं, अर्थात ये चारों दिशाओं से अपनी बुद्धि का विस्तार करने की प्रेरणा देते हैं। अपनी बौद्धिक क्षमता चहुं दिशाओं में फैला कर, निरंतर प्रयासरत अर्थात चौकन्ना होकर कार्य करने से ही सफलता संभव है। दीपावली के समय दोहरे स्वास्तिक वास्तव में गणेशजी और लक्ष्मी जी के प्रतीक हैं। पुराणों में गणेशजी को, माँ लक्ष्मी के मानस पुत्र कहा गया है इस प्रकार प्रत्येक शुभ कार्य में दोनों ही तरह के स्वास्तिक बनाए जाना चाहिए क्योंकि दोनों का स्वरूप और भाव अलग अलग है।

4. पूजन यंत्र

देवों की यथेष्ट उपासना हेतु पूजन यंत्र और मंत्र दोनों का ही प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा एक दूसरे के पूरक हैं उसी प्रकार यंत्र और मंत्र का

भी संबंध है। पूजन यंत्र देवताओं का तांत्रिक स्वरूप कहलाता है और मंत्र उसकी आत्मा है। प्रत्येक देवता का यंत्र अलग-अलग और स्वरूप ही अलग-अलग होता है। जो उनके बीज मंत्रों द्वारा सिद्ध करने पर ही जीवन में प्रभाव डालते हैं। यंत्रों की शक्ति उनकी रेखाओं और बिंदुओं से होती है। यह अलग-अलग धातुओं पर बनाए जाते है।

भोजपत्र पर निर्मित यंत्र का प्रभाव 6 वर्ष तक पूज्य रहता है। ताम्रपत्र पर बनाये गये त्रंत्र-12 वर्ष तक पूज्य रहते हैं और ये 100 गुना अधिक फल देते हैं। चांदी पर बनाए गए पूजन यंत्र 20 वर्ष तक पूज्य रहते हैं और 1000 गुना प्रभाव देते है। सोने पर बने यंत्र आजीवन रहते हैं। इनका प्रभाव करोड़ गुना होता है। यंत्रों की स्थापना करके, उचित मंत्रों द्वारा पूजन करने से ही, धन, वैभव और यश की प्राप्ति होती है। शत्रुओं का नाश होता है। रुके हुए काम बनते हैं। दरिद्रता का नाश होता है। यंत्र और मंत्र दोनों की शक्ति मिलकर ही वायुमंडल से सकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित कर के उपासक की मनोकामना पूर्ण करते हैं। 'लक्ष्मी जी के यंत्र को-श्री यंत्र 'कहते हैं। इसे यंत्र राज भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त मारुति यंत्र-हनुमान जी के, कुबेर-यंत्र, कुबेर जी के, बगुलामुखी यंत्र, माँ बगलामुखी के लिये विशेष रूप से पूजनीय माना गया है। इसके अतिरिक्त महामृत्युंजय यंत्र और देवताओं के भी यंत्र हैं किंतु सबसे प्रमुख बात यह है कि यंत्रों के पूजनमात्र से कोई भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती जब तक कि उनके बीज मंत्रों का उपयोग न किया जाए अर्थात बीज मंत्रों के साथ जप करने से ही उनका पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

5. पूजन मंत्र एवं बीज मंत्र

भारतीय ग्रंथों, वेद पुराणों में बीज मंत्रों को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। ये हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं, जो पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते कदमों से अपनी पहचान खो रहे हैं। वास्तव में बीज मंत्रों के अक्षर गूढ संकेत लिए हुए हैं। जिनका अर्थ एवं प्रभाव, मंत्र शास्त्रों में निहित है। हमारे प्राचीनतम वेद-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में इन मंत्रों की महिमा को विस्तार से समझाया गया है।

बीज मंत्र

1. **गणपति बीज मंत्र-**'गं '--का अर्थ-गणेश, 'अ'--' विघ्न-नाशक एवं बिंदी-दुखहरण है। अतः इस बीज मंत्र का अर्थ है--विघ्न विनाशक गणपति मेरे संकट दूर करें।
2. **लक्ष्मी बीज मंत्र-**'श्रीं '-का अर्थ-'श'-महालक्ष्मी धन संपदा। 'ई'-महामाया 'म-''नाद-विश्वमाता और 'बिंदी '-दुख भंजन है। संपूर्ण मंत्र का अर्थ है--धन की अधिष्ठात्री देवी माँ 3लक्ष्मी मेरे दुखों का हरण करें।
3. **कृष्ण बीज मंत्र-**इस मंत्र में-'क'-शब्द का अर्थ--'कृष्ण'। 'ल'-का अर्थ दिव्यतेज और 'बिंदी'-का अर्थ दुख नाशक है। संपूर्ण अर्थ में-योगेश्वर कृष्ण मेरे दुख दूर करें।
4. **हनुमान बीज मंत्र-**'हं'----इसमें 'ह'-अक्षर का अर्थ-हनुमान जी। 'अ' का अर्थ-संकट मोचन और' बिंदी '-का अर्थ-दुखहरण है। संपूर्ण मंत्र का तात्पर्य है-संकट मोचन हनुमान जी मेरे कष्ट दूर करें।

5. **शिव बीज मंत्र-**'हौं '--इसमें 'ह'-का अर्थ शंकर है। 'औ'-अर्थ सदाशिव-। और 'बिंदी'-का अर्थ-दुख विनाश है। इस प्रकार मंत्र का अर्थ है-भगवान शंकर मेरे दुख हरें और कल्याण करें।
6. **सरस्वती बीज मंत्र-**'ऐं-' इस मंत्र में-'ए'-शब्द सरस्वती जी। 'नाद''--जग माता और 'बिंदु '-'का अर्थ-कार्य पूर्णता है। अतः पूर्ण मंत्र का अर्थ है--हे जगत माता सरस्वती हमारे कष्ट दूर करें।

6. दायावर्ती शंख

(अ) दक्षिणावर्ती शंख/दांयावर्ती शंख-

भारतीय संस्कृति में यह दक्षिणावर्ती शंख विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है। वैसे तो सभी शंख जल से ही प्राप्त होते हैं किंतु दांयावर्ती शंख समुद्र मंथन के समय प्राप्त हुआ था इसलिए इसे लक्ष्मी जी का भाई भी कहा जाता है। यह श्वेत वर्ण का है, पीछे से बंद रहता है। ऊपर का हिस्सा दाएं और खुला रहता है। इस पर हल्के लाल रंग की धारियां भी होती है। यह लक्ष्मी जी को अति प्रिय है। वाणी-दोष, वात-दोष, , मधुमेह आदि रोगों में इसमें जल भर कर, पीना लाभदायक है। दीपावली के दिन इसका विशेष रूप से पूजन किया जाता है। यह शंख कभी भी बजाया नहीं जाता। केवल पूजा स्थल में रखा जाता है। इसका पतला नोक वाला हिस्सा, भगवान की ओर/ लक्ष्मी जी की ओर रखते हैं। खुला है हिस्सा आकाश की ओर रखकर जल भरे अथवा चावल रखें। पूजन उपरांत पूरे घर में इस जलसे छिड़काव करने से जीवाणुओं का नाश होता है और धन-धान्य, वैभव, यश में भी वृद्धि होती है। यह वास्तु कारी, तांत्रिक स्वरूप युक्त शंख कहलाता है। उचित मंत्रोच्चारण पूर्वक साधना करने से ही इसका चमत्कारिक परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

महत्ता

शंख में कैल्शियम और फास्फोरस की मात्रा बहुत अधिक होती है इसलिए यदि इस में जल भरकर उसे पिया जाता है या घर में छिड़काव किया जाता है तो जीवाणुओं का नाश होता है और शरीर में रहने वाले विषाणुओं का भी नाश होता है।

(ब) कलश घट अथवा जगन्नाथजी का लोटा-

यह कलश घट जगन्नाथ पुरी से लाया जाता है। जो कि संपन्नता और धान्य-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। कलश अर्थात कुंभ पूर्णता का प्रतीक है। लक्ष्मी जी अक्षय धन का कुंभ/कलश अपने हाथों में धारण करती हैं जिससे निरंतर स्वर्ण मुद्रायें बरसती हैं, जो धन-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। निरंतरजगन्नाथ जी के घट में श्रीकृष्ण बलराम जी, सुभद्रा जी की प्रतिमा अंकित होती है। इनका पूजन चैत्र मास के प्रत्येक सोमवार को किया जाता है। जिसमे बैंत का भी पूजन किया जाता है तथा घट एवं मटका में आम के पत्ते टेसू के फूल आम की बौर आदि पूजन सामग्री का उपयोग किया जाता है।

महत्ता

बैंत आम की बौर, टेसू के फूल, आदि का पूजन प्रकृति के संरक्षण का संदेश देते हैं। नए मटके का प्रयोग ग्रीष्म ऋतु के स्वागत में रखकर स्वास्थ्य रक्षा के लिए भी यह हमें जागृत करता है।

7. कच्छप, एरावत हाथी

(अ) कच्छप या कछुआ-

कछुआ शुभता का प्रतीक माना जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में वर्णित कथा के अनुसार कच्छप की पीठ पर ही समुद्र मंथन करके चौदह रत्न निकाले गए थे। उनमें से विष्णुप्रिया श्री लक्ष्मी जी भी एक हैं। जिन्हें भगवान विष्णु ने अंगीकार किया था। इसीलिए पूजा स्थल में पीतल तांबा चांदी या स्वर्ण का कच्छप रखा जाता है। इसका मुख भगवान की ओर होना चाहिए इस समक्ष भी विष्णु-सतनाम का पाठ इक्कीस या एक सौ आठ बार श्री लक्ष्मी मंत्र की माला जप कर, सिद्ध किया जाता है। तभी यह फलदाई होता है। लक्ष्मी प्राप्ति, व्यवसाय वृद्ध, रोग निवारण हेतु इसे घर या दुकान में रखते हैं। कच्छप आकृति की स्वर्ण मुद्रिका भी धारण करने से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है किंतु इन सभी को पहले विष्णु मंत्र, लक्ष्मी मंत्र से सिद्ध किया जाना परम आवश्यक है। प्रतिष्ठानों में रखे जाने वाले अक्षर या कछुए का मुंह मुख्य द्वार की ओर होना चाहिए, तभी इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।

(ब) ऐरावत हाथी और वाजिश्रवा घोड़ा-

समुद्र मंथन, मकर संक्रांति के दिन देवताओं और असुरों के मध्य हुआ था। जिसमें से चौदह रत्न निकले थे, ऐरावत हाथी और वाजिश्रवा घोड़ा भी उसी से निकले हुए हैं। आज भी, इसलिए हिंदुओं में संक्रांति के दूसरे दिन हाथी, घोड़े की पूजा की जाती है। हाथी लक्ष्मी जी का वाहन भी है। यह बल ऐश्वर्य का प्रतीक है। धर्म युद्ध में हाथी विजय श्री प्रदान करता है। हाथियों में सर्वश्रेष्ठ ऐरावत हाथी को अपने शौर्य से पांडव-पुत्र अर्जुन पृथ्वी पर, माता कुन्ती के लिये महालक्ष्मी-पूजन हेतु लाये थे। इसलिए आज भी यह संपन्नता और वैभव के प्रतीक रूप में महालक्ष्मी के दिन पूज्यनीय है। प्राचीन काल में युद्ध के समय हाथियों का प्रयोग बहुतायत से किया जाता था। यह ऐरावत हाथी देवताओं के राजा इंद्रदेव को प्रदान किया गया है। हाथी दांत और घोड़े की नाल का प्रयोग आज भी तंत्र साधना, बाल-व्याधि नाश के लिए करते हैं। यह संपन्नता यश, कीर्ति का प्रतीक होने के कारण मंदिरों में, घरों में द्वार पर रखे जाते हैं। सजीव रूप में राजाओं को उपहार स्वरूप भी दिए जाते थे।

8. चरण पादुकाएं, उल्लू

(अ) चरण पादुकायें-

चरण पादुकायें भगवान के चरणों में पहनी जाने वाली वस्तुयें हैं, इन्हें खड़ाऊँ भी कहते हैं जो आराध्य देवता के चरण मानकर पूजी जाती हैं। ये पत्थर, तांबे, पीतल अथवा चांदी की धातु के बने हुये दो चरण होते हैं। यह भगवान के पदार्पण के प्रतीक हैं। भगवान के श्री विग्रह का पूजन प्रतिदिन संभव न होने पर मंदिरों में, उनके चरण पखार कर पूजन-कार्य संपन्न कराया जाता है। यह जिस स्थल-घर, दुकान, पूजा-गृह,

अथवा व्यवसायिक प्रतिष्ठान में रखे जाते हैं, वहाँ पर उनका अग्रभाग प्रवेश द्वार के अंदर की तरफ होना चाहिए। पूजन के समय इन्हें अपनी ओर होना चाहिए। जिसका आशय यह है कि हमारे इष्ट देव का आगमन हो रहा है जो पूजन की पूर्णता का भाव व्यक्त करता है। मंदिरों में चरण चिन्हों का पूजन ही देव पूजन के रूप में किया जाता है। कुछ शिष्य भक्त, अपने गुरु देव की अनुपस्थिति में भी उनकी चरण पादुकाओं का पूजन करके संतुष्टि प्राप्त करते हैं। रामायण में भगवान श्री राम की चरण पादुकाओं का पूजन, भाई भरत द्वारा किए जाने का उल्लेख सर्वत्र मिलता है। जो भ्रातृ-प्रेम का प्रतीक है।

महत्ता

चरण पादुकाओं का पूजन देवी देवता के प्रति हमारे सम्मान को प्रदर्शित करता है। चरण पादुका पूजने का तात्पर्य भारतीय संस्कृति यह है कि शरीर की पूरी शक्ति एवं ऊर्जा पैरों के अंगूठों में समाहित या विद्यमान होती है। जो की चरण पादुका के स्पर्श के माध्यम से ही हमारे शरीर में पहुंचती है। इसलिए चरण स्पर्श करते समय दोनों हाथों से दोनों अंगूठों को स्पर्श अवश्य करना चाहिए। यह मान्यता है कि भगवान विष्णु के दाहिने अंगूठे में गंगा जी का वास है, वही गंगाजी को भगवान शंकर ने अपनी जटाओं में विराजित किया हैं। जिससे चरण पादुका में उनकी दिव्य-शक्तियां भी समाविष्ट हो जाती हैं। पग वंदन की प्रथा इसलिये रखी गयी है कि छोटे, चरण छूकर जान सकें कि बड़ों का जीवन भी कितना कंटकमय रहा है।

(ब) उल्लू या उलूक-

उल्लू लक्ष्मीजी का वाहन है। जो केवल रात्रि के समय का वाहन है। यह लक्ष्यप्राप्ति, स्फूर्ति, और चंचलता दूरदर्शिता का प्रतीक है। वहीं यह दिवान्धता (दिन में दिखाई ना देना) का भी प्रतीक है तात्पर्य है कि धन की मदान्धता (धन का घमंड) में ज्ञानरूपी सूर्यप्रकाश दूर हो जाता है। जिस प्रकार उल्लू दिन में अंधा हो जाता है केवल रात्रि के अंधकार में ही वह देख सकता है। उसी प्रकार अति धन का, दुरुपयोग मनुष्य को अंधकार के रास्ते की के ओर भी ले जा सकता है। उल्लू तांत्रिक साधना का भी प्रतीक है ऐसा कहा जाता है कि दीपावली की अंधेरी अर्धरात्रि में तांत्रिकों द्वारा इसे सिंदूर चढाकर जागृत किया जाता है और फिर गड़े धन इत्यादि का पता लगाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसकी हड्डी का चूरा जिसे खिला दिया जाए तो उसकी बुद्धि भी उल्लू जैसी हो जाती है। इसलिए उल्लू पर सवार लक्ष्मी जी का स्वरुप शुभदायक नहीं माना गया है। यह अलक्ष्मी का आगमन भी कहलाता है, जो धोखाधड़ी अवैध धन का प्रतीक है, व्यक्ति को बुरे मार्ग की ओर ले जाता है।

9. कमल

कमल सौंदर्य का प्रतीक है, पानी मे उत्पन्न होता है। इसलिए भी लक्ष्मीजी को अत्यंत प्रिय है। कमल स्वच्छता का प्रतीक है स्वयं दलदल में उत्पन्न होता है किंतु गंदगी, उसके कलेवर को दूषित नहीं कर पाती है। यही कारण है कि लक्ष्मी जी को कमलासन अति प्रिय है। कमल का पुष्प लाल और सफेद रंग का होता है। श्वेत कमल सरस्वती जी को और लाल कमल देवी लक्ष्मी को अर्पित किया जाता है। श्वेत कमल-

शांति, त्याग, वैराग्य और संयम का प्रतीक है अर्थात विद्या प्राप्ति के लिए इन गुणों का होना आवश्यक है, तभी सरस्वती जी की साधना संभव है। वहीं लाल कमल, प्रेम, वैभव, संपन्नता का प्रतीक है जो यह दर्शाता है कि जीवन को आनंदमय, मंगलमय बनाने हेतु लक्ष्मी जी की आराधना आवश्यक है। रामचरितमानस में लिखा है कि भगवान श्रीराम ने श्री दुर्गा जी की शक्ति उपासना सहस्त्र कमल से करने का संकल्प लिया था। उनकी परीक्षा लेने के लिए देवी जी ने एक कमल छिपा दिया था। तब कमलनयन कहलाने के कारण भगवान श्री राम, कमल के स्थान पर, यज्ञ पूर्ति हेतु स्वयं का नेत्र चढ़ाने के लिए उद्यत हो गए थे तब देवी जी ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें विजयी होने का वरदान दिया था।

महत्ता

कमल स्वयं दलदल से उत्पन्न होता है, उसके बाद भी उस पर गंदगी का कोई भी असर नहीं होता है। इसी प्रकार से हमारा जीवन भी हमें कमल की तरह बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त सांसारिक व्यक्ति, को, संसार में फैली बुराइयों-काम क्रोध, मोह, लोभ इन सब में लिप्त न होकर कमल के सदृश्य अपने आप को स्वच्छ, शुद्ध और पवित्र बनाना चाहिए।

10. नवरत्न

नवरत्न धरती माँ के गर्भ, प्राकृतिक स्रोतों से खनिज रूप में प्राप्त होने वाले, आभावान रंगीन पत्थरों को रत्न कहते हैं, जिन्हें विभिन्न तरीकों से तराशा जाता है। उसके बाद इनकी आभा कई गुनी बढ़ जाती है। जो विभिन्न भौतिक रासायनिक संगठनों द्वारा विशिष्ट रंग-रूप गुणों के स्वामी होते हैं। आयुर्वेद और ज्योतिष विज्ञान में इन्हीं गुणात्मकता के आधार पर इन्हें प्रयोग किया जाता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मनुष्य की उंगलियां मस्तिष्क ग्रहों और रत्नों का घनिष्ठ संबंध है। विशिष्ट ग्रह, शांति हेतु विशिष्ट रत्न, निश्चित अंगुलियों में विशिष्ट उद्देश्य से धारण किए जाते हैं। निर्धारित समय और निर्धारित मात्रा में वास्तविक रत्नों का प्रयोग जीवन में चमत्कारिक परिणाम देता है। ऐसी मान्यता है कि यह मनुष्य के जीवन के विभिन्न कष्टों और दोषों को दूर करते हैं।

महत्ता

वैज्ञानिक शोधों द्वारा भी रत्न चिकित्सा को सत्य माना गया है। बशर्ते कि उनको विधि विधान पूर्वक किया जाए। वास्तविकता यह है कि रत्न धारण करने से मनुष्य में आत्मविश्वास जागृत होता है जिससे स्नायु तंत्र एवं मस्तिष्क भी नियंत्रित होता है। तन मन दोनों ही स्वस्थ होते हैं। जिससे सकारात्मक सोच बढ़ती है। हिंदू संस्कृति में जन्म, मरण, परण तीनों में पंच रतनी-सोना, चांदी, मूंगा, मोती, माणिक का प्रयोग अति आवश्यक रूप से किया जाता है।

जीवन नवरत्नों का उपयोग बहुतायत से किया जाता है ज्योतिष में ग्रह शांति के लिए इसका प्रयोग किया जाता है, जिससे उनके जीवन में होनेवाले कष्टों से उन्हें मुक्ति मिलती है यह एक तरह का रंग चिकित्सा भी है रंगों के माध्यम से व्यक्ति में

सकारात्मक प्रभाव देखे जाते हैं जिससे उसका मन शांत होता है और तन की व्याधियां दूर होती हैं।

11. गोमती चक्र

पूजन कार्य एवं तंत्र साधना में सीप के आकार का गोमती चक्र अत्यंत लाभकारी परिणाम देता है। यह गोमती नदी के किनारे पाया जाने वाला सफेद रंग का पत्थर है, जिसके पीछे की ओर भूरे रंग का अर्ध चक्र बना होता है। यह भी वास्तव में समुद्र से ही प्राप्त होता है। वास्तु एवं ज्योतिष में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। नजर दोष दूर करने, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए विभिन्न तरीकों से इसका प्रयोग किया जाता है। चांदी की डिब्बी में 11 गोमती चक्र रखकर हल्दी सिंदूर लगाकर जेब में या व्यापार स्थल में रखे जाएं तो रुके हुए कार्य भी पूर्ण होते हैं। भूत प्रेत बाधा और व्याधियों को दूर करने के लिए भी गोमती चक्र बहुत उपयोगी माना गया है। यह लक्ष्मी जी का प्रतिरूप माना जाता है। इसमें फास्फोरस कैल्शियम की मात्रा बहुत अधिक होती है। लक्ष्मी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके इसे पूजा स्थल में रखने से निश्चय ही धन, वैभव, यश, आरोग्य की प्राप्ति होती है।

महत्ता

समुद्र के गहरे पानी से प्राप्त होने वाला गोमती चक्र एक छोटा सा सीप के आकार का चक्र होता है, किंतु फिर भी वह मनुष्य के जीवन में बड़े चमत्कारिक कार्य कर सकता है। जिससे हमें यह संदेश मिलता है, कि छोटी से छोटी वस्तु को या तुच्छ वस्तु को भी हमें कम नहीं समझना चाहिए। वह हमारे जीवन में कोई नया परिवर्तन ला सकते हैं।

12. कौड़ी

सफेद पीली भूरी एवं चितकबरी रंग की होती है। यह जल में पाए जाने वाले जीव का कंकाल अर्थात अस्थि कोश मात्र है। यह आंख के आकार की होती है। माँ लक्ष्मी जी की कृपा पाने के लिए दीपावली के दिन ग्यारह कौड़ी और बारहजीत के दिन बारह कौड़ियों का पूजन किया जाता है। दीपावली के दिन पूरे घर में दिए जलाने के बाद, एक दिए में कौंड़ी डालकर चौराहे पर रखना चाहिए इससे दरिद्रता का नाश होता है। अपार धन समृद्धि की प्राप्ति होती है। पीली कौड़ी विशेष प्रभाव कारी मानी जाती है। शुक्रवार को सायंकाल लाल पीले कपड़े में कौड़ी रखकर हल्दी रोली चावल से पूजन करके कुबेर यंत्र का रुद्राक्ष की माला से 108 बार जप करने से अपार संपदा धन भंडार प्राप्त होता है कौंड़ी भी लक्ष्मी जी का प्रतीक स्वरूप माना गया है, क्योंकि यह भी समुद्र से ही प्राप्त होती है।

महत्ता

कौंड़ी पूजन से जहां धन समृद्धि की प्राप्ति होती है वहीं इससे यह भाव भी स्पष्ट होता है कि मूल्य हीन होते हुए भी कौंड़ी पूजन से बहुमूल्य संपत्ति अर्जित की जा सकती है, अर्थात कोई भी व्यक्ति स्वयं को दीन हीन ना समझे हर व्यक्ति का अपना महत्व है और यदि वह यथोचित ढंग से कार्य करता है तो अपने जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त कर सकता है।

13. छत्र

छत्र सौंदर्य और सुरक्षा का प्रतीक है। संस्कृत भाषा में इसे छत्र कहते हैं जिसका तात्पर्य सामान्यता है छाता से ही है। जिस प्रकार छाता धूप वर्षा से सुरक्षा देकर हमें बचाता है, उसी प्रकार प्रभु की छत्रछाया में भी साधक बना रहे, इस भाव से भगवान को छत्र चढ़ाया जाता है।

महत्ता

जीवन में पड़ने वाले दुष्प्रभाव अर्थात बुरे दिन, प्राकृतिक आपदाओं-विपदाओं से भगवान हमारी रक्षा करें, यही भाव छत्र चढ़ाने का होता है। ये सामान्यतः चांदी के बनते हैं। कुछ लोग कार्य सिद्धि, मन वांछित फल प्राप्त करने के बाद छत्र चढ़ाने की मनौती भी करते हैं। छत्र प्रतिष्ठा का प्रतीक भी माना गया है। झांकियों, बारातों में मखमल, चमकदार कपड़ों के सुसज्जित छत्र इसके उदाहरण हैं। स्पष्टत: छत्र छाया भगवान, साधु जनों, वरिष्ठजनों की कृपा विद्वता ज्ञान और सुरक्षा का परिचायक होता है। इस प्रकार छत्र का पूजन में बहुत अधिक महत्व माना जाता है। कोई भी देव प्रतिमा बिना छत्र की नहीं रखी जाती है, जिसका भाव सुरक्षा छत्रछाया और श्रद्धा भक्ति है।

14. हत्था जोड़ी

यह हिमालय पर पटरागी नामक पक्षी से प्राप्त की जाती है। ये उसका पैर है। हत्था जोड़ी को देखने से दो हाथ आपस में जुड़े हुए लगते हैं, इसलिए इस हत्था जोड़ी कहते हैं। हिमालय पर्वत के दूरस्थ क्षेत्रों में यह जमीन से भी प्राप्त की जाती है।

महत्ता

ऐसी मान्यता है कि हत्था जोड़ी घर या प्रतिष्ठान में रखने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है। बिगड़े हुए काम बनते हैं। यह तंत्र साधना का एक प्रतीक चिन्ह है, इसे चांदी की डिबिया में सिंदूर और लॉन्ग के साथ रखा जाना चाहिए, यह इसका भोजन कहलाता है, जैसे-जैसे यह बढ़ती है वैसे वैसे सिंदूर कम होता जाता है, । अतः समय-समय पर इस में सिंदूर अवश्य चढ़ाना चाहिए। इसके बढ़ने के साथ ही शत्रुओं का दमन हो जाता है, । ऐसा कहा जाता है कि शत्रु स्वयं ही मित्रवत होकर, हाथ जोड़कर, साधक व्यक्ति के समक्ष खड़ा हो जाता है। इस प्रकार यह तांत्रिक होते हुए भी एक शुद्ध पूजन है।

15. सूर्य चिन्ह

सूर्य चिन्ह भवनों, घरों, देवालयों में पूर्व मुखी मुख्य द्वार क ऊपर लटकाया जाता है। जो उन्नति, जागृति प्रकाश का प्रतीक है। सूर्य की प्रथम किरण जब इस पर पड़ती है तो सकारात्मक उर्जा का प्रवेश होता है और नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है। हिंदू धर्म में सूर्य को प्रत्यक्ष देव के रूप में पूजा जाता है। प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य को जल चढ़ाने और सूर्यास्त काल में संध्या वंदन आरती करने की भारतीय परंपरा वेद पुराणों में वर्णित है। यह क्रिया भाग्योदय के लिए अति फलदायक मानी गयी है। सूर्य चिन्ह सूर्य के समान गोल किरणों युक्त आकृति के होते हैं। ये सोने, चांदी, पीतल, तांबे या मिट्टी का ही होना चाहिए। कांच, लोहा, स्टील, एल्युमीनियम

अपवित्र धातु मानी गई है क्योंकि ये शनि, राहु, केतु, सूर्य ग्रह के विरोधी ग्रह माने गये हैं।

महत्ता

सूर्य अलौकिक शक्ति एवं प्रखरता का प्रतीक है। जबकि शनि ग्रह का प्रतीक एल्युमीनियम, कांच, स्टील अप्राकृतिक धातु होने की वजह से पूजन कार्य में वर्जित हैं। सूर्य भगवान को जल चढ़ाने में भी स्टील का पात्र उपयुक्त नहीं है तांबे या पीतल के पात्र का उपयोग करना चाहिए। जब सूर्य, गुरु की राशि धनु में प्रवेश करता है तब एक मास तक इसी राशि में रहता है। इस मास को खरमास कहते हैं। इसमें कोई भी माँगलिक कार्य नहीं किए जाते हैं, इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि सूर्य और गुरु दोनों ग्रहों में हाइड्रोजन और हीलियम की मात्रा सबसे अधिक होती है। ये एक दूसरे की कक्षा में आकर अपनी किरणों को आंदोलित करते हैं जिससे व्यक्ति में मानसिक, शारीरिक विकार उत्पन्न होता है।

16. बंदनवार/ तोरण

भारतीय संस्कृति में तोरण या बंदनवार को सौंदर्य के प्रतीक के रूप में विशेष महत्व प्रदान किया गया है। आम के पत्रों, गेंदे, सेवन्ती, के फूलों, मोती, काँच, नकली, फूलों के जो आकर्षक पुष्पगुच्छ, मालाएं द्वार पर बांधी जाती हैं उन्हें ही बंदनवार कहते हैं। एक ओर यह ताजगी स्फूर्ति और नयनाभिराम सुख देते हैं तो दूसरी ओर नकारात्मक ऊर्जा को भी अवशोषित करते हैं। इसके अतिरिक्त मोती कांच कपड़ों कोड़ी सितारों के तोरण भी बनाए जाते हैं यह शुभ कार्य लाल पीले हरे सफेद रंगों के होना चाहिए। ये कटे-फटे भी नहीं होना चाहिए यह सौंदर्य समृद्धि धन संपदा और ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। जहां यह मनुष्य की भावनाओं, धर्म, संस्कृति, आर्थिक संपन्नता के द्योतक है वही माँगलिक कार्यों के कारणों को सजावट के माध्यम से व्यक्त भी करते हैं। इस में प्रयोग किए जाने वाले पुष्प नवग्रह और उनके स्वामियों के भी प्रतीक होते हैं। जिनकी कृपा दृष्टि बंदनवार के कारण बनी रहती है।

17. त्रिशूल

त्रिशूल यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन तीन देवता अर्थात त्रिदेव का प्रतीक है। जो क्रमशः जन्मकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता कहे जाते हैं। तीनों ही सृष्टि के मूलाधार हैं। त्रिशूल के अग्र भाग के तीनों फलक सृष्टि की सार्थकता, एकरूपता और यथार्थता के भावों को प्रकट करते हैं। पीछे का एक दंड, एकता का प्रतीक है। प्राणी जगत में तीनों के सहयोग से ही प्रकृति का चक्र चलता है। इसलिए मंदिरों में त्रिशूल चढ़ाकर जीवन में त्रिदेव की कृपा माँगी जाती है। देवी पूजन में बाने भी त्रिशूल-आकृति के होते हैं जो अपार शक्ति के प्रतीक है। आयुर्वेद में इसके तीन फलक "वात, पित्त और कफ" त्रिदोष के प्रतीक माने गये हैं। ज्योतिष शास्त्र में ये त्रिगुण-सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के प्रतीक हैं। यह शिव एवं शक्ति का अति प्रिय अस्त्र माना गया है। इसलिये भी भारतीय संस्कृति में त्रिशूल एक महत्वपूर्ण आयुध माना गया है।

18. मोर पंख

यह प्राचीन ग्रंथों में प्रेम, श्रद्धा का प्रतीक माना गया है। अतः भगवान कृष्ण ने अपने मुकुट में मोर पंख को धारण किया है। आभूषणों में भी मोर की आकृति बनी होना इसके प्रमाण हैं शयनकक्ष बैठक कमरे में मोर की तस्वीर, मूर्तियां, शोपीस रखना, प्रेम, सौंदर्य में वृद्धि करना है। मोर पंख वास्तु-दोषों को भी दूर करता है। माँ लक्ष्मी और सरस्वती जी की कृपा प्राप्त करने के लिए एवं सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने के लिए मोर पंख का उपयोग किया जाता है। यह ठीक दरवाजे के सामने लगाना चाहिए जहां सब की दृष्टि उस पर पड़ सकें। ग्रहों की शांति में भी ये अत्यंत प्रभावी माने गए हैं। ज्ञान वृद्धि के लिए पुस्तकों, संगीत उपकरणों के पास रखना श्रेयस्कर माना गया है। पुराणों में मोर पक्षी को पवित्र त्याग, शान्ति, ज्ञान, वैराग्य और शाश्वता का प्रतिरूप माना गया है। जैन धर्म में पिच्छी, मुस्लिम धर्म में झाड़ने के प्रतीक रूप में एवं हिन्दु धर्म मे पंखे के रूप मे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

19. गणपति/ विनायक

भवनों घरों के मुख्य द्वार के ऊपर गणेश जी की प्रतिमा लगाई जाती है। जिसका आशय यह है कि व्यक्ति प्रथम पूज्य गणपति जी का दर्शन, नमन करके ही घर में प्रविष्ट करें तथा इससे नकारात्मक प्रवृत्तियां घर की चौखट से ही लौट जाएं। जादू-टोने, टोटके जैसे तांत्रिक पूजन, भूत-प्रेत बाधाओं एवं विध्वंसकारी शक्तियों से घर मुक्त रहें। गणपति जी संपन्नता और समृद्धि के प्रतीक हैं। ये विघ्नहर्ता और बुद्धि दाता भी हैं गणपति जी का लंबा उदर संपन्नता का प्रतीक है और पीठ के पीछे का दबे भाग मे विपन्नता अर्थात दरिद्रता का वास होता है। ऐसी मान्यता है कि गणेश जी की प्रतिमा के पीछे भी गणेश जी का चित्र या प्रतिमा लगाई जाना चाहिए। इनसे गृह प्रवेश करने वालों के भावों में भी अतीव सकारात्मकता आती है। मुख्य द्वार से आते-जाते गणेश जी के दर्शन होते हैं।

20. श्री विग्रह या मूर्ति

हिंदू संस्कृति में मूर्ति अर्थात श्री विग्रह का पूजन किया जाता है। जिससे मनुष्य को यह प्रेरणा मिलती है कि हर व्यक्ति में भगवान हैं और भगवान मे हर व्यक्ति में विद्यमान है। अतः ये मूर्ति ईश्वर के साकार स्वरूप, सौंदर्य, शांति और स्थायित्व की प्रतीक होती हैं। ऐसी मान्यता है कि हमारे आचार-विचार, पूजन-अर्चन के भाव, मंदिर में, घर में रखी मूर्तियों में परिलक्षित होते हैं। इनकी सेवा पूजा करने से व्यक्ति में सद्भावना जागृत होती हैं, सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। वातावरण में चुंबकीय शक्ति प्रसारित होने से मानसिक शक्ति एवं प्रसन्नता आती है। यही कारण है कि मंदिर, किसी पूजा स्थल में सभी व्यक्ति परम नैसर्गिक शांति का अनुभव करते है।

21. रंगोली

वैदिक काल से ही भारत में रंगोली सौंदर्य, शांति और संस्कृति का प्रतीक है। त्योहारों पर्वों के अनुसार अलग-अलग प्रकार की रंगोलियां बनाई जाती है। दीपावली पर सूखे रंगों की, देवउठनी एकादशी पर गीले रंगों की रंगोलियां अर्थात माँडने बनाए जाते हैं। रंगोली शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है रंगों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति करना।

महत्ता

रंगोली के आकर्षक रंगों से मानसिक तनाव दूर होते हैं, सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। अंगुली और अंगूठे के माध्यम से बनाए जाने से यह ज्ञान मुद्रा बन जाती है, जो रंगोली बनाने वाले की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाती है। घुटनों के बल (उखड़ू) बैठ कर बनाने से अनेक शारीरिक समस्याओं से मुक्ति मिलती है। रंग संयोजक शक्ति के द्वारा नकारात्मक प्रभाव दूर होते हैं और मन मस्तिष्क शांत होता है जिससे पारिवारिक शांति भी आती है। इसके अतिरिक्त कलात्मक सज्जा व सौंदर्य से गृह प्रवेश करने वाले आगंतुक का मन भी प्रसन्न होता है जिससे संबंधों में भी मधुरता आती है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की रंगोली घर-परिवार को जोड़ने वाली, प्रेम और सहयोग को बढ़ाने वाली होती है।

22. झाड़ू

शास्त्रों के अनुसार, झाड़ू को धन की देवी महालक्ष्मी जी का प्रतीक माना गया है। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं काल घर एवं कार्य स्थल की नियमित सफाई से धन की प्राप्ति होती है अन्यथा दरिद्रता का वास होता है। उपयोग के पश्चात इसे ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहां किसी बाहरी व्यक्ति की नजर ना पड़े। गंदे अपवित्र स्थान पर या दीवार के सहारे खड़ी करके नहीं रखी जाना चाहिए। बिस्तर के नीचे भी नहीं रखना चाहिए। भूल कर भी पैर नहीं मारना चाहिए। उपयोग के पहले झाड़ू के पैर पड़ना चाहिए। मेहमानों, बेटियों, पंडितों के प्रस्थान के तुरंत बाद झाड़ू ना लगाएं अन्यथा रिद्धि-सिद्धि समृद्धि नहीं मिलती है।

महत्ता

झाड़ू लक्ष्मी जी का प्रतीक इसलिए मानी गई है, क्योंकि यह गंदगी दूर करके घर को स्वच्छ बनाती है। जिससे घातक रोग-बीमारियों के विषाणु समाप्त हो जाते हैं। धन व्यर्थ न जाने से व्यक्ति की दरिद्रता का भी नाश होता है और सुख-समृद्धि बढ़ती है।

23. हस्तक/ हाथे

भारतीय संस्कृति में हस्तक /हाँथे लगाने की यह परंपरा एक अनूठी परंपरा है जो अपने आप में कई रहस्य समेटे हुए है। नवविवाहित बेटी जब घर से विदा होती है, तब दीवार पर हल्दी के पांच हस्तक अर्थात हाँथे बनाती है। उसके बाद ससुराल में भी वह परिवार, घर, मंदिर में हल्दी के हाँथे, दीवार पर बनाती है। इसका तात्पर्य है-कि वेद ग्रंथों में यह माना गया है कि हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मीजी, मध्य भाग में सरस्वतीजी, कर मूल में ब्रह्मा जी का वास होता है और नववधू लक्ष्मी स्वरूपा मानी गई है। अतः उसके हाँथे सुख-समृद्धि ज्ञान और वंश वृद्धि के प्रति कहलाते हैं। जिन्हें वह दोनों कुलों में सुख समृद्धि यश वैभव के लिए, लगाकर प्रविष्ट होती है। अतः हस्तक या हाँथे लक्ष्मी जी के प्रतीक चिन्ह है और हल्दी माँगल्यता का प्रतीक है जो बृहस्पति अर्थात विष्णु भगवान को अर्पित की जाती है। अतः हस्तक लक्ष्मी नारायण के प्रतीक हैं, जो दांपत्य भाव को भी प्रकट करते हैं। ये धन, समृद्धि, शांति, यश आदि सर्व सुखों के दाता हैं।

-----00-----

अध्याय-7: पूजन अंक शब्दावली

1. **एकम-** सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, आकाश।
2. **द्वितीय-** द्विबाहु-दो भुजाएं, द्विपदी-दो पैर, द्विनेत्र-दो नेत्र, द्विकर्णी-दो कान।
3. **तृतीय-**
    1. **त्रिदेव :** ब्रह्मा-सृष्टिकर्ता, विष्णु-संसार पालनकर्ता, शिव-संहारकर्ता।
    2. **त्रिजीव :** थलचर-पृथ्वी में रहने वाले, नभचर-आकाश में उड़ने वाले, जलचर-पानी में रहने वाले।
    3. **त्रिवायु :** शीतल-ठंडी हवा, मंद-धीरे-धीरे बहने वाली, सुगंध-फूलों फलों की खुशबू वाली मिश्रित वायु।
    4. **त्रिलोक :** आकाश-वायुमंडल में ऊपर, पाताल-पानी में जमीन के अंदर, मृत्यु लोक-पृथ्वी या धरती।
    5. **त्रिदोष :** वात दोष-वायु संबंधी दोष, पित्तदोष-शरीर में पाचन संबंधी विकार, कफ दोष-शरीर में शीत सर्दी से उत्पन्न विकार।
    6. **त्रिगुण :** सतोगुण-सत्य, अहिंसा, ईमानदारी आदि, रजोगुण-राजसी गुण, अर्थ कामवासना मोह भोग। तमोगुण-झूठ, चोरी, बेईमानी लोभ, क्रोध, ईर्ष्या।
    7. **त्रिव्रत :** दूध, दही और घी का समान मात्रा में मिलाया गया मिश्रण।
    8. **त्रिनेत्र :** श्री शिवजी, काली जी।
    9. **त्रिकाल :** भूतकाल-बीता हुआ समय, वर्तमानकाल-चलने वाला समय, भविष्य काल-आने वाला समय।
4. **चतुर्थ**
    1. **चतुर्वर्ण**- ब्राह्मण पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान, वेद विद्या के ज्ञाता। वैश्य--व्यापार व्यवसाय कृषि कार्य करने वाला वर्ग। क्षत्रिय--राष्ट्र जनता समाज की रक्षा करने वाला वर्ग। शूद्र--सेवा कार्य करने वाला वर्ग।
    2. **चतुर्युग-** चार युग-सतयुग-सृष्टि का प्रथम युग-१७२८००० वर्ष। त्रेता युग--सृष्टि का द्वितीय युग, अवधि १२९६००० वर्ष। द्वापर युग-सृष्टि का तीसरा युग, अवधि ८६४००० वर्ष। कलयुग-सृष्टि का चौथा युग, अवधि ४३२००० वर्ष।
    3. **चारआश्रम-** ब्रह्मचर्य आश्रम-गुरु के पास विद्या कार्य हेतु सर्व सुखों का त्याग करके ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने वाला आश्रम। गृहस्थ आश्रम-अवस्था 50 वर्ष विवाहित दांपत्य जीवन का आश्रम। वानप्रस्थ आश्रम--75 वर्ष दांपत्य जीवन का त्याग, उत्तराधिकार सौंपना, वन में रहना। सन्यास आश्रम-75 वर्ष से अधिक उम्र के बाद केवल भगवत पूजन करना सभी रिश्ते नाते त्याग कर रहना।
    4. **चतुर्भुज-** चार भुजाओं वाले देवी देवता आदि।
    5. **चतुष्पदी-** चार पैर वाले जीव--पशु गाय भैंस बैल बकरी घोड़ा बिल्ली बंदर शेर हाथी आदि।
    6. **चार तीर्थधाम-** बद्रीनाथ-यजुर्वेद के प्रतीक विष्णु जी उत्तर दिशा में स्थित। रामेश्वरम-दक्षिण में स्थित, ऋग्वेद के प्रतीक शिवजी। द्वारकाधीश-पूर्व में स्थित, सामवेद के प्रतीक, भगवान श्री कृष्ण। जगन्नाथ पुरी-पश्चिम में स्थित, अथर्ववेद के प्रतीक भगवान जगन्नाथजी।

7. **चार कुंभ स्थल एवं अर्ध कुंभ स्थल-** प्रयागराज-गंगा यमुना सरस्वती का संगम स्थल। हरिद्वार-गंगा नदी का स्थल। नासिक-गोदावरी का स्थल। उज्जैन शिप्रा नदी का स्थल।
8. समुद्र मंथन के समय निकले अमृत कलश से छलकी बूंदे चार स्थानों के प्रतीक स्वरूप है। प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक 12 वें वर्ष में कुंभ मेला लगता है। क्योंकि देव दानव युद्ध 12 दिन चला था एवं देवों का एक दिन एक वर्ष के बराबर होता है, अर्धकुंभ प्रति छठवें वर्ष में इन्हीं स्थानों में होते हैं।
9. **चार उपवेद-** आयुर्वेद-धन्वंतरि जी द्वारा रचित। धनुर्वेद-विश्वामित्र द्वारा रचित। गंधर्व वेद-नारद जी द्वारा रचित। स्थापत्य वेद-विश्वकर्माजी द्वारा रचित।
10. **चतुर्वेद-** ऋग्वेद-पद्य रूप में, प्रार्थना, स्तुति-१०२८ ऋचाएं। यजुर्वेद-गद्य रूप में गतिशील यज्ञ मंत्र का वर्णन, ४० अध्याय-१९७५ मंत्र। सामवेद-गीतात्मक रुप में संगीत का वर्णन १८७५ मंत्र। अथर्ववेद-अथर्व ऋषि द्वारा रचित, कंपन स्थिति का ज्ञान, २० कांड ५९८७ मंत्र उपासना रहस्यमय विद्या का वर्णन।
11. **चार शास्त्र-** धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, मोक्ष शास्त्र,
12. **चार पुरुषार्थ-** 1-अर्थ-धन कमाना, 2-धर्म कर्तव्य पालन, 3-काम दांपत्य जीवन संतानोत्पत्ति, 4-मोक्ष-मोक्ष, भक्ति
13. **चार शत्रु-** 1-काम-स्त्री पुरुष संभोग की इच्छा वृत्ति, 2-क्रोध-किसी भी बात पर आवेशित होकर चिल्लाना, 3-मोह--किसी वस्तु व्यक्ति के प्रति अगाध प्रेम, विरक्ति से दुखित होना, 4-लोभ--वस्तुओं को आवश्यकता से बहुत अधिक मात्रा में संग्रह करना।
14. **चार भक्ति-** 1-सात्विकी-जल के समान निर्मल भक्ति मुक्ति, 2-राजसी-भक्ति-धनधान्य, द्रव्य, स्त्री-पुरुष सांसारिक सुखों के लिए, 3-तामसी भक्ति-शत्रु के नाश के लिए, 4-नवधा भक्ति-अनेक प्रकार से भावुक होकर भक्ति करना।

5. पंचम

1. पंच ज्ञानेंद्रीय : दृष्टि इन्द्रिय, श्रवण इंद्रिय, घ्राणेन्द्रिय, स्वादेन्द्रीय स्पर्श इंद्रिय।
2. पंचामृत : दूध, दही, चीनी, घी और शहद का मिश्रण।
3. पंचगव्य : गाय के पांच उत्पादन जैसे दूध, दही, मक्खन, गोमूत्र, गोबर को कहते हैं।
4. पंचरत्न : हीरा, सोना, चांदी, मोती, मूंगा को कहते हैं।
5. पंचपुष्प : कमल, कनेर, चमेली, चंपा, बेला, पुष्प को कहते हैं।
6. पंच पल्लव : आम, बट, पीपल, अशोक, गूलर के पत्तों को कहते हैं।
7. पंच पल्लव : कलश में डालकर घर में रखने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है।
8. पंचतत्व : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को कहते हैं। पृथ्वी का रंग पीला आकृति चौकोर। जल सफेद अर्धचंद्राकार। अग्नि लाल त्रिकोण आकृति। वायु काला गोल आकृति। आकाश चितकबरा बिंदु रूप में।
9. पंचदेव : विष्णु पालनकर्ता, शिव संहारकर्ता, गणेश विघ्न विनाशक, दुर्गा शक्ति दायक, सूर्य प्रकाश ऊर्जा दायक
10. पंचनदी : गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा।
11. पंच फल : श्रीफल, केला, अनार, बिही, सीताफल,
12. पंचकर्म : स्नान संध्या, तप, होम, अतिथि सत्कार

13. पंचोपचार : पूजा की संक्षिप्त विधि गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य द्वारा।
14. पंचानन : पाँचमुख वाले भगवान, शिवजी, हनुमानजी।

6. षष्टम

1. षटअंग : मस्तक, ह्रदय, शिखा, नेत्र, हाथ, पैर
2. षटऋतु : बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर।
3. षडवेदांग : शिक्षा, छंद, व्याकरण, निशक्त, ज्योतिष, कल्प।
4. षट-उपांग : प्रतिपद सूत्र, अनुपद, छंद भाषा, धर्मशास्त्र, न्याय, वैशेषिक।
5. उपांग ग्रंथ : सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमाँसा, वेदांत,
6. षट-रस : खट्टा, मीठा, कड़वा, कसैला, नमकीन, चटपटा, मसाला युक्त।

7. सप्तम

1. सतलोक : भूलोक, भुवलोक, स्वर्ग लोक, महलोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक।
2. सप्तर्षी : वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कश्यप, गौतम, जमदग्नि भारद्वाज
3. सप्तधातु : सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, टीन, शीशा।
4. सप्तधान्य : सतनाजा-गेहूं, चावल, जौ, सफेद सरसों तिल, चना, जवा, दही कुशा का अग्रभाग और पानी।
5. सप्तस्वर : सा-षटज रे-ऋषभ-गा-गंधार, म-मध्यम, प-पंचम, ध धैवत, नि-निषाद महर्षि भरत द्वारा संगीत शास्त्र का सृजन किया गया था और स्वर निर्धारित किये गए।
6. सप्त कर्म : स्नान, संध्या, तप, होम, पठन-पाठन, देवार्चन, अतिथि सत्कार।
7. सात सागर : क्षीर सागर, दूधी सागर, घृतसागर, पयान सागर, मधु सागर, मदिरा सागर, लहू सागर।
8. सात द्वीप : जम्बू द्वीप, पलक्ष्यद्वीप कुश द्वीप, शालमाली द्वीप, क्रौंचद्वीप, शंकर द्वीप, पुष्कर द्वीप।

8. अष्टम

1. अष्टांग - सिर, कमर, पेट, पीठ, दोनों हाथ, दोनों पैर
2. सौभाग्याष्टक - कुमकुम, लवण, कुसुम, दही, ईख, तृण, धान्य, जीरा।
3. अष्ट विवाह - ब्राहम, देव, आर्ण, प्राजन्य, असुर, गंधर्व, राक्षस, पिशाच। इनमें प्रथम चार विवाह श्रेष्ठतम है और अंतिम चार निकृष्ट विवाह माने गए हैं।
4. अष्ट सिद्धि

   अणिमा - अति सूक्ष्म रूप धारण करने की शक्ति। जिसे आंखों से ना देखा जा सके।

   महिमा - विशाल रूप धारण करने की शक्ति। शरीर को किसी भी सीमा तक बढ़ाया जा सके।

   गरिमा - स्वयं का भार पर्वत के समान करने की शक्ति ताकि कोई भी हिला ना सके।

   लघिमा - स्वयं का भार बिल्कुल हल्का करने की शक्ति ताकि पवन में उड़ने की शक्ति प्राप्त हो सके।

   प्राकाम्य - मनचाहे समय तक आकाश की ऊंचाई और पाताल की गहराई में रहने की शक्ति।

ईशित्व - देवी शक्तियां प्राप्त करने की शक्ति।
वशित्व - किसी भी प्राणी को तुरंत वश में करने की शक्ति।
प्राप्ति - पशु-पक्षी की भाषा को समझना। किसी भी वस्तु को तुरंत प्राप्त कर लेना।

5. अष्टलक्ष्मी

आदिलक्ष्मी -सुख संपदा मोक्ष देने वाली भृगु ऋषि की कन्या लक्ष्मी जी।
वरद लक्ष्मी -ब्रह्मचारिणी रूप में, ज्ञान वृद्धि के लिए कमलासन लक्ष्मीजी।
गजलक्ष्मी -गज के साथ बैठी हुई या गज पर सवार लक्ष्मी जी।
संतान लक्ष्मी -गोद में पुत्र लिए हुए संतान सुख संपदा प्रदान करने वाली लक्ष्मी।
विजयलक्ष्मी -विजय प्राप्ति के लिए हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिए हुए लक्ष्मी का रूप।
ऐश्वर्या लक्ष्मी-ऐश्वर्य, वैभव, भोग प्रदान करने वाली लक्ष्मी।
धान्यलक्ष्मी -धान्य, अनाज की वर्षा करती हुई अन्नपूर्णा रूप में लक्ष्मी।
धनलक्ष्मी -हाथ में कलश लिए हुए कर्ज मुक्ति के लिए प्रगट लक्ष्मी। भगवान वेंकटेशजी की पत्नी पद्मावती लक्ष्मी के रूप में।

6. **अष्टविनायक -** वक्रतुंड, एकदंत, महोदर, गजानन, लंबोदर, विकटमेव, विघ्नराज, धूम वर्ण।
7. **अष्ट वसु** - ऊप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।

9. नवम

1. **नवग्रह-** सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

2. नवरत्न-

1. हीरा - (वज्रमणि) चमकदार तारामंडल सदृश्य रत्न है, ग्रह स्वामी शुक्र देव हैं
2. मोती - मुक्ता चंद्रमा की तरह सफेद रत्न। ग्रह स्वामी चंद्र।
3. माणिक - माणिक्य मणि, लाल गुलाबी आभा युक्त रत्न। ग्रह स्वामी सूर्य।
4. पुखराज - पुष्य मणि/पद्म राग, पीली आभा युक्त। ग्रह स्वामी बृहस्पति।
5. मूंगा - विद्रुम-लाल आभा युक्त रत्न ग्रह स्वामी मंगल।
6. गोमेद - गोमेधिक-एक गहरे भूरे रंग का रत्न। ग्रह स्वामी राहु।
7. नीलममणि - इंद्रनील-नीली आभा युक्त रत्न। ग्रह स्वामी शनि।
8. पन्ना - मरकत-हरि आभा युक्त रत्न। ग्रह स्वामी बुध।
9. लहसुनिया - वैदूर्यमणि-पीली हरी चितकबरी आभा युक्त ग्रह स्वामी केतु।

3. नवधा भक्ति

1. श्रवण भक्ति - भगवान की कथा वार्ताओं को सुनना।
2. कीर्तन भक्ति - भगवान के गुणों का ज्ञान, गुणगान करना, नाम भजना।
3. स्मरण भक्ति - भगवान की कथाओं, चित्रों द्वारा याद करना।
4. पाद सेवन भक्ति - साधु-संतों, भगवत भक्तों की चरण सेवा करना।
5. अर्चना भक्ति - इष्ट भगवान, आराध्य देव की पूजा करना।
6. वंदना भक्ति - प्रभु की गीत/ स्तुति गान करना।
7. दास्य भक्ति - भगवान को स्वामी और स्वयं को उनका दास मान कर सेवा करने वाली भक्ति।
8. साख्य/ सखाभक्ति - भगवान को मित्रवत मानकर उनके साथ भोजन भ्रमण करने वाली भक्ति।
9. आत्म निवेदन भक्ति, स्वयं को सबसे निम्न कोटि का मानकर उनकी सेवा करना।

4. नव निधि

1. पद्म निधि - सात्विक गुणों से कमाई गई धनसंपदा।
2. महापद्म निधि - सात्विक प्रकार से प्राप्त संपदा सात पीढ़ी तक चलने वाली।
3. नील निधि - सतो, रजो गुण प्रधान निधि, केवल ब्यापार से प्राप्त।
4. मंद निधि - राजसी और तमोगुण प्रधान निधि जो साधक को दीर्घायु और दीर्घ उन्नति प्रदान करने वाली संपत्ति।
5. मुकुंद निधि - पूर्णता रजोगुण प्रधान निधि केवल राज्य भोग से प्राप्त होने वाली संपत्ति।
6. मकर निधि - अस्त्र-शस्त्र से संपन्नता प्रदान करने वाली सम्पति, मौत का कारण भी बनने वाली।
7. कलछप निधि - साधक के द्वारा छुपाकर रखी गई सम्पति या स्वयं भी उसका उपयोग ना करने वाली निधि।
8. शंख निधि - व्यक्ति की संपत्ति केवल उसी के काम आती है, उसका परिवार भी दरिद्रता में जीता है।
9. खर्व निधि - इस निधि को प्राप्त करने वाला व्यक्ति विकलांग घमंडी होता है, समय आने पर उसका धन लुट जाता है।

5. नवदुर्गा

1. शैलपुत्री - हिमालय पुत्री पार्वती, प्रथम दिन पूज्यनीय।
2. ब्रह्मचारिणी - द्वितीय दिन पूजन, ब्रह्मचारी रूप में, ज्ञान देवी।
3. चंद्रघंटा - तृतीय दिन पूजा, माथे पर चंद्र और घंटे की आकृति।
4. कुष्मांडा देवी - चौथे दिन पूज्य अन्धकारनासिनी।
5. स्कंदमाता - पंचम दिवस पूज्य पुत्र को हाथ में लिए हुए देवी स्वरूप।
6. माँ कात्यायनी देवी - छठवें दिन पूजा, स्वर्ण कांता देवी।
7. कालरात्रि देवी - सप्तम दिवस पूज्य, महाकाली का रूप।
8. महागौरी - आठवें दिन पूज्य चतुर्भुजी दुर्गा जी का स्वरूप।
9. सिद्धिदात्री देवी - नौवें दिन पूज्य देवी जी का आशीर्वाद सिद्धि स्वरूप।

10. दशम

1. दस इंद्रियां-

ज्ञानेंद्रियां - नेत्र- दृष्टि के लिए। कान- श्रवण के लिए। जिव्हा- स्वाद के लिए। नासिका - सूंघने के लिए। त्वचा-स्पर्श के लिए।
कर्म-इंद्रियां - मुख, हाथ, पैर, मलद्वार, जननद्वार।

2. दस दिशाएं एवं दिगपाल/अधिपति-

1. उत्तर दिशा - दिगपाल कुबेर जी, ग्रह स्वामी-बुध
2. दक्षिण दिशा - दिगपाल यमदेव
3. पूर्व दिशा - दिगपाल इंद्रदेव, ग्रह स्वामी-सूर्य
4. पश्चिम दिशा - दिगपाल या अधिपति वरुण देव। ग्रह स्वामी शनि
5. ईशान दिशा - उत्तर पूर्व की मध्य दिशा दिगपाल शिवजी। ग्रह स्वामी-बृहस्पति
6. आग्नेय दिशा - दक्षिण पूर्व की मध्य दिशा, दिगपाल, अग्निदेव। ग्रह स्वामी-शुक्र
7. नैऋत्य दिशा - दक्षिण पश्चिम की दिशा, दिगपाल नैऋति। ग्रह स्वामी-राहु
8. वायव्य दिशा - उत्तर पश्चिम की मध्य दिशा, दिगपाल-वायु देव

9. अधोदिशा - पृथ्वी के नीचे, दिगपाल-नागदेव
10. ऊर्ध्व दिशा - आकाश, नक्षत्र मंडल में अधिपति/दिगपाल-ब्रह्मा जी

11. एकादश

ग्यारह रुद्र- शिवपुराण में वर्णित है कि शंकर जी के ग्यारह रुद्र हैं। इन्हें रूद्रावतार भी कहते हैं:

1. नंदी वृषभ, 2. हनुमानजी, 3. भैरव, 4. अश्वत्थामा, 5. मातंग, 6. दुर्वासाजी, 7. पिपलाज, 8. धूमवन, 9. बाल भुवनेश, 10. श्री विद्येश, 11. किरात।

12. द्वादश

1. ज्योतिष की बारह राशियां

1. मेषराशि : ग्रह स्वामी-मंगल, पूज्य देव-हनुमानजी, रंग-लाल, विशेष पूज्य वस्तु-लाल पुष्प, धन लक्ष्मी की पूजा।
2. वृष राशि : ग्रह स्वामी-शुक्र, पूज्य देवता-शिव जी, शुभ रंग-सफेद, शुभ पदार्थ-दूध, शुभ फूल-बेला, चमेली, शुभ लक्ष्मी-गज लक्ष्मी पूजन।
3. मिथुन राशि : ग्रह स्वामी-बुध, पूज्य देवता-गणेश जी, गाय, शुभ रंग-हरा, प्रिय वस्तु दूर्वा, हरी घास, प्रिय पुष्प-पारिजात, लक्ष्मी पूजन-अधिलक्ष्मी।
4. कर्क राशि : ग्रह स्वामी-चंद्र, पूज्य देवता-शिवजी, शुभ रंग-सफेद, प्रिय वस्तु-दूध, शुभ पुष्प-धतूरा, बेला, लक्ष्मी स्वरुप-वीर लक्ष्मी पूजन।
5. सिंह राशि : ग्रह स्वामी-सूर्य, पूज्य देवता-सूर्य, गायत्री देवी, शुभ रंग-लाल, प्रिय वस्तु-सूर्य को अर्घ देना। प्रिय पुष्प-लाल जासौंन, लक्ष्मी स्वरुप-विजयलक्ष्मी।
6. कन्या राशि : ग्रह स्वामी-बुध, पूज्य देव-गणेश जी, प्रिय रंग-हरा, प्रिय वस्तु-गाय को हरी घास, प्रिय पुष्प अष्टांगन्धा, शुभ लक्ष्मी-धन लक्ष्मी पूजन।
7. तुला राशि : ग्रह स्वामी-शुक्र, पूज्य देवता-गणेश जी, प्रिय रंग-गुलाबी, प्रिय वस्तु-सफेद एवं मिठाई, प्रिय पुष्प-सफेद कमल, शुभ लक्ष्मी-ऐश्वर्या लक्ष्मी पूजन।
8. वृश्चिक राशि : ग्रह स्वामी-मंगल, पूज्य देवता-हनुमान जी, शिव जी, शुभ रंग-लाल, प्रिय वस्तु-लाल वस्तुएं, पुष्प-लाल पुष्प, शुभ लक्ष्मी-संतान लक्ष्मी पूजन
9. धनु राशि : ग्रह स्वामी-बृहस्पति, पूज्य देवता-विष्णु जी, प्रिय रंग-पीला, प्रिय वस्तु-पीली हल्दी, प्रिय पुष्प गेंदा, लक्ष्मी पूजन-यश लक्ष्मी।
10. मकर राशि : गृह स्वामी-शनि, पूज्य देवता-शिव जी, हनुमान जी, प्रिय रंग-नीला, प्रिय वस्तु-नीला, कालावस्त्र, प्रिय पुष्प-पलाश, लक्ष्मी पूजन-कीर्ति लक्ष्मी।
11. कुंभ राशि : ग्रह स्वामी-शनि, पूज्य देवता-हनुमान जी, शनिदेव, प्रिय रंग-नीला, काला, प्रिय वस्तुएं-शनि दर्शन, तेल का दीपक-सरसों के तेल का दीपक, प्रिय पुष्प कमल, और सिंघाड़ा, लक्ष्मी पूजन-बुद्धि लक्ष्मी।
12. मीन राशि : गृह स्वामी-बृहस्पति, पूज्य देवता-विष्णुजी, प्रिय रंग-पीला, प्रिय वस्तु-पीला मीठा, प्रिय पुष्प-पीला पुष्प, लक्ष्मी पूजन-सिद्धलक्ष्मी।

2. बारह आदित्य--

1. अंशुमान, २. आर्यमन, ३. इंद्र, ४. त्वष्टा, ५. धातु, ६. पर्जन्य, ७. पूषण, ८. भग, ९. मित्र, १०. वरुण, ११. वैवस्वत, १२. विष्णु।

3. द्वादश ज्योतिर्लिंग-

1. सोमनाथ- सौराष्ट्र गुजरात में, समुद्र किनारे।

2. नागेश्वर- गुजरात दारूकावन, गोमती नदी के किनारे।
3. महाकालेश्वर- उज्जैन मध्य प्रदेश में शिप्रा नदी के किनारे।
4. ओमकारेश्वर- मालवा, माँधाता, मध्यप्रदेश में, नर्मदा के किनारे।
5. भीमाशंकर- डाकिनी, महाराष्ट्र में, गोदावरी के किनारे।
6. मल्लिकार्जुन- श्रीशैल, आंध्रप्रदेश में कृष्णा नदी तट पर।
7. विश्वनाथ- काशी उत्तर प्रदेश में, गंगा नदी तट पर।
8. त्रंबकेश्वर- ब्रम्हगिरी पर्वत महाराष्ट्र में गोदावरी तट पर।
9. वैद्यनाथ पश्चिमी बंगाल देवघर में ताप्ती नदी तट पर।
10. केदारनाथ- उत्तराखंड में, अलकनंदा नदी तट पर।
11. रामेश्वरम तमिलनाडु में समुद्र तट पर।
12. घ्रणेश्वर महाराष्ट्र में।

13. चतुर्दशी

1. चौदह लोक-

तल, अतल, वितल, सुतल, रसातल, पाताल, भूलोक। ये सात लोक जमीन के अंदर स्थित हैं- भूलोक, स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक, यमलोक, गौलोक, ब्रह्मलोक, इंद्रलोक।

2. चौदह रत्न-

समुद्र मंथन से प्राप्त

1. अमृत कलश- अमरता के गुण वाले अमृत से भरा कलश।
2. ऐरावत हाथी- सफेद हाथी, इंद्र देवता के इंद्रलोक में।
3. कल्पवृक्ष- मन वांछित वस्तु देने वाला वृक्ष।
4. कौस्तुभ मणि- इच्छित धन संपदा प्रदान करने वाली मणि, भगवान विष्णु के मुकुट में है।
5. उच्चैश्रवा घोड़ा- सबसे तेज मन की गति के समान दौड़ने वाला घोड़ा।
6. शंख- पाञ्चजन्य शंख भगवान विष्णु की वाम भुजा में शोभित, समृद्धि दायक।
7. चंद्रमा- आकाश मंडल का सबसे चमकीला शीतल ग्रह।
8. धनुष- अजेय शक्ति का धनुष।
9. कामधेनु गाय- मन वांछित वस्तु, धनधान्य भोजन संपदा देने वाली गाय, गुरु वशिष्ट को दी गई।
10. धन्वंतरि वैद्य- देवताओं के वैद्य, आयुर्वेद के ज्ञाता।
11. रंभा अप्सरा- ब्रह्मांड की सर्व सुंदरी नर्तकी, अप्सरा कामदेव की पत्नी।
12. लक्ष्मीजी- ऐश्वर्या दायनी, विष्णुप्रिया, विष्णु भगवान की पत्नी बनी।
13. वारुणी या मदिरा- असुरों द्वारा प्राप्त कर ली गई।
14. विष/हलाहल/कालकूट- भगवान शंकर द्वारा इसे अपने कंठ में धारण किया गया, और नीलकंठ महादेव कहलाए।

14. षोडश

1. **षोडश/सोलह तिथियां-** हिंदी महीने के प्रत्येक पखवाड़े में पड़ने वाली तिथियां।

1. एकम/प्रतिपदा/परमा
2. द्वितीया-दोज
3. तृतीया-तीज
4. चतुर्थी -चौथ

5. पंचमी -पांचे
6. षष्ठ -छठ
7. सप्तमी -साते
8. अष्टमी -आंठे
9. नौमी---नमें।
10. दशमी दसे।
11. एकादशी--ग्यारस
12. द्वादशी–बारस
13. त्रयोदशी–तेरस
14. चतुर्दशी चौदस
15. अमावस्या -अमावस
16. पंचदशी पूर्णिमा

2. षोडशोपचार पूजन-

1. आव्हान और आसन, २. आचमन, ३. संकल्प, ४. स्नान, अभिषेक, ५. वस्त्र, आभूषण, उपवस्त्र, ६. चंदनम, ७. कुमकुम, ८. अक्षतम, ९. पुष्पम, १०. बिल्वपत्र दूर्वा शमीपत्र तुलसी पत्र, ११. धूपम, १२. दीपम, १३. नैवेद्यम, ऋतु फलम, १४. हवन, १५. आरती, १६. दक्षिणा।

3. **सोलह सिंगार-**सौभाग्यवती नारी के सुहाग के प्रतीक चिन्ह-
   1. बिंदी-माथे पर सजाई जाने वाली श्रंगार प्रतीक।
   2. सिंदूर-माँग में सजाया जाने वाला लाल रंग का श्रंगार चिन्ह।
   3. काजल-नेत्रों में सजाया जाने वाला वाला काले रंग का श्रंगार चिन्ह।
   4. मेहंदी महावर हाथों और पैरों में लगाई जाने वाली श्रंगार सामग्री।
   5. शादी का जोड़ा नारी के अंग में पहनी जाने वाली कलात्मक साड़ी या लहंगा चुनरी।
   6. गजरा-बालों में सजाई जाने वाली फूल मालाएं।
   7. माँग टीका या बेंदी-बालों से माथे तक लगाया जाने वाला आभूषण।
   8. नथ नाक में पहनी जाने वाली रिंग।
   9. कर्णफूल या झुमके दोनों कानों को शोभित करने वाले आभूषण।
   10. हार या गलमाला-गले में पहना जाने वाला प्रतीक आभूषण।
   11. बाजूबंद-हाथों में कोहनी के ऊपर कंधे के बीच पहने जाने वाला प्रतीक चिन्ह।
   12. कंगन या चूड़ियां हाथों की कलाई में पहने जाने वाली रिंग या आभूषण।
   13. अंगूठीयां, हथफूल अंगुलियों में पहनी जाने वाली रिंग एवं हथेली का आभूषण।
   14. करधन कमर में पहने पहने जाने वाला आभूषण।
   15. पायल-पैरों में पहनी जाने वाली चैन के समान मालाएं।
   16. बिछिया-पैरों की उंगलियों में पहनी जाने वाली रिंग अर्थात बिछिया जोड़ी।

4. सोलह संस्कार-

१. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमंत उन्नयन, ४. जातकर्म, ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकर्म, ९. कर्णवेध, १०. यज्ञोपवीत, ११. वेदारंभ, १२. केशांत, १३. समावर्तन, १४. विवाह, १५. आवश्याधाम, १६. श्रोता धाम।

5. **सोलह कलाएं-** भगवान श्री कृष्ण पूरे ब्रह्मांड में अकेले ही सोलह कलाओं में निपुण माने गए हैं यह सोलह कलाएं निम्नलिखित है-

१. अन्नमय, २. प्राणमय, ३. मनोमय, ४. विज्ञानमय, ५. आनंदमय, ६. अतिशयनी, ७. विपरिनाभिमी, ८. संक्रमिनी, ९. प्रभावी, १०. कुंथिनी, ११. विकासनी, १२. मर्यदिनी, १३. संहलीदनी, १४. आल्हादिनी, १५. परिपूर्ण, १६. स्वरूपवस्थिति।

6. चंद्रमा की सोलह कलाएं-

१. अमृता, २. मानदा ३. पूषा ४. तुष्टि ५. पुष्टि ६. रति ७. धृति ८. शशिनी ९. चंद्रिका १०. कांति ११. ज्योत्सना १२. प्रीतिरंगा १३. श्री १४. पूर्णा १५. स्वरजा १६. अमावस्या/ पूर्णिमा

15. अष्टादश

१८ पुराण- 1. गरुड़ पुराण २. भागवत पुराण ३. हरिवंश पुराण ४. भविष्य पुराण ५. लिंग पुराण ६. पद्मपुराण ७. बामनपुराण ८. कर्म पुराण ९. ब्रह्मवैवर्त पुराण १०. मत्स्य पुराण ११. स्कंद पुराण १२. ब्रह्म पुराण १३. नारद पुराण १४. कल्कि पुराण १५. अग्नि पुराण १६. शिव पुराण १७. विष्णु पुराण १८. वराह पुराण

16. सत्ताईस नक्षत्र

१. अश्विनी स्वामी -केतु, २. भारणी, स्वामी - शुक्र, ३.कृति स्वामी -सूर्य, ४. रोहिणी, स्वामी -चंद्र, ५. मृगशिरा, स्वामी -मंगल, ६. आद्रा, स्वामी -राहु, ७. पुनर्वसु, स्वामी -गुरु, ८. पुष्य, स्वामी -शनि ९. आश्लेषा, स्वामी -बुध, १०. मघा, स्वामी–केतु, ११. पूर्व फाल्गुनी, स्वामी– शुक्र, १२. उत्तराफा, ल्गुनी स्वामी सूर्य, १३. हस्त, स्वामी चंद्रमा, १४. चित्रा, स्वामी मंगल, १५. स्वाति, स्वामी राहु, १६. विशाखा, स्वामी गुरु, १७. अनुराधा, स्वामी शनि, १८. जेष्ठा, स्वामी बुध, १९. मूल, स्वामी केतु, २०. पूर्वाषाढ़ा, स्वामी शुक्र, २१. उत्तराषाढ़ा, स्वामी सूर्य, २२. श्रवण, स्वामी चंद्रमा, २३. धनिष्ठा, स्वामी मंगल, २४. शतभिषा, स्वामी राहु, २५. पूर्व-आषाढ पद, स्वामी गुरु, २६. उत्तरा भाद्रपद, स्वामी शनि, २७. रेवती, स्वामी बुध।

17. तैंतीस कोटी

1. अष्ट वसु- आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास।
2. एकादश रुद्र- ग्यारह रूद्र भगवान शिव के ग्यारह गण कहे गए हैं जिनमें नंदी, हनुमानजी भी हैं।
3. द्वादश आदित्य- अंशुमान, आर्यमन, इंद्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषण, भग, मित्र, वरुण, वैवस्वत, विष्णु।
4. इंद्र- एक देवताओं के राजा इंद्र देव हैं।
5. प्रजापति- एक--यक्ष, गंधर्व, किन्नर, नाग आदि के प्रतिनिधि देवता। इस प्रकार ब्रह्मांड में तैंतीस कोटि देवता कहे गए हैं।

18. छप्पन भोग

(अ) कच्चा भोजन

1. दाल 2. चावल 3. कढी, 4. रोटी 5. दही-बड़ा 6. मंगोड़ा 7. अचार /मुरब्बा 8. चटनी 9. दाल-बाटी 10. भरता 11. गट्टे की सब्जी 12. खीचला (चांवल पापड़)

(ब) पक्का भोजन

13. पूड़ी 14. कचौड़ी 15. मंगोड़ा 16. पापड़ दालवाला। 17. बिजोरा 18. कचरिया 19. मीठा चावल 20. पुलाव 21. सब्जी सूखी (बैंगन/कुम्हड़ा/लौकी आदि। 22. सब्जी रस वाली (सत गजरा/मिक्स) 23. रायता 24. पापड़

(स) मिठाई

25. हलवा 26. जलेबी 27. चूरमा 28. रसगुल्ला 29. लड्डू 30. पंजीरी 31. पेड़ा 32. गुजिया 33. मालपुआ 34.चंद्रकला 35. फैनी 36. सोन पापड़ी 37. मैसूर पाक

(द) नमकीन

38. स्यो-पपड़ी 39. गठिया 40. दालमोठ 41. पापड़ी 42. मठरी 43.चकली 44. खस्ता कचौड़ी 45.चूड़ा।

(इ) फलाहारी व्यंजन

46. साबूदाना की खिचड़ी 47. खीर 48. सिंघाड़े की पूरी 49. पापड़ 50. चिप्स 51. मूंगफली 52. नमकीन चूड़ा 53. मूंगफली बर्फी 54. सिंघाड़े की लपसी

(फ) पेय पदार्थ 55. शरबत/ठंडाई 56. लस्सी/फलों की

19. चौंसठ कलाएं, चौंसठ योगिनी

1. चौसठ योगिनियाँ-ये माँ दुर्गा की सहायक शक्तियां है। जो तांत्रिक पूजा के लिए विशेष महत्वपूर्ण मानी गई है। विश्व का इकलौता मंदिर जबलपुर भेड़ाघाट में सर्वप्रथम स्थापित किया गया। ये योगिनियाँ निम्नलिखित है -

   1. बहुरूपा, 2. तारा, 3. नर्मदा 4. यमुना 5. शांति 6. वारुणी 7. क्षेमकारी 8. ऐन्द्री 9. बाराही 10. रणवीरा 11. वानर मुखी 12. वैष्णवी 13. कालरात्रि 14. वैद्यरूपा 15. चर्चिका 16. बेताली 17. छिन्नमष्तिस्का 18. बृषभानना 19. ज्वालाकामिनी 20. घटवारा 21. करकाली 22. सरस्वती 23. विरूपा 24. कावेरी 25. भालूका 26. नरसिंही 27. विराजा 28. विकटानन 29. महालक्ष्मी 30. कौमारी 31. महामाया 32. रति 33. करकरी 34. सर्वश्या 35. यक्षिणी 36. विनायकी 37. विन्ध्यावालिनी 38. वीरकुमारी 39. माहेश्वरी 40. अंबिका 41. कामायनी 42. घटाबारी 43. स्तुति 44. काली 45. उमा 46. नारायणी 47. समुद्रा 48. ब्राम्ही 49. ज्वालामुखी 50. आग्नेयी 51. अदिति 52. चंद्रकांति 53. वायु वेगा 54. चामुंडा 55. मूर्ति 56. गंगा 57. धूमावती 58. गांधारी 59. सर्वमंगला 60. अजीता 61. सूर्य पुत्री 62. वायु वीणा 63. अघोरा 64. भद्रकाली

2. **चौसठ कलाये-भारतीय संस्कृति में चौसठ कलाये प्रचलित थी जो निम्नलिखित है**:

   (अ) व्यावहारिक कलाएं (44)

   1. ध्यान, प्राणायाम, आसन विधि। 2. हाथी घोड़ा रथ चलाना। 3. मिट्टी कांच के बर्तन साफ करना। 4. लकड़ी का सामान रंग रोगन। 5. धातुओं के बर्तनों की सफाई। 6. चित्र बनाना। 7. तालाब, बावड़ी बनाना। 8. घड़ी साज, मशीन सुधारना। 9. वस्त्र रंगना। 10. न्याय, काव्य, ज्योतिष सीखना। 11. नाव, रथ बनाना। 12. प्रसव विज्ञान 13. कपड़ा बुनना। 14. रत्न-परीक्षण। 15. वाद-विवाद शास्त्रार्थ। 16. रत्न, धातु बनाना। 17. आभूषण पॉलिश। 18. संगीत सामग्री बनाना। 19. वाणिज्य

व्यापार 20. दूध दुहना। 21. मक्खन बनाना। 22. कपड़े सिलना। 23. तारना। 24. घर व्यवस्थित करना 25. कपड़ा धोना। 26. केश श्रंगार। 27. मृदु भाषण, वाकपटुता। 28. बांस का सामान बनाना। 29. कांच के बर्तन बनाना। 30. बागवानी करना। 31. शस्त्र आदि निर्माण, गणितज्ञ 32. गद्दे तकिया, रजाई बनाना, 33. तेल निकालना। 34. वृक्ष पर चढ़ना। 35. बच्चों का पालन-पोषण करना। 36. खेती करना। 37. अपराधी को उचित दंड देना। 38. अनेक प्रकार के अक्षर लिखना। 39. पान सुपारी लगाना, बनाना, 40. भवन निर्माण कला। 41. मूर्ति कला। 42. शिल्प कला। 43. हस्त कौशल जादू के खेल से मनोरंजन करना 44. रंगोली, चौक, मान्डना कला।

(ब) संगीत की 7 कलाएं

1. वादन 2. नृत्य 3. आभूषण सजाना 4. हास्य, अभिनय कला 5. विविध श्रृन्गार कला 6. गायन कला 7. शतरंज, क्रीड़ा करना।

(स) आयुर्वेद की 8 कलाएं

1. आसव, शिरका अर्क बनाना। 2. शरीर से काटा सुई निकालना, नेत्र का कचरा निकालना। 3. पाचक चूर्ण बनाना। 4. औषधीय पौधे लगाना। 5. औषधिबनाना। 6. धातु विष, उप विष, के गुण दोष जानना। 7. जड़ी-बूटियो से अर्क खींचना। 8. रसायन भस्म आदि बनाना।

(द) धनुर्वेद संबंधी 5 कलाएं

1. युद्ध करना। 2. कुश्ती लड़ना 3. निशाना लगाना। 4. चक्र व्यूह-प्रवेश निर्गम रचना। 5. हाथी घोड़े लड़ाना।

-----00-----

अध्याय-8: पूजन क्रियाएँ

1. आचमन /शुचिता

आचमन विधि-कुशा या आचमनी से हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हैं - **"ओम कृष्णाय नमः। ओम नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः"।**

यह शुद्धि प्रक्रिया ही आचमन करना कहलाता है। धार्मिक दृष्टि से पवित्र वस्तु शुचि और अपवित्र वस्तु अशुचि कहलाता है। पूजन में अपवित्र या अशुचि वस्तुएं त्याज्य होती है। इसलिए शुद्ध जल से मंत्रोच्चारण के साथ शुचिता करना शुद्ध आचमन करना है। आचमनी से अपने हाथ में जल लेकर तीन बार शरीर पर छिड़कना शरीर शुद्धि या आत्मसिद्धि कहलाता है तथा जल लेते समय मंत्र का उच्चारण करना अनिवार्य होता है।

महत्ता

आचमन के माध्यम से हमारी संस्कृति में प्राचीन काल से ही मनुष्य को स्वच्छता शुचिता के संस्कार देने का पूर्ण प्रयास किया गया है। तीन बार आचमन का तात्पर्य है कि-तन मन और धन से आत्म-शुद्धि करना।

2. आव्हान करना

अपने आराध्य देव को पूजन कार्य में बुलाने अर्थात आमंत्रित करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का जाप एवं उच्चारण किया जाता है।

"आगच्छ देव देवेश तेजोराशे जगत्पते। क्रियमाणा मया पूजाम् गृहाणसुरसत्तम"।।

मंत्रोच्चारण के साथ किसी भी आराध्य देव को बुलाना निमंत्रण देना और उनको आसन देना आव्हान की प्रक्रिया है जैसे यज्ञ मंडप के छोटे से कुंड में ग्रह और नक्षत्र का आव्हान करने से उन्हें आना ही पड़ता है। हाथ में चावल जल लेकर, मंत्र जाप या श्रवण कर के, मंत्र समाप्ति होने पर ईश्वर का नाम लेकर पुनः आव्हान करें, अक्षत पूजा चौकी में एक ओर रख दिए जाते हैं।

महत्ता

आव्हान के द्वारा मनुष्य को यह समझाने का प्रयास किया गया है कि किसी भी शुभ-अशुभ कार्य में हमें, सबको सम्मान पूर्वक उनके यथोचित नाम पद के साथ बुलाना चाहिए। साथ ही बिना आमंत्रण के स्वयं भी किसी भी माँगलिक कार्य में नहीं जाना चाहिए अन्यथा तिरस्कार की संभावना रहती है।

3. वंदना

आव्हान के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर, हाथ जोड़कर, इष्ट देव का ध्यान करते हैं। उन्हें मन ही मन याद करना या स्मरण करना ही वंदना या वंदन कहलाता है। इसके लिए भी पुरोहित जी द्वारा मंत्रोच्चारण कर के अमुक देव के अनुरूप श्लोक पढ़ा जाता है। भगवान का स्मरण करके, श्लोक समाप्ति के पश्चात, उन्हें स्मरण वंदन करके, अक्षत पुष्प अर्पित करते हैं।

महत्ता

स्मरण वंदना का तात्पर्य पूज्य देव को अक्षत पुष्प अर्पित करके उनको सम्मानित करना है। इस क्रिया द्वारा यह समझाया गया है कि अपने घर आमंत्रित किए गए व्यक्ति का यथोचित संभाषण द्वारा वंदन करना चाहिए तभी हमें उसकी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

4. अभिषेक करना

भगवान की मूर्ति का विधि पूर्वक मंत्र- उच्चारण सहित प्रक्षालन या जल से स्नान कराना, अभिषेक कहलाता है। भगवान के ऊपर पूजन आरंभ होने से लेकर पूजा समाप्ति तक जलधारा का निरंतर प्रवाह यथोचित अभिषेक पात्र द्वारा करना ही अभिषेक कहलाता है। अभिषेक पात्र मिट्टी, ताम्बे या पीतल का पवित्र माना गया है।

महत्ता

भगवान का यथोचित अभिषेक का तात्पर्य शीतल जल से स्नान कराकर, देवता के क्रोध को शीतल करना है। जल के अतिरिक्त अन्य वस्तुएं-दूध का-शुभता, दही का-शीतलता, घी का स्निग्धता, शक्कर का-मधुरता, एवं शहद का पौष्टिकता हेतु अर्पण करना श्रेष्ठ और ईश कृपा का प्रतीक है।

5. अर्चना

अपने इष्ट देव या आराध्य देव का पूजन करना, अर्चना कहलाता है। गुरुद्वारा गुरु दीक्षा लेते समय जिस देवी-देवता का नाम और मंत्र कान में फूंका अर्थात सुनाया जाता है, वही आराध्य देव अथवा इष्ट देव कहलाते हैं अन्य सभी के पूजन को त्याग कर केवल उन्हीं इष्ट देव की पूजा करना ही अर्चना कहलाता है।

महत्ता

अर्चना का तात्पर्य है-जीवन में एक-ही लक्ष्य निर्धारित करके उसके लिए ही प्रयास करने से असीम, अभीष्ट, सफलता प्राप्त होती है अन्यथा चारों ओर ध्यान लगाने से व्यक्ति भ्रमित होकर, पथ से भटक जाता है। अतःअर्चना के द्वारा व्यक्ति को अपने एक इष्ट, एक लक्ष्य निर्धारित करने का संदेश दिया जाता है।

6. यज्ञ आहुति

यज्ञ में चढ़ाई गई सामग्री को अग्नि कुंड में मंत्र सहित डालने की प्रक्रिया को आहुति देना कहते हैं। अग्नि में घी, तिल, शक्कर आदि साकल्य-सामग्री को आहुतियो द्वारा सूक्ष्म रूप से विस्तृत में परिणित करने की प्रक्रिया को यज्ञ कहते हैं। प्रत्येक मंत्र के पश्चात 'स्वाहा' कहकर अग्नि में छोड़ने पर ही वह शुद्ध आहुति कहलाती है। अन्यथा वह अपूर्ण होती है और जिस देवता के लिए आहुति दी जाती है उन्हें समर्पित नहीं हो पाती है। पूर्णाहुति समस्त आहुतियां पूर्ण होने के बाद, जब अंत में संपूर्ण बची हुई हवन सामग्री को एक साथ, एक पान के पत्ते पर रखकर, अग्निकुंड में प्रमुख उपासक के हाथो से छोड़ा जाता है, तो इसे ही पूर्णाहुति कहते हैं। इसके बाद हवन कार्य संपूर् माना जाता है। अर्थात पूर्णाहुति के बाद में आहुतियां नहीं दी जाती है।

महत्ता

भारतीय संस्कृति मे आहुति एवं यज्ञाहुति देने का प्रमुख उद्देश्य है- जीवन शैली मे दिव्यता लाना और वातावरण को शुद्ध सुगंधित बनाना। शुद्ध घी और ज्वलनशील हवन-सामग्रियां प्रज्ज्वलित अग्नि मे अर्पित करने से वायुमंडल के जीवाणु और विषाणु को नष्ट होते है। प्रारंभ काल से ही हवन, प्रत्येक पूजा के बाद करना अनिवार्य माना जाता है और अग्निदेव से यह प्रार्थना की जाती है कि वे मनुष्यो को अपने समान ही तेजस्वी बनाये ताकि वे अपनी बुराईयो को अग्निकुन्ड मे भस्म करके, सुगन्धित धुये सदृश्य सदगुणो से नकारात्मक ऊर्जा को जीवन से दूर कर सके एवं जनकल्याण हेतु वायुमंडलीय विकार भी नष्ट कर सके। मनु-स्मृति मे गृहस्थ आश्रम मे प्रतिदिन जाने-अनजाने मे होने वाली भूलो के प्रायश्चित हेतु हवन श्रेष्ठ कहा गया है।

7. आरती

पूजन के उपरांत सबसे अंत में घी का दीपक जलाकर प्रभु के श्री अंगों पर ऊपर से नीचे की ओर एवं घड़ी की दिशा में घुमाते हुए आरती की जाती है वास्तव में पूजा करते समय जो कमियां या त्रुटियां रह जाती है उन्हीं को दूर करने के लिए एवं क्षमा स्वरुप आरती उतारी जाती है।

महत्ता

आरती मुख मंडल दोनों हाथों दोनों पैरों की करते हुए अंत में पूरी परिक्रमा लगाते हुए की जाती है अंत में आसमानी से तीन बार जल उतारा जाता है जिसका आशय यह होता है कि यदि मनसा वाचा कर्मणा पूजन में कोई गलती हो गई हो तो समस्त देवता मुझे क्षमा करें और इस शीतल जल से अपने क्रोध को शांत करें इस प्रकार से जल उतारने का आशय अपने आप में एक संदेश देता है और अंततः मेरी मनोकामना पूर्ण हो ऐसा कहते हुए उनसे क्षमा याचना करना चाहिए आरती करने का तात्पर्य होता है कि किसी भी व्यक्ति के हाव-भाव, व्यवहार जानने हेतु, उसके मुखमंडल से चरणो तक का अवलोकन करे। व्यक्ति को पूरी तरह से देखने परखने के लिए यह आरती का नियम रखा गया है। जिस प्रकार घी, बत्ती, दीप मिलकर, दिव्य प्रकाश उत्पन्न करते है वैसे हम दम्पत्ति भी सपरिवार मिलकर, सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाये। दोनो हाथ आरती के ऊपर घुमाकर, अपने ह्रदय और मस्तक पर लगाने का आशय यह है कि हम दीपक के गुणो को अपने मन मस्तिष्क मे धारण करे और आत्मसात करे।

8. पुष्पांजलि

पूजन समाप्ति के पश्चात, हाथ की अंजली में, पुष्प लेकर, बाएं हाथ के ऊपर दाँया हाथ रख कर, नेत्र बंद करके, मंत्रोच्चारण के साथ, जब भगवान को फूल अर्पित किए जाते हैं तो इसे ही मंत्र पुष्पांजलि कहते हैं। वेदों में ऐसी मान्यता है कि मंत्रों में ईश्वर का वास है। मंत्र पुष्पांजलि से देवता-गणों की प्रसन्नता, मंगल कृपा प्राप्त होती है। फूल भगवान को अति प्रिय होते हैं, इससे मन-वांछित फल की प्राप्ति होती है।

महत्ता

पुष्पांजलि द्वारा फूलों की तरह, एक होकर समर्पित जीवन व्यतीत करने, जन-कल्याण हेतु, अपना सर्वस्व अर्पित कर देने तथा अपने सद्गुणों की सुगंध बिखेरने की प्रेरणा मिलती है। पुष्पांजलि में दोनों हाथों को जोड़ने से मिलजुल कर कार्य करने की शक्ति का विकास होता है। साथ ही मंत्रोच्चारण के समय पंच ज्ञानेंद्रियां जागृत होने से व्यक्ति की शारीरिक मानसिक शक्तियां भी विकसित होती है। मन और हृदय शांत होने से अनुपम दिव्य शक्ति से साक्षात्कार होता है। इस प्रकार मंत्र पुष्पांजलि अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी गई है।

9. साष्टांग प्रणाम

ईश्वर को अष्ट अंगों से किया गया प्रणाम ही साष्टांग प्रणाम अथवा दंडवत प्रणाम कहलाता है। इस प्रक्रिया में शरीर को दंड की भांति जमीन पर, पेट के बल स्पर्श करके, सिर नीचा करके, दोनों नेत्र बंद करके, दोनों हाथ जोड़कर एवं दोनों पंजे टिका कर प्रणाम करते हैं अर्थात संपूर्ण शरीर द्वारा किया गया यह सर्वांग प्रणाम कहलाता है। इस प्रणाम को भी मंत्रोच्चारण के साथ किया जाना चाहिए।

महत्ता

वर्तमान युग में साष्टांग दंडवत की प्रथा प्राय: समाप्त हो गई है। आधुनिक सभ्यता के कारण वस्त्र सज्जा धूमिल होने के डर से व्यक्ति सिर्फ हाथ जोड़ कर सिर झुका लेते हैं जबकि साष्टांग प्रणाम की मुद्रा से मनुष्य के शरीर की संपूर्ण नकारात्मक ऊर्जा सिर से पैर तक भूमि से स्पर्श होने के कारण नष्ट हो जाती है।

उरसा, शिरसा दृष्टया मनसा वचसा तथा।

पदाभ्याम् कराभ्याम्, जानुभ्यामेन दृष्टान्ग लक्षणम्।

जमीन पर औंधे लेट कर, हाथ फैलाकर, अष्टांग-सिर, माथा, नासिका, मुंह, दोनों हाथ पर, दोनों पैर से, मैं आपको प्रणाम करता हूं अर्थात मन, वाणी, कर्म से, नतमस्तक हूं। इस प्रकार से साष्टांग प्रणाम भी अपने आप में भारतीय संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण है कि मनुष्य के शरीर से निकलने वाली धनात्मक ऊर्जा, पृथ्वी पर स्पर्श होने से शरीर से बाहर निकल जाती है और व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होने लगती है।

10. संकल्प

श्रद्धा विश्वास पूर्वक शुभ कार्य करने को प्रेरित अनुष्ठान को संकल्प कहते हैं। उसके बिना किसी भी कार्य का शुभारंभ नहीं होता है। कोई भी व्रत, उपवास, संध्या और समस्त धर्म अनुष्ठान संकल्प जनित होते हैं। ईश्वर के समक्ष किसी कार्य पूर्ति अथवा मनोकामना हेतु, हाथ मे कुशा, अक्षत, ग्यारह रूपये पर दो आचमनी जल लेकर, मंत्रोच्चारण के साथ, अपनी मनोवांछित शक्ति (धनराशि) द्वारा प्रतिज्ञा करना या प्रण लेना ही संकल्प कहलाता है।

महत्ता

व्यक्ति किसी भी धार्मिक अनुष्ठान लेने के पूर्वक कलश, नवग्रह, गौर-गणेश की स्थापना करता है तदोपरान्त ही संकल्प लेता है तो उक्त सभी उसके प्रत्यक्ष साक्षी, प्रतीक माने जाते है। आशय यह है कि इस क्रिया द्वारा उसमे संकल्प शक्ति का उदय होता है जो उसे जीवन पर्यन्त दृढ-शक्ति प्रदान करती है। आदर्श सत्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा मिलती है।

11. दक्षिणा

पूजन समाप्ति के पश्चात, उपासक को अपनी पूर्व-संकल्पित धनराशि व सामग्री पुरोहित /ब्राह्मण को समर्पित करना की क्रिया ही दक्षिणा देना कहलाता है। दक्षिणा के बाद दशांश राशि भी साथ मे अर्पित करना भूश्री-कहलाता है--जैसे 101, 201 या ₹ 501, दक्षिणा देने के बाद ₹ 10, ₹ 21, ₹ 51, का संकल्प भी साथ मे छुड़ाने को ही भूश्री कहते हैं।

महत्ता

धर्म शास्त्रों में दक्षिणा रहित यज्ञ को सर्वथा निष्फल बताया जाता है। ऋग्वेद के अनुसार संकल्पित दक्षिणा देने वाले साधक को अमृतत्व की प्राप्ति होती है, सुख समृद्धि, दीर्घायु प्राप्त होती है। दक्षिणा या दान प्राप्त करने का अधिकारी पुरोहित, पुजारी, ब्राम्हण या कोई भी निर्धन सुपात्र व्यक्ति (दुर्गुण रहित) जिसको उसकी अत्यन्त आवश्यकता है, वह हो सकता है। अर्थात तात्पर्य यह है कि संकल्प के अनुरूप दक्षिणा देने की क्रिया के माध्यम से व्यक्ति के मन में सत्यनिष्ठा व कर्तव्य पालन की भावना भी विकसित होती है किसी भी कार्य को करने के लिए हमें किस प्रकार से संकल्प करके उसे निभाना है इस प्रकार से संकल्प शक्ति को मजबूत करने के लिए किसी भी पूजन के समय यह प्रक्रिया अपनाई जाती है ताकि व्यक्ति उसके अनुरूप कार्य कर सकें। अतः ये मनसा, वाचा, कर्मणा कार्य करने की शक्तियाँ हैं।

12. रक्षा सूत्र बांधना

पूजन कार्य समाप्त होने के पश्चात, भगवान की कृपा दृष्टि और पुरोहित की आशीष प्राप्त करने के लिए, मंत्र उच्चारण के साथ मौली या रक्षा सूत्र बंधवाया जाता है।

येनबद्धो बलि राजा, दानवेंद्रो महाबलः। तेन त्वमनुबद्धनामि रक्षे मा चल मा चल।

अर्थात, उक्त मंत्र के साथ रक्षा सूत्र अवश्य बनवाना चाहिए। भारतीय संस्कृति में ब्राह्मण को देव-तुल्य सम्मान दिया जाता है। इसलिए उनके कर-कमलों से कलावा बँधवाना धर्म संस्कृति व जीवन की रक्षा करना है। पूजा स्थल में बांधी गई मौली वास्तव में मनुष्यों को जहाँ आपस में जोड़ने का सूत्र है, वहीं प्रेम श्रद्धा सद्भावना का प्रतीक भी है। यह सामान्यतः लाल पीले रंग का रक्षा सूत्र है, जो भगवान को स्पर्श कराकर पूर्ण पवित्रता के साथ बांधा जाता है।

महत्ता

शास्त्रों में पूजन कार्य के समय मौली बांधने का तात्पर्य- साधक की, आपत्ति-विपत्ति से रक्षा करना है। इससे त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु, महेश और त्रिदेवी-लक्ष्मीजी, पार्वतीजी और

सरस्वतीजी की कृपा प्राप्त होती है। ब्रह्मा जीकी कृपा से कीर्ति, विष्णुजी की कृपा से रक्षा, बल और शिव जी की कृपा से दुर्गुणों का नाश होता है। इसी तरह लक्ष्मी जी से धन, दुर्गा जी से शक्ति, प्रशासन क्षमता और सरस्वती जी से ज्ञान की प्राप्ति होती है। आयुर्वेदिक दृष्टि से त्रिदोष-वात, पित्त, कफ का नियंत्रण होने से स्वस्थ जीवन की प्राप्ति होती है। मौली या कलावा सुरक्षा कवच की तरह निरंतर हमारी आत्म-शक्ति में वृद्धि करती है शौच का जल लगने से, अंतिम संस्कार में जाने से अथवा जन्म मृत्यु का सूतक होने पर, हाथ में बंधा हुआ कलावाया रक्षा सूत्र अशुद्ध हो जाता है। अतः उसे बहते जल में या पीपल वृक्ष के नीचे विसर्जित कर देना चाहिए।

13. तिलक लगाना

हिंदू धर्म में तिलक धारण करना अति आवश्यक है। मस्तक पर दोनों भृकुटियों के मध्य-स्थल से ललाट की ओर, हल्दी या कुमकुम से लगाया जाने वाला प्रतीक चिन्ह तिलक कहलाता है। विभिन्न संप्रदायों में अलग-अलग प्रकार के तिलक लगाए जाते हैं। ये हमारी संस्कृति की पहचान हैं। वेदों में वर्णित है कि यजमान को पहले ब्राह्मण पुरोहित के माथे पर और ब्राह्मण को यजमान के माथे पर तिलक लगाना चाहिए। सूने माथे पूजा करना दोनों के लिए वर्जित है।

महत्ता

हिंदू संस्कृति में तिलक अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। यह ध्यानाकर्षण का प्रतीक बिंदु है। जब अनामिका उंगली से, भृकुटियों के मध्य स्पर्श करके तिलक लगाते हैं, तो ध्यान-शक्ति जागृत हो जाती है और अंतर्चक्षु खुल जाते हैं। योग शास्त्र में निरंतर ध्यान मुद्रा का अभ्यास करने से शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता बढ़ती है और तिलक उसी मुद्रा के लिए प्रतीक चिन्ह है।

14. क्षमा याचना

आराध्य देव के पूजन के उपरांत पूजन में हुई त्रुटियों के लिए, साधक द्वारा मंत्रों का उच्चारण करके, जब मस्तक जमीन पर टिका कर, दोनों हाथ बांधकर, पीठ कमर पर रखकर, पंचांग प्रणाम करते हैं तो इस प्रक्रिया को क्षमा याचना कहते हैं। इसके साथ ही मंत्र उच्चारण भी किया जाता है--

आवाहनं न जानामि, न जानामि तवार्चनं। पूजाचैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वर

अर्थात%- हे प्रभु मैं आपका आवाहन, अर्चन, पूजन आदि नहीं जानता हूं, आप कृपया मेरे अपराधों को क्षमा करें।

महत्ता

क्षमा याचना प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति बड़ों से अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगना सीखते हैं। इस प्रकार इस प्रक्रिया के द्वारा यह संदेश दिया जाता है कि किसी भी कार्य के उपरांत गलती होने, ना होने पर भी, हमें अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगना चाहिए, तभी कार्य समाप्ति करना चाहिए।

15. विसर्जन करना

किसी भी पूजन के उपरांत, विसर्जन प्रक्रिया सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि यदि यह कार्य न किया जाए तो आवाहन किए गए देवता उस स्थान पर ही रहते हैं और वे साधक को दंडित भी कर सकते हैं। इसलिए हाथ में पुष्प लेकर पुष्प अक्षत लेकर ईश्वर का ध्यान करके मंत्र पढ़ते हुए और या श्रवण करते हुए मंत्र समाप्ति पर अक्षत आराध्य देव को अर्पित कर देते हैं, यही प्रक्रिया विसर्जन कहलाती है। इसके साथ ही दोनों हाथों की उंगली एक दूसरे में फंसा कर तर्जनी उंगली से देव आसन को हिलाया जाता है तथा कलश भी खिसकाते है। येही पूजा विसर्जन कहते हैं, । पूजन हेतु बनाए गए चौक या रंगोली को चुनरी के छोर से थोड़ा सा समेटना चाहिए। तब यह पूर्ण विसर्जन कहलाता है पूजा प्रारंभ होने के बाद बिना विसर्जन किये देव आसन, कलश को अपने स्थान से नहीं हटाना चाहिए अन्यथा देव रुष्ट होकर स्वर्ग लोक वापस चले जाते हैं। पूजा के उपरांत अपना आसन छोड़ने के पहले उसके एक छोर को पलटा कर, दो आचमनी जल एवं अक्षत छोड़कर ही उठना चाहिए और प्रणाम करना चाहिए अन्यथा ऐसी मान्यता है कि पूजन का संपूर्ण पुण्य फल इंद्रदेव को प्राप्त हो जाता है।

महत्ता

विसर्जन के माध्यम से व्यक्ति को यह संदेश दिया जाता है कि किसी का आवाहन करने के पश्चात हमें सम्मान पूर्वक उसकी विदाई भी करना चाहिए तभी व्यक्ति की प्रसन्नता प्राप्त होती है। जीवन में भी व्यक्ति को इसका ध्यान रखना चाहिए कि जो व्यक्ति आता है, उसका यथोचित सम्मान करके ही उसे बिदा करना चाहिए।

16. परिक्रमा करना

पूजन की समस्त क्रियाएं समाप्त होने के बाद, हवन कुंड या मंदिर की, बाएं से दाएं ओर चलकर, चक्कर लगाने की प्रक्रिया को परिक्रमा कहते है।

परिक्रमा विधान:

शिवजी की आधी परिक्रमा लगाई जाती है क्योंकि उनकी जटाओं से गंगधार निकली है जिनको लाँघते नहीं है। गणेश जी की चार परिक्रमा, विष्णु जी की पांच परिक्रमा, देवी जी की एक या नौ परिक्रमा, हनुमान जी की 11 परिक्रमा, और तुलसी जी की 108 परिक्रमा लगाई जाती है। सामान्यतः तुलसी जी या किसी पूज्य वृक्ष की 11 परिक्रमा लगाना श्रेष्ठ माना जाता है।

महत्ता

परिक्रमा के माध्यम से व्यक्ति को यह संदेश दिया जाता है कि किसी भी कार्य को करने के पश्चात हमें उसे उसका बंधन करना चाहिए इस बंधन के माध्यम से, किए गए पूजन कार्य का फल भी हमारे जीवन से बंध जाता है। इस प्रकार से परिक्रमा के माध्यम से हमें जो सिद्धि प्राप्त हुई है वह हमारे पास आ जाती है, अतः परिक्रमा हिंदू संस्कृति में एक अनिवार्य प्रक्रिया मानी गई है।

17. प्रार्थना करना

पूजा, व्रत, अनुष्ठान की पूर्ति हेतु भगवान का पूजन यथा विधि पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। पूजा आरती के बाद अपने इष्ट देव के समक्ष, अपनी मनोकामना, आंख बंद करके, दोनों हाथ जोड़कर, निर्मल हृदय से मन ही मन कहीं या दोहराई जाती है, इस प्रक्रिया को ही प्रार्थना कहते हैं।

"मंत्रहीनं, क्रियाहीनम् भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देवा परिपूर्णम तथास्तु मे"।।

अर्थात- मेरे अंतःकरण में निवास करने वाले, परम पिता परमेश्वर, मैं मंत्रहीन, क्रियाहीनं, भक्ति हीन हूं, आपकी शरण में आया हूं, मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए।

महत्ता

श्रद्धा और प्रेम पूर्वक की गई प्रार्थना अवश्य ही फलदाई होती है। हमारी भावनाएं जितनी गहरी और सच्ची होंगी उसका परिणाम भी उतना ही श्रेष्ठ होगा। प्रार्थना से मनुष्य के कष्ट, दुख, शारीरिक व्याधि और मानसिक विकार दूर हो जाते हैं। निश्चय ही हम सद-व्यवहार और सत्कर्म युक्त हो जाते हैं। ईश प्रार्थना से मनुष्य के आत्मविश्वास, आत्मबल और आत्म ज्ञान में वृद्धि होती है मन, शांत, निर्मल और निष्कपट हो जाता है समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण की भावनाएं प्रस्फुटित होने लगती है। कभी-कभी प्रार्थना इतनी गहरी होती है कि व्यक्ति की आंखों से आंसू भी बहने लगते हैं तो यह प्रार्थना की चरम सीमा कहलाती है।

18. चरणामृत /प्रसाद लेना

भगवान के चरणों एवं अभिषेक के जल को और भोग प्रसाद को ग्रहण करने की प्रक्रिया को चरणामृत लेना या प्रसाद लेना कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि इसमें दैवीय शक्तियां समाहित हो जाती हैं, इसके अतिरिक्त इन में सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाली तुलसी के चमत्कारी गुण भी समाविष्ट हो जाते हैं। अतः प्रसाद एवं चरणामृत अवश्य लिया जाना चाहिए। इससे पूजन किए किए गए पूजन का आंशिक प्रतिफल उस व्यक्ति को भी प्राप्त हो जाता है।

महत्ता

चरणामृत या प्रसाद लेने का संदेश यह है कि-व्यक्ति को जीवन में मिल बांट कर खाना चाहिए। जात-पांत, अमीर-गरीब, भाषा, धर्म आदि का भेदभाव त्यागकर सभी व्यक्तियों को इसे प्राप्त करने का अधिकार है। तात्पर्य है कि अन्न और जल सभी के लिए मिल बांट कर लेने की वस्तुएं हैं। जिन्हें व्यक्ति को कभी भी अकेले नहीं लेना चाहिए चाहे वह भले ही हम उसे प्रकृति से प्राप्त करें या प्रसाद के रूप में धार्मिक स्थलों से लिया जाये।

-----00-----

अध्याय-9: विभिन्न देवी देवताओं का पूजन

1. श्री गणेश जी का पूजन

भगवान गणेशजी प्रथम पूज्य देवता और विघ्नहर्ता माने गए हैं।

स जयति सिंदूरवदनो, देवो यत्पाद पंकज स्मरणं।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्। ।

अर्थ:- गजबदन देवों के देव की जय हो, जिनके चरण कमल का स्मरण, संपूर्ण विघ्न समूह को, इस प्रकार नष्ट कर देता है जैसे सूर्य अंधकार राशि को नष्ट करता है।

गणपति जी के बारह नाम-

1. सुमुख 2. एकदंत 3. कपिल 4. गजकर्ण 5. लंबोदर 6. विकट 7. विघ्ननाशक 8. विनायक 9. धूमकेतु 10. गणाध्यक्ष 11. भालचंद्र 12. गजानन

गणपति जी का स्वरूप-गणेश जी का बड़ा सिर एवं सूंड बुद्धि, विवेक धैर्य व दूरदर्शिता को प्रदर्शित करता है। इनका लंबा उदर रहस्य गुप्त रखने, तथा बड़े कान चारों ओर से ज्ञान प्राप्त करने का संदेश देते हैं। इनके छोटे पैर और छोटे हाथ यह प्रेरणा देते हैं कि सफलता के कदम छोटे किंतु सधे हुए होना चाहिए।

गणेश जी का वाहन-गणेश जी का चूहा स्वच्छंदता की स्थिति में संसार और मन का प्रतीक है। मन रूपी स्वच्छंद चूहे को अपने बुद्धि-चातुर्य के पाश से वश में रखना चाहिए। संसार के सभी सुखों की प्राप्ति और ईश्वर तक पहुंचने का सुगम मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। तात्पर्य है कि मन ही मानव के बंधन और मोक्ष का कारण है अतः आत्मज्ञान से चंचलता पर लगाम लगाई जा सकती है।

पूजन सामग्री-

गणेशजी के पूजन हेतु सामान्यतः-जल, हल्दी, रोली, चावल, अक्षत काले तिल, पुष्प, दूर्वा, पंचामृत, प्रसाद, फल, मोदक बिल्वपत्र शमी पत्र इत्यादि अर्पित जाते हैं। दूर्वा उन्हें अति प्रिय है, इसके बिना गणेश जी का पूजन नहीं किया जाता है।

वर्जित सामग्री- इन्हें तुलसी पत्र व मंजरी नहीं चढाई जाती है।

2. शक्ति माँ दुर्गा का पूजन

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै य नियताः प्रणताः स्मताम। ।

अर्थ:- हे देवी आपको नमस्कार है। सबका सदैव कल्याण वाली करने वाली महादेवी आपको नमस्कार है। प्रकृति को चलाने वाली, हे सुमुखी देवी! आपको नमस्कार है।

शक्ति उपासना पर्व

माँ दुर्गा देवी सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ सत्ता हैं। शक्ति ही सृजनकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, आद्या, प्रकृति देवी हैं। माँ भगवती की उपासना का श्रेष्ठतम पर्व नवरात्रि है। यह वर्ष में दो बार दृश्य रूप में और दो बार गुप्त रूप मे आती हैं। वसंत ऋतु में वासंती नवरात्र और शरद ऋतु में शारदीय नवरात्रि पर्व मनाये जाते हैं।

महत्ता

बसंत और शरद दोनों ऋतुयें यम दृष्टा जाती है अर्थात इन ऋतु में यमराज का मुंह खुला रहने से जगत के प्राणियों के लिए कष्टप्रद, अनेक रोगों से ग्रसित होने का भय रहता है अतः पूजन, अर्चन, व्रत उपवास किया जाता है आदि शक्ति का हर रूप

वंदनीय, पूजनीय, स्मरणीय, और सुख समृद्धि, वैभव, यश, विद्या एवं धन-धान्य देने वाला है। मनुष्य में तप, संयम, त्याग, प्रेम आदि भावनाएं वर्धित होती है।

पूजा विधान-

नौ दिनों में, नव नक्षत्रों में, देवी के नौ स्वरूपों का पूजन नव निधियों को देने वाला है।

देवी जी का वाहन-

दुर्गा माँ के उपासक शक्तिशाली, मदांध शत्रुओं के दमन की आकांक्षा रखने वाले होते हैं। इसलिए उनका वाहन भी शौर्यता का प्रतीक सिंह है। जो शक्ति दायिनी माँ के अनुरूप है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देवी-देवताओं के वाहनों में उनके स्वरूप का गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। इसलिए नव देवियों के वाहन भी अलग-अलग है। अणु परमाणु में विद्यमान अधिदैवत, निराकरण शक्ति एवं तमोगुणी शक्तिवाली, प्रकृति पर नियंत्रण करने वाली शक्ति महाकाली हैं। यह त्रिगुणात्मक शक्ति कुंज के स्वरूप में धरती पर पूजनीय है। इसलिए इनका वाहन भी इन्हीं के अनुरूप शक्तिशाली है जो शौर्य, वीरता का प्रतीक माना जाता है।

नवरात्रि पूजन सामग्री और स्वरूप- नवरात्रि के नौ दिनों में देवी जी के अलग-अलग स्वरूप की, अलग-अलग तरीके से पूजा-अर्चना की जाती है। ये पूजन निम्नलिखित हैं-

1. पहला- प्रतिपदा तिथि शैलपुत्री देवी जी का प्रथम रूप शैलपुत्री है। जो पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं। वृषभ पर सवार, दाएं हाथ में त्रिशूल, बाएं हाथ में कमल है। इनको अर्पित की जाने वाली सामग्रियां- श्रंगार सामग्री, आंवला, इत्र।
2. दूसरा- ब्रह्मचारिणी देवी, नवरात्रि की द्वितीय तिथि पर ब्रह्मचारिणी देवी की पूजा की जाती है। ये ज्ञान देनेवाली, ब्रम्हचारी, ज्योतिर्मयी देवी है। दाएं हाथ में जयमाला, बाएं हाथ में कमंडल है। इन्हें बाल सजाने वाली सामग्री, कंघी, चोटी, डोरी, आदि अर्पित करें। तथा चीनी का भोग लगाएं।
3. तीसरा-चंद्रघंटा स्वरूप, तीसरे दिन इनकी पूजा होती है। शांति दायक, कल्याणकारी, माथे पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र, इनका वर्ण स्वर्ण के समान चमकीला, दस भुजाएं हैं। खंडग, बाण अस्त्र-शस्त्र, वाहन सिंह, सिंदूर, मेंहदी, दर्पण आदि अर्पित करना चाहिए। तथा दूध का भोग लगाएं।
4. चौथा स्वरूप-माँ कुष्मांडा, चौथे दिन पूजा, अंधकार नाशिनी, व्याधि मुक्ति दायिनी, लौकिक पारलौकिक सुख समृद्धि और उन्नति दात्री, मधु, लाल चंदन, सिंदूर, बेंदी, काजल आदि अर्पण करे, मालपुए का भोग लगाएं।
5. पंचम स्वरूप-माँ स्कंदमाता, पांचवें दिन चतुर्भुजी रूप में, गोद में कार्तिक भगवान स्कंद को दाईं भुजा से पकड़े हुए हैं। मयूरासन देवी, फल फूल, माला केला, गन्ना, गुड़, कमल पुष्प आदि।
6. छठवां स्वरूप-माँ कात्यायनी-स्वर्ण के समान वर्ण, चतुर्भुजी, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष दायिनी, बिल्व फल, लाल फल, लालभाजी आदि चढ़ायें। दो बेल का भोग लगायें।
7. माँ कालरात्रि सप्तम स्वरूप, श्याम वर्ण, बिखरे बाल, तीन नेत्र विद्युत सम भयानक गधा वाहिनी, दुष्ट नाशिनी, बिल्व फल शाखा रहित घर के मध्य में रखें, केला अनार, धान, हल्दी, नींबू, आदि अर्पित करें।

8. माँ महागौरी अष्टम स्वरूप-आठवें दिन पूजा गौर वर्ण, शंख, चंद्र, सम, चतुर्भुजी स्वरूप, शांत सौम्य, वृषभ वाहिनी त्रिशूल डमरू वरद मुद्रा, दर्शन एवं जागरण करें, नारियल की मिठाई का भोग लगायें।
9. नौवां स्वरूप माँ सिद्धिदात्री देवी-वाहन सिंह है। कमला सीन शंख, गदा, कमल, वरदमुद्रा, सर्व सिद्धि दायिनी है। विविध पकवानों, मिश्री, आदि का भोग लगायें। हवन पूजन करें। कुमारी भोजन कराएं। विधि विधान से विसर्जन।

पूजन सामग्री- जल, दूध, हल्दी, रोली, अक्षत, पान, सुपारी, पुष्प, जासून, बेला, कमल आदि अर्पित करें। चुनरी, सुहाग सामग्री, लॉन्ग, इलायची, फल, मिठाई, नारियल, बताशा, सुगंधित धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाना चाहिए।

वर्जित सामग्री- आक, मदार का पुष्प, दूर्वा, नहीं, चढ़ाना चाहिए।

महत्ता

वर्तमान समय में जब चारों ओर समस्याएं ही समस्याएं हैं ऐसी स्थिति में माँ शक्ति का पूजन अत्यंत लाभदायक है इन के विविध स्वरूप हमें विविध समस्याओं से मुक्ति के उपाय दर्शाते हैं। समस्त बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का पर्व है।

3. माँ लक्ष्मी जी पूजन

नमस्तेतु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते, महालक्ष्मी नमोस्तुते। ।

अर्थ:- श्री पीठ पर स्थित देवताओं द्वारा पूजित, हे महा माता आपको नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र, गदा धारण करने वाली, हे महालक्ष्मी आपको बारंबार नमस्कार है। श्री महालक्ष्मी भृगु ऋषि की बेटी हैं। देवासुर संग्राम के समय लक्ष्मी जी ने असुरों के भय से क्षीरसागर अर्थात दूध का सागर, दूध के समुद्र में जाकर शरण ले ली थी।

श्री लक्ष्मी जी के नाम-श्री लक्ष्मी जी के प्रमुख आठ एवं सोलह नाम है। अष्ट स्वरूपा और सोलह स्वरूपा कही जाती हैं। लक्ष्मी जी का अर्थ है शुभाशुभ को लक्षित अर्थात प्राप्त कराने वाली शक्ति।

1. महालक्ष्मी- जो धन प्रभु के काम आता है वह महालक्ष्मी हैं।
2. धनलक्ष्मी- परार्थ अर्थात दूसरों की सहायता पर व्यय की गई राशि।
3. अधिलक्ष्मी- नीति से कमाया गया, रीति से खर्च किया गया धन।
4. वीर लक्ष्मी- वीरता के कार्यों पर व्यय किया गया धन।
5. धान्यलक्ष्मी- अनाज धान्य पर व्यय किया जाने वाला धन।
6. ऐश्वर्य लक्ष्मी- उच्च सुख-सुविधाओं पर खर्च किया जाने वाला धन।
7. संतान लक्ष्मी- संतान पर व्यय किया जाने वाला धन।
8. वैभव लक्ष्मी- भोग विलासिता पर व्यय किया जाने वाला धन।
9. गज लक्ष्मी- हाथियों पर व्यय किया जाने वाला धन।
10. यश लक्ष्मी- यश प्राप्ति के लिए खर्च किया जाने वाला धन।
11. राजलक्ष्मी- राज्य या देश का धन।
12. विजयलक्ष्मी- विजय से प्राप्त किया हुआ धन।
13. गृह लक्ष्मी- घर की स्वामिनी एवं पत्नी के लिए व्यय किया जाने वाला धन।
14. वरद लक्ष्मी- आशीर्वाद स्वरूप दान से प्राप्त किया जाने वाला धन।
15. विद्या लक्ष्मी- विद्या से प्राप्त धन।

16. सिद्ध लक्ष्मी- पूजन से प्राप्त सिद्धि द्वारा प्राप्त किया गया धन।

लक्ष्मी प्राप्ति के सद्गुण- व्यक्ति में लक्ष्मी प्राप्ति के लिए निम्न गुणों का होना आवश्यक है:

1. जितेंद्रिय- जो इंद्रियों को जीतकर लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर हो सके।
2. सौभाग्यशाली- जो अपने भाग्य को कोसने की बजाय नया भाग्य गढ़ने में भरोसा रखें।
3. सच्चरित्र- दुर्गुणों से मुक्त सच्चा, पुरुषार्थ पर विश्वास करने वाला।
4. कर्तव्य परायण- जो बात का धनी, हर कार्य समय पर यथोचित ढंग से करता हो।
5. कृतज्ञ- जो मार्गदर्शकों, मददगारों, घर-परिवार, समाज एवं राष्ट्र का एहसानमंद हो।
6. अक्रोधी- क्रोध ना करके सकारात्मक सोच और विनम्रता से कार्य करें।
7. निर्भीक- बिना डरे जो लक्ष्य की राह में आने वाली बाधाओं का सामना करें।
8. भक्त- जो असफलता से हतोत्साहित हुए बिना भगवान की कृपा से कार्य करें।
9. सतर्क- जो हर पल लक्ष्य के प्रति सचेत होकर कार्य क्षेत्र की घटना पर ध्यान दे।
10. पराक्रमी- जो जुझारू कार्य पूरा किए बिना चैन ना लेने वाला धारा के विपरीत बहने की सामर्थ रखता हो।

लक्ष्मी जी का वाहन- आध्यात्मिक दृष्टि से लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू है जो दूरदर्शिता और दिवान्धता (दिन में दिखाई नहीं देना) का प्रतीक है अर्थात धन दौलत में लिप्त, मदांध होकर ज्ञान का कार्य करने वाला ज्ञान रूपी दर्शन नहीं कर सकता।

लक्ष्मी स्वरूप का आगमन-गरुण अथवा गज पर सवार होकर आना शुभ लक्ष्मी का प्रतीक है। उल्लू पर सवार लक्ष्मी का आना अलौकिक तरीकों से धन प्राप्ति करना है।

माँ लक्ष्मी के प्रतीक

1. **गरुड़-** यह सत्कर्म, परिश्रम, बुद्धि व तत्परता का प्रतीक है।
2. **हाथी-** यह बल ऐश्वर्य एवं विजय श्री का प्रतीक है।
3. **कुंभ/कलश-** यह अक्षय धन का कलश अर्थात कुंभ पूर्णता का प्रतीक है।
4. **कमल-** यह शोभा सौंदर्य और समृद्धि का प्रतीक है।
5. **उल्लू-** यह चंचलता, स्फूर्ति, लक्ष्य प्राप्ति, दूरदर्शिता का प्रतीक है।
6. **ईख-** यह मधुरता, समृद्धि की फसल है, अर्थात् मन कर्म वचन में मधुरता का प्रतीक।
7. **श्रीयंत्र-** लक्ष्मी का प्रत्यक्ष स्वरूप, रेखा यंत्र और प्रतीकों के माध्यम से समृद्धि प्राप्ति है।
8. **रात्रि-** यह रात्रि जागरण कर प्रतीक्षा, सजगता का प्रतीक है।
9. **मिट्टी का दीपक-** यह कण कण में ब्याप्त परमात्मा की अनुभूति और नश्वरता का प्रतीक है।

लक्ष्मी का निवास- "कराग्रे वसते लक्ष्मी" अर्थात लक्ष्मी का वास हाथ के अग्रभाग अंगुलियों में है। परिश्रमी स्वावलंबी व्यक्ति लक्ष्मी विहीन भी नहीं होता है। लक्ष्मी सामर्थवान चंचला है, इसलिए साथ में सरस्वती जी का पूजन विवेक और विनय दृष्टि प्रदान करता है। लक्ष्मी सागर पुत्री है और चौदह रत्नों में से एक है। इनके पूजन के साथ गणेश

जी का पूजन करना अधिक उचित माना गया है ताकि लक्ष्मी का प्रयोग बुद्धि के साथ किया जाए।

लक्ष्मी आराधना, कनकधारा स्त्रोत, आदित्य हृदय स्त्रोत, श्री सुक्तम स्त्रोत का वाचन लक्ष्मी प्राप्ति के आवश्यक और अचूक उपाय हैं।

लक्ष्मी पूजन सामग्री- हल्दी, रोली, चावल, कपूर, नारियल, मेवा, फूल, गुलाब, गेंदा, कमल, मधुमालती, सुपारी, गुड, धना, बताशा, फल, मीठा, लौंग, इलाइची, केसर, कुमकुम, सौभाग्य-सामग्री, केला, लाई, कमल, हवन सामग्री, कमलगट्टे की माला, वस्त्र, 2 मीटर-लाल, सफेद कपड़े, सोने, चांदी के सिक्के बही खाते, सिक्कों की लाल थैली, लेखनी, स्याही-दाबात, मिट्टी, आटे के दिए, जल, लक्ष्मी-गणेश की प्रतिमा।

सर्वाधिक शुभ- कमल, अनार, कमलगट्टा, जटामाँसी, मजीठा, गुड-धना।

लक्ष्मी जी को वर्जित सामग्री- चावल चढ़ाना, शंख बजाना, घंटा ध्वनि, और तीव्र ध्वनि वादन। शंख लक्ष्मी जी का भाई है, इसलिए नहीं बचाते हैं। किन्तु पूजन में रखते हैं।

लक्ष्मी पूजन के दिवस- सामान्यतः लक्ष्मी पूजन दीपावली की अमावस्या, शुक्रवार और गुरुवार एकादशी को किया जाता है। अमावस्या को दीपावली पूजन करने का प्रमुख आशय यह है कि अंधकार से प्रकाश की ओर चंद रश्मि अग्रसर होती है। सूर्य और चंद्रमा सन्निधि (चंद्रमा के बाद सूर्योदय होना) में आ जाते हैं अर्थात अंधकार का अंत हो कर प्रकाश का प्रारंभ होता है। यही कारण है की अमावस्या का दिन ही लक्ष्मी पूजन के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

4. भगवान शंकर का पूजन

गिरीशम्, गणेशम् गले नील वर्णम्, गजेंद्राधिरूढम् गणा तीत रूपम्।
भवम् भास्करम्, भस्मनाम भूषितांग भवानी कलत्रं भजे पंच वक्त्रम्। ।

अर्थ:- जो कैलाश नाथ है, गणनाथ है, नीलकंठ है, वृषभ पर बैठे हैं, अगणित रूप वाले हैं, संसार के आदिकारण है, प्रकाश स्वरूप है, शरीर में भस्म रमाए हुए हैं और माँ शक्ति जगत जननी जिनकी अर्धांगिनी है। उन पंचमुख महादेव और विश्वनाथ का मैं स्मरण करता हूं।

भगवान शिव के नाम

1. **नीलकंठ-** भगवान शिव को नीलकंठ कहा जाता है समुद्र मंथन से निकले हुए विष को कंठ में धारण करने के कारण इन्हें नीलकंठ कहा गया है।
2. **पशुपतिनाथ-** मन की उदासी, अज्ञानता और पशुत का नाश करने वाले हैं। इसलिए इन्हें पशुपतिनाथ कहते हैं।
3. **पंचानन-** अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश इन पांच तत्व रूपी पांच मुख हैं, इसलिए इन्हें पंचानन कहते हैं।
4. **आशुतोष-** तत्काल प्रसन्न होकर मनचाहा वर देने वाले हैं दरिद्रता के नाशक हैं।
5. **औढरदानी-** भूल से, अनजाने में भी यदि शिव पूजा प्रदोष काल में की जाये तो मनचाहा फल देने वाले हैं।

भगवान शिव का निवास स्थान-उत्तर दिशा में कैलाश पर्वत पर शिव जी निवास करते हैं। सृष्टि के आदि, अंतऔर संहार करता हैं। यही कारण है की घर की उत्तर दिशा को पवित्र और खाली छोड़ना चाहिए तथा यहां पानी का स्थान होना चाहिए ताकि घर मे सुख शान्ति, शीतलता का प्रवाह होता रहे।

शिवजी का पूजन- महाशिवरात्रि का दिन शिव पूजन के लिए सर्वश्रेष्ठ है। प्रदोष काल में रात्रि जागरण कर, पूजन हवन करने से दरिद्रता का नाश होता है। फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी चतुर्दशी तक रखने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। भगवान शिव की पूजा, ज्योतिष शास्त्र में वर्णित दिवसों में ही की जाती है। प्रत्येक मास की त्रयोदशी- कृष्ण व शुक्ल पक्ष में सायं काल, प्रदोष समय में शंकर जी का पूजन विशेष कल्याणकारी होता है। 'ओम नमः शिवाय 'इस पंचाक्षर मंत्र को जपने से सर्व सुखों की प्राप्ति होती है ये अष्ट दरिद्रता का नाश करने वाले हैं। विवाह में विलंब, दांपत्य जीवन में अशांति से होने वाली समस्याओं के लिए महाशिवरात्रि व्रत पूजन और रात्रि जागरण करना चाहिए।

शिव जी का वाहन-वृष राज नंदीश्वर धर्म का प्रतीक है। नंदी का सफेद रंग सात्विकता और सतो गुण का बोधक है और नंदी के चार पैर धर्म के चार स्तंभ दया, दान, तप और शौच है। इनका पालन करने से शिव लोक की प्राप्ति की जा सकती है।

महत्ता

शिवजी सृष्टि के आदि और अंत हैं वास्तुशास्त्र में शिवजी को अत्यंत शुभ माना गया है। शिवजी सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्तर दिशा के स्वामी हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी होने के कारण सूर्य परिक्रमा करते समय न 23 अंश का कोण बनाती है जो समावस्था में रहता है। पृथ्वी की धुरी का यह सिद्धान्त समानांतर तरंग सिद्धांत कहलाता है पृथ्वी का झुकाव उत्तर दिशा में होने से पर्याप्त खगोलीय ऊर्जा प्राप्त होती है इसलिए इस उत्तर दिशा में जल व्यवस्था अथवा शिवजी का स्थान बनाना लाभकारी होता है इसी झुकाव के कारण दिन-रात और ऋतु परिवर्तन होते हैं। यही कारण है कि उत्तर दिशा के स्वामी शिवजी कल्याणकारी, सृष्टि के संतुलन कर्ता, ज्योति स्वरूप माने गए हैं।

पूजन सामग्री- जल, पंचामृत, दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, आक अर्थात अकौआ के पुष्प, धतूरे के पुष्प, बेलपत्र, अक्षत, चंदन, नैवेद्य फल, शमी पत्र, भांग, पान, सुपारी, धतूरा, जनेऊ, गुलाल/अभीर, काले तिल।

वर्जित सामग्री- केतकी, कुंद, जासोन का पुष्प, तुलसी, हल्दी, रोली या कुमकुम भगवान शंकर को नहीं चढ़ाया जाता।

5. माँ सरस्वती का पूजन

माँ सरस्वती विद्या की देवी और और ज्ञान का भंडार स्वरूप मानी गई है। हिंदू संस्कृति में सरस्वती की पूजा प्रत्येक शुभ कार्य के पहले की जाती है।

या कुंदेन्दु तुषार हार धवला, या शुभ्रवस्त्रा व्रता।
या वीणा वर दंड मंडितकरा, या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभ्रतिभिर्देवै सदा वंदिता।
सा माँ पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा। ।

अर्थ:- जो कुंद के फूल, चंद्रमा, बर्फ के समान श्वेत हैं। जो श्वेत वस्त्र पहनती हैं। जिनके हाथ में वीणा सुशोभित है। जो श्वेत कमल पर विराजमान है। ब्रह्मा, विष्णु, और महेश आदि समस्त देवता जिनकी वंदना करते हैं। जो सब प्रकार की जड़ता को हरनेवाली हैं वह भगवती, सरस्वती, मेरा भी पालन करें।

सरस्वती जी का वाहन- सरस्वती जी का वाहन पक्षियों में श्रेष्ठ पूज्यनीय हंस है। विवेक रूपी मोती नीर, क्षीर सागर से चुनना, उसकी विशेषता है। विवेक, बुद्धि से ही विद्या की प्राप्ति संभव है। इसीलिये सतोगुण शक्ति का पुंज, महा सरस्वती जी का वाहन भी सात्विक प्रवृत्तियों से युक्त है।

महत्ता

दीपावली पर माँ लक्ष्मी के साथ में ज्ञान की देवी सरस्वती का पूजन भी किया जाता है। जो कि कलम और पुस्तक का पूजन है। लक्ष्मी के पास यथार्थ धन सामर्थ है। तो सरस्वती जी के पास उसे संभालने की दृष्टि है। वित्त या धन विद्या के बगैर पंगु है। शिक्षा, कला व विशिष्ट कला कौशल सरस्वती जी के ही स्वरुप हैं। विशिष्ट ज्ञान के साथ ही समृद्धि संभव है। अतः प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारंभ दीप प्रज्वलित करके किया जाता है। जिसका आशय यह है कि उच्चतम सफलताएं हस्तगत करने के लिए हमें स्वयं दीपक की तरह जलकर कष्ट सहकर संसार को प्रकाशित करना होगा। दीपक ज्ञान और प्रकाश का स्तंभ है। अज्ञानता अंधकार कितना ही सघन क्यों ना हो नन्ना दीपक उसे हमेशा चुनौती देता है। बिना कलम स्याही के उसके अर्थात लेखा-जोखा के कार्य संपूर्ण नहीं किए जा सकते अतः सरस्वती जी लेखा-जोखा की समृद्धि दायिनी देवी हैं।

सरस्वती जी के स्वरूप- अध्ययन सामग्री- कलम, कॉपी, किताबें, स्टेशनरी सामग्री, धार्मिक पुस्तकें, वेद, पुराण, ग्रंथ आदि। संगीत सामग्री जैसे हारमोनियम, तबला, गायकवादन। आधुनिक अध्ययन सामग्री-कम्प्यूटर, फोटो कापी मशीन, मोबाइल, नेट।

सरस्वती का पूजन दिवस- बसंत पंचमी- सरस्वतीजी का प्राकट्य-उत्सव, अर्थात सरस्वती जी जन्मदिवस मनाया जाता है। किसी भी माँगलिक कार्य के शुभारंभ से पूर्व, माँ सरस्वती जी का पूजन किया जाता है।

पूजन सामग्री- जल, हल्दी, रोली चावल, पीले पुष्प, मिठाई, फूल माला, पान, सुपारी, फूल माला।

वर्जित सामग्री- काले तिल, काली वस्तुएं, काले वस्त्र, सरस्वती जी को अर्पित नहीं किए जाते हैं क्योकि काला रंग अंधकार का प्रतीक है।

पूजन विधान- सर्वप्रथम देवी प्रतिमा को शुद्ध जल से अभिषेक करें। फिर हल्दी, रोली, अक्षत, पुष्प, अर्पित करें, वस्त्र, फूल, माला, से श्रंगार करके धूप, दीप जलाना चाहिए। सरस्वती माता को श्वेत वस्त्र अर्पण किए जाते है। पीले, सफेद पुष्पों की माला अर्पित करके पीली, सफेद मिठाई का भोग रखें।

पूजा की महत्ता

कला की देवी के हाथों में वीणा और माला दोनों ही इस बात का प्रतीक है कि साधना तथा अभ्यास के बिना कोई भी ज्ञान, कौशल कार्य संभव नहीं है। बिना पुस्तकों के ज्ञान संभव नहीं है। संसार मे अच्छी बुरी दोंनों प्रकार की वस्तुऐं हैं हमें हंस की तरह ही मोती अर्थात श्रेष्ठ चीजें ही चुनना है।

6. तांत्रिक पूजन

तांत्रिक पूजा क्या है- अमावस्या की काली अंधेरी रात में तांत्रिकों द्वारा कुछ विशिष्ट वस्तुओं द्वारा, विशिष्ट प्रकार से, तंत्रों-मंत्रों का प्रयोग करके, वस्तुओं-आत्माओं को जागृत करके कार्य सिद्धि की जाती है। यद्यपि तंत्र क्रिया या तंत्र शास्त्र प्रायः

जनकल्याण के लिए प्रयुक्त कया जाता है-जैसे भूत-प्रेत, दुष्ट आत्माओं से मुक्ति या बाधा दूर करने के लिए, गड़ा धन प्राप्त करने के लिए ही प्रयुक्त किया जाता है किंतु कई लोग अपने दुश्मनों से बदला लेने, भाई बंधुओं से बदला लेने के लिए भी इस तंत्र ज्ञान प्रक्रिया का दुरुपयोग करते हैं स्मरण रहे कि इनका उल्टा प्रभाव भी साधक या पूजन करने वाले व्यक्ति पर पड़ता है ऐसी मान्यताएं हमारे ग्रंथों में दी गई है। दीपावली, हरियाली अमावस्या की अर्धरात्रि को तंत्र साधना के प्रमुख प्रभावी पर्व माना गया है इन दिनों तांत्रिक काली रात में ही श्मशान के एकांत में, नदी किनारे सिद्धि प्राप्त करने के लिए अनुष्ठान करते हैं। इस तंत्र प्रक्रिया को वशीकरण कहते हैं।

कारण व महत्ता

प्राचीन काल में तांत्रिक पूजा बलशाली दैत्यों को मारकर प्रजा की भलाई करने के लिए की जाती थी- वर्तमान समय में इस तंत्र विद्या के अधूरे ज्ञान से लोगों को भ्रमित, भयभीत करके साधक कई अमानवीय कृत्य करके हजारों रुपए ऐंठ लेते हैं उसमें सत्यता का अंश कितना है यह कहना कठिन है। सामान्यतः महिलाएं एवं समस्या ग्रस्त व्यक्ति इन साधकों के बहकावे में आकर, अपनी संपत्ति और संतान से भी हाथ धो बैठते हैं। महिलाएं वासना का शिकार बन जाती है। आज की पीढ़ी को ऐसी भ्रामक साधना से बचाने के उद्देश्य से ही तंत्र साधना की कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से अवगत कराया जा रहा है ताकि अपने जीवन काल में बिना सोचे समझे इस प्रकार के पूजन में न पड़े साथ ही स्वयं को इसके अनिष्ट कारी प्रभाव से बचाने के सुरक्षात्मक उपाय अपनाएं।

1. **वशीकरण-** किसी को भी वश में करने के लिए तांत्रिक, दीपावली के दिन मोहिनी नामक जड़ी-बूटी, उल्लू की हड्डी को पीसकर उसे तांत्रिक मंत्रों द्वारा सिद्ध करके इसका प्रयोग करते हैं। इसे खाने वाले की बुद्धि भी उल्लू के समान हो जाती है फिर उससे कोई भी अहितकर कार्य कराया जा सकता है। ऐसी मान्यताएं प्रचलित है।
2. **मारण-** यह क्रिया श्मशान घाट में बैठकर की जाती है। इसके लिए मुर्गे की बलि दी जाती है फिर मृत-आत्मा को जागृत करके, शत्रु व्यक्तियों को मृत्यु तुल्य कष्ट दिया जाता है इसमे सात प्रकार के अनाज, साबुत नारियल, हरे नींबू, सात प्रकार के तेल, काली तिल, काली उड़द की आहुति देकर तांत्रिक द्वारा तंत्र एवं शाबर मंत्रों द्वारा, दीपक को जागृत किया जाता है ऐसी धारणा है कि जागृत होने के बाद दीपक स्वयं उड़कर किसी व्यक्ति के द्वार पर जाकर, परिवार या परिचित व्यक्ति की आवाज में द्वार खोलने का आग्रह करता है, व्यक्ति जैसे ही द्वार खोलता है यह मूठ या दीपक उसके सिर पर पूरे वेग से टकराकर बुझ जाता है। दीपक के बुझते ही व्यक्ति घटनास्थल पर ही दम तोड़ देता है यह एक अत्यंत विनाशकारी प्रक्रिया है। जिससे हमेशा सावधान रहने की आवश्यकता है। तात्पर्य है कि रात्रि के समय अचानक किसी परिचित की आवाज सुनकर भी द्वार नहीं खोलना चाहिए जब तक की पूरी तरह से यह निश्चित न कर लिया जाए कि आगंतुक कौन है? मान्यता है कि माँ दुर्गा, महाकाली या हनुमान जी का स्मरण, जयकारा करके द्वार खोलने से तांत्रिक शक्तियाँ लौटकर तांत्रिक व साधक पर ही उल्टा प्रहार कर देती हैं।
3. **उच्चाटन-** उच्चाटन का अर्थ है उचट जाना, शहर छोड़ देना, मति भंग होना आदि। यह क्रिया भी अंधेरी रात में लाल वस्त्र पहनकर की जाती है। इसमें नारियल, उड़द, काले

तिल, लोहा की भस्म की आहुति देकर कुम्हड़े पर लाल सिंदूर लगाकर उसके सामने ही तंत्र, साधना मंत्र और शाबर मंत्र आदि पढ़े जाते हैं। फिर कुम्हड़े के जागृत होते ही उसे पटक कर टुकड़े किए जाते हैं और उसे संबंधित व्यक्ति के सामने या घर में फेंकने से ऐसी स्थितियां निर्मित हो जाती है कि वह व्यक्ति शहर छोड़कर भागने पर विवश हो जाता है। अतःइसका तात्पर्य है कि हमें इस प्रकार की क्रियाओं से बचने का प्रयास करना चाहिए। अर्धरात्रि के बाद कहीं भी जाने से बचना चाहिए।

4. **हत्था जोड़ी-** इनके पूजन से शत्रु विनाश छोड़कर मित्रवत बनकर, हाथ जोड़ लेता है अर्थात हत्था जोड़ी के दोनों तरह के प्रयोग होते हैं। यह शुभ कार्यों के लिए भी प्रयुक्त होती है और तांत्रिक क्रिया के लिए भी प्रयोग किया जाता है यह दो हाथों की आकृति की का प्रतीक चिन्ह होता है यह जागी नामक वृक्ष की छाल से बना हुआ होता है जिसे तांत्रिक अपनी पूजा के लिए ले आते हैं।
5. **उल्लू-** उल्लू को सिंदूर चढ़ाकर, मंत्रों से जागृत करके, गड़े धन या व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए भी इसका पूजन किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत भी कुछ ऐसी अभिमंत्रित सामग्री व्यक्ति को खाने के लिए दी जाती है जिनको खाने के बाद ही उसका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। इसलिए कभी भी किसी अपरिचित व्यक्ति के द्वारा इस प्रकार की वस्तुएं लेने से बचना चाहिए। सामान्यतः ये वस्तुये पान, लोंग, इलाइची इत्यादि में अभिमंत्रित करके दी जाती है।

7. **नींबू मिर्च-** नींबू और मिर्च देवी जी, भैरव जी एवं शनि देव जी को अर्पित करके, अभिमंत्रित करके द्वार पर टांगा जाता है। बुरी नजर, बुरी दृष्टि से बचने के लिए प्रायः निवास स्थान और व्यापार, उद्योग प्रतिष्ठानों में यह टांगे जाते हैं। ध्यान रहे कि यह कभी भी उत्तर, पूर्व की दिशा में नहीं टांगे जाना चाहिए। इन्हें दक्षिण, आग्नेय दिशा में लगाना चाहिए। निर्धारित अवधि के पश्चात यह सड़क पर चौराहो पर फेंक दिए जाते हैं और इन्हें पलट कर नहीं देखते हैं। ऐसी सामग्रियों को जो भी व्यक्ति इन पर ठोकर मारते हैं तो ये पलट कर उसी व्यक्ति पर प्रहार करते हैं ऐसी मान्यता प्रचलित हैं। अतः विनती है कि कभी भी, भूल से भी यदि इन्हें पैर लग जाए या ठोकर लग जाए तो व्यक्ति को तुरंत आकर स्नान करना चाहिए और हनुमान जी देवी जी शंकर जी और शनिदेव के मंदिर मे तेल का दीपक रखना चाहिए।

8. हनुमत पूजन

अतुलित बल धामं, हेम शैलाभ देहं।
दनुज वन कृशानुं, ज्ञानी नामाँग्रगण्यं।
सकल गुण निधानं, वानराणांधीशं।
रघुपति प्रिय भक्तं, वातजातं नमामि। ।

पूजन विधान-

भक्त शिरोमणि हनुमान जी भगवान श्रीराम के परम भक्त हैं उनकी पूजा मंगलवार, शनिवार को विशेष रूप से की जाती है। प्रतिदिन हनुमान चालीसा, बजरंग बाण और सुंदरकांड का पाठ करने से मात्र सौ दिनों में फलदाई परिणाम देखने मिलते हैं। मंगलवार

को सिंदूर चढ़ाना शनिवार को पीपल वृक्ष में जल दूध चढ़ाकर, तेल का दीपक रखना संकट मोचन हनुमान जी की कृपा दृष्टि हेतु विशेष प्रभावकारी कार्य माने गये हैं।

पूजन सामग्री- जल, दूध, अक्षत, चना-दाल, भुँजे-चने, गुड़, चंदन, सिंदूर, धूप-दीप, तेल-चमेली शमी पत्र, लड्डू, बड़ के पत्ते।

महत्ता

रामायण में वर्णित है कि- भगवान श्रीराम और माता सीता से हनुमानजी को पृथ्वी लोक पर ही वास करने का वरदान मिला है। जहां-जहां राम कथा होती है वहां-वहाँ अप्रत्यक्ष रूप से, जीव, जंतु, मनुष्य अथवा पूजन सामग्री रूप में भी उनका आसन अवश्य होता है। इसलिए कथावाचक को मध्य में रामकथा छोड़कर आसन-त्याग नहीं करना चाहिए। अन्यथा उनका कोप-भाजन बनकर, अनिष्ट कारी परिणाम भोगने पड़ सकते हैं। हनुमान जी की पूजा, मनुष्य के सद्चरित्र निर्माण में भी सहायक है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि मनुष्य के मन में यह धारणा हमेशा बनी रहती है कि व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसे देखने के लिए रामभक्त हनुमान जी हमेशा मनुष्य के आसपास होते हैं। रामकथा के प्रसार से, भाई, पति, पत्नी, पुत्र सेवक और मनुष्य के आदर्श स्वरूप की शिक्षा भी मिलती है।

8. गुरुदेव पूजन

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरु साक्षात परम ब्रम्ह तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थ:- गुरू ही ब्रम्हा हैं, गुरू ही विष्णु हैं, गुरु ही देवों के देव महेश्वर हैं। गुरु ही परम शक्तिमान साक्षात देवता हैं, इसलिए ऐसे गुरु को नमस्कार है।

पूजन विधान- गुरुदेव पूजन प्रत्यक्ष होने के कारण श्रेष्ठतम माना गया है। अपनी सामर्थ्य अनुसार उनके चरण प्रक्षालन कर के, आसन पर बैठाकर, यथाविधि गुरु का पूजन-अर्चन करके, नैवेद्य एवं उपहार देना ही गुरु पूजन कहलाता है। सामान्यतः किसी भी पूजन कार्य को संपन्न कराने वाले ब्राम्हण का पूजन भी, सर्वप्रथम किया जाता है, किन्तु गुरु-मंत्र दीक्षा देने वाले विद्वान ब्राम्हण पुरुष को ही गुरु कहते हैं, ऐसा वेद पुराणों में वर्णित है। बिना दीक्षा के किसी भी पूजन अनुष्ठान का पुण्य प्राप्त नहीं होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर, गुरु अवश्य बनाना चाहिए। तभी समस्त संस्कार विशेषता अग्नि-संस्कार जैसे महान कार्य के अधिकारी होते हैं। अन्यथा तब माता-पिता परिवार जनों के लिए किया गया दान पुण्य भी व्यर्थ हो जाता है। मनुष्य जीवन में माता पिता के उपरांत गुरु का स्थान सर्वोपरि है। अदीक्षित व्यक्ति द्वारा किया गया दान पुण्य चांडाल को प्राप्त होता है, जिससे पैशाचीय प्रवृत्तियां मनुष्य पर हावी हो जाती हैं, व्यक्ति अपने पूर्वजों को पिंडदान भी नहीं कर सकता है।

पूजन सामग्री- जल, रोली, चंदन, अक्षत, धूप दीप, नैवेद्य, वस्त्र, नारियल, पात्र दान, मुद्रा दान, आवश्यक है। गुरु-पत्नी हेतु साड़ी, श्रृंगार सामग्री, पीली वस्तुएं-चना दाल, बेसन के लड्डू केला, आम विशेष रूप से गुरु को अर्पण किए जाने चाहिए क्योंकि गुरु साक्षात विष्णु का स्वरूप माने जाते हैं।

गुरु पूजन- गुरुदेव के चरण शुद्ध जल, तीर्थ जल अथवा गंगाजल, नर्मदा जल से पाद प्रक्षालन मंत्रोच्चारण के साथ करके उन्हें उचित आसन पर बैठाना चाहिए फिर उनका हल्दी, रोली, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप आदि से पूजन करना चाहिए। दोनों हाथों से, पैरों के अंगूठे अवश्य स्पर्श करना चाहिये।

महत्ता-

गुरुदेव मे भगवान विष्णु का वास है। अतः उन्हें प्रत्यक्ष भूमिदेव कहते हैं किंतु गुरु सुपात्र ज्ञानी, एवं गृहस्थाश्रम का होना चाहिए। गुरु दक्षिणा देकर ही उन्हें अपना गुरू मानना चाहिए। अपने जीवन काल में अनेक गुरु बनाए जा सकते हैं किंतु दीक्षा एक ही गुरु की ली जाना चाहिए। हिंदू संस्कृति में चौबीस गुरु कहे गए हैं। प्रथम गुरु माँ है इसके बाद पिता, शिक्षा देने वाले, संगीत कला में निपुण करने वाले, योग व्यायाम शिक्षा देने वाले, ज्योतिषी आदि विद्वान, जीवन उपयोगी शिक्षा देने वाले परिजन, नदी, पर्वत, वृक्ष, जीव-जंतुओं को भी गुरु की श्रेणी में रखा गया है। संघर्ष में मानव की रक्षा करनेवाले, यथोचित मार्गदर्शक गुरूदेव सदैव ही वंदनीय हैं।

कुलदेवता या देवी का पूजन

पूजन विधान- प्रत्येक परिवार में भगवान के अतिरिक्त निराकार स्वरूप वाले कुल देवता का पूजन भी होता है जिन्हें कुल देवाधि पति कहते हैं। ये वास्तव में वंश परंपरा के मूलाधार और आरंभिक देव हैं, जिनका पूजन केवल परिवार के सदस्यों द्वारा ही किया जाता है यहां तक कि परिवार की कन्याओं को भी पूजन का अधिकार प्राप्त नहीं होता है। परिवार का अग्रज व्यक्ति एवं अग्रज महिला को पूजा-प्रधान (मेहर/मेहरन) बनाया जाता है। उनकी मृत्यु के उपरांत यह पद अग्रज पुत्र या लघु भ्राता को दिया जाता है। मंझले एवं संझले पुत्रों को प्रमुख पूजन का अधिकार नहीं किया जाता है क्योंकि यह पूजन वास्तव में वंश वृद्धि बेल पूजन है और इनके आगे और पीछे दोनों ओर वंश पात्र होने से वंश के मध्य भाग हैं जो परिवार के आधार तो हैं किंतु वंश वृद्धि बेल के आदि और अंत के प्रतीक नहीं हैं इसीलिए पूजन के प्रवर्तक पद से वंचित रखा जाता है। यह पूजन सामान्यतः पूजन चौकी या पटा आदि पर कुलदेव की आकृति अंकित नये श्वेत वस्त्र को बिछाकर आव्हान करके किया जाता है।

पूजन सामग्री- प्रत्येक परिवार की पूजन सामग्री पृथक-पृथक होती है। अतः कुल की परम्परा के अनुरूप सामान्यतः पवित्र जल दूध चंदन हल्दी नारियल नए श्वेत वस्त्र रजत तांबे या पीतल पात्र पत्र पुष्प प्रसाद सामग्री आदि।

महत्ता:

कुल देवता का पूजन परिवार को जोड़ने वाली श्रंखला का पूजन है जिससे आपसी सहयोग, प्रेम और एकता का संदेश मिलता है। यह अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का पूजन है जिनसे हमें यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है। वास्तव में यह कुटुंब के आदि देव के प्रति कृतज्ञता का भाव है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को पारिवारिक प्रेम सौहार्द के प्रतीक इस पूजन को समय, स्थान और सामर्थ्य के अनुसार अवश्य करना चाहिए।

10. भित्ति-चित्र पूजन

भारतीय संस्कृति में विभिन्न माँगलिक कार्यक्रमों में भित्ति-चित्र अंकित करके उनका पूजन किया जाता है, इन्हें 'ज्योति पूजन' भी कहते हैं इन चित्रों में भी गूढ़ रहस्य छिपे हुए हैं जिनका ज्ञान ना होने के कारण अंधविश्वास या रूढ़िवादी परंपरा कह कर इन्हें लुप्तप्राय किया जा रहा है। वास्तव में भित्ति चित्र भी लक्ष्मी का स्वरूप हैं। भित्ति अर्थात दीवार निवास स्थान की सुरक्षा दीवार हैं जिनके आश्रय में ही मनुष्य दांपत्य-सुख और संतान-सुख प्राप्त करता है। अतः उनका पूजन वंश परंपरा के प्रतीक रूप में ही किया जाता है। भित्ति आवासगृह अर्थात घर गृहलक्ष्मी का स्वरूप है। होली दीपावली की दूज पर बनाई जाने वाली प्रतिमा भी प्रवेश द्वार रक्षिका के रूप में अंकित की जाती है। ये हल्दी, कुमकुम से बनायी जाती हैं जो आरोग्यता और माँगल्य का प्रतीक हैं। पुराणों में वर्णित दृष्टान्तों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ये दिवस ऋतुओं के संधि दिवस हैं जिन पर भित्ति लोकाकृतियाँ अंकित करके पारम्परिक विधि से पूजन किया जाता है जो मनुष्य को वास्तव में मौसमानुसार स्वयं की रक्षा हेतु सतर्क रहने का संकेत देते हैं। यह रक्षक देवियां इनसे होने वाली व्याधियों, महामारियों से स्वरक्षा की संकेतक हैं। भाद्र पक्ष अर्थात भादो के महीने में हस्तक पूजन, वर्षा समाप्ति के बाद कृषकों के हस्त कृषि कर्म का प्रतीक हैं। इस प्रकार भारतीय भित्ति-चित्र पूजन, पारंपरिक शैली द्वारा प्रकृति-चक्र के सूचक के रूप में किया जाता है।

-----00-----

अध्याय-10: विभिन्न वृक्षों का पूजन महत्व

1. विभिन्न वृक्ष पूजन एवं महत्व

भारतीय संस्कृति में वृक्षों का महत्व-भारतीय संस्कृति में वृक्षों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पुराने वृक्षों की रक्षा करना और नए वृक्षों को लगाना एक पुण्य कार्य कहा गया है। ज्योतिष शास्त्र में अशुभ ग्रहों की शांति, नवग्रहों की प्रसन्नता और शोक निवारण के लिए अलग-अलग प्रकार के वृक्ष लगाने का संदेश दिया गया है। इसी प्रकार आयुर्वेद में भी विभिन्न औषधि वनस्पतियों का वृक्षारोपण उचित माना गया है।

भविष्य पुराण में संतान हीन मनुष्य द्वारा लगाये गये वृक्ष लौकिक पारलौकिक दृष्टि से उपयोगी है। जहां तुलसी पौधा स्वयं उत्पन्न होता है, अश्वत्थ् (वट, पीपल) आदि पेड़ हो वहां देवताओं का वास निश्चित है। आचार्य मिहिर ने वृक्षों को वस्त्र अर्पित करके चंदन पुष्प माला से पूजन हवन करना श्रेष्ठ बतलाया है। पित्र संतुष्टि हेतु भी पेड़ लगाना अनिवार्य कहा गया है।

पेड़ पौधे प्रकृति के जीवन चक्र की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है यह मिट्टी के कटाव को रोकने, कार्बन डाइऑक्साइड शोषित करने तथा ऑक्सीजन और अन्य गैसों के मध्य संतुलन बनाने, प्राकृतिक जीव जंतुओं को जीवन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते हैं। यह वृक्ष ऑक्सीजन छोड़कर कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। इसलिए प्रकृति के लिए वृक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। घने पेड़ बादलों को आकर्षित करके वर्षा करवाने में भी सहायक है। पीपल, वट, नीम जैसे बड़े पेड़ों की जड़ों में मिट्टी को पकड़ने की क्षमता होने से भूजल स्तर बढ़ता है। वृक्ष सूर्य की तेज धूप को रोककर वायुमंडल को नमी और ठंडक प्रदान करते हैं। अनेक वृक्षों में औषधीय गुण होने से असाध्य रोगों की रोकथाम करना संभव होता है। प्रत्येक वृक्ष में अलग-अलग गुण होने से प्रदूषण दूर करने एवं पर्यावरण सुरक्षा में वृक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वृक्ष हमारे घरेलू जीवन के लिए भी बहुत लाभकारी माने गए हैं, इनसे हमें विभिन्न प्रकार की लकड़ियां प्राप्त होती है, जिनका अलग-अलग कार्यों में प्रयोग किया जाता है। निःसंदेह पेड़ हमारे जीवन के लिए और प्रकृति को बचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

2. तुलसी पूजन

महाप्रसाद जननी-सर्व सौभाग्य को बढ़ाने वाली, महाप्रसाद स्वरूप माँ, सर्व रोगों की नाशक, आपत्ति-विपत्ति हारिणी तुलसी माँ को नमस्कार है। हिंदू समाज में तुलसी को माँ लक्ष्मी का स्वरूप मानकर पूजा की जाती है। पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार वृंदा के पति जालंधर दैत्य को मारने के लिए भगवान विष्णु ने उनके साथ, जालंधर

का छद्म रूप रखकर वृंदा का सिंदूर मिटाया था जिससे कुपित होकर उन्होंने भगवान विष्णु को पत्थर होने का श्राप दिया तब माँ लक्ष्मी ने उन्हें श्राप मुक्त करने के लिए उनसे प्रार्थना की। वृंदा ने उन्हें मुक्त करके वही देह त्याग दी। जिससे वहां तुलसी के पौधे के रूप में प्रकट हो गई। माँ लक्ष्मी नारायण की कृपा से वे वहीं स्थापित हो गई। और वह पत्थर भगवान शालिग्राम के रूप में पूजित हुआ। इसलिए तुलसी जी को माँ लक्ष्मी भी कहते हैं। तुलसी पत्र को पवित्रता का प्रतीक और प्रभु प्रसाद हेतु आवश्यक माना जाता है। अखंड सौभाग्य प्राप्ति हेतु सुहागिन स्त्रियां तुलसी का पूजन अर्चन करती है। कार्तिकी एकादशी को विशेष रूप से तुलसी जी का पूजन शालिग्राम जी के साथ किया जाता है।

महत्ता

आयुर्वेद में तुलसी को संजीवनी माना गया है। धार्मिक ग्रंथों में प्रत्येक घर आंगन में तुलसी का पौधा लगाने की महिमा गाई गई है। वास्तव में यह विश्व का एकमात्र पौधा है जो 24 घंटे अर्थात दिन-रात ऑक्सीजन गैस विसर्जित करता है। जो प्राणवायु है और योग नाशिनी मानी गई है। प्रतिदिन तुलसी के 5 पत्तों का सेवन करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। विज्ञान ने भी इस तथ्य को प्रमाणित किया है। तुलसी के पत्ते चरणामृत में डाले जाते हैं- जिसके दो कारण है-प्रथम-तुलसी का भोग भगवान को लगाने से वह जल चरणामृत प्रसाद बन जाता है। दूसरा-चरणामृत काफी समय तक खराब नहीं होता है इस प्रकार तुलसी अपने औषधीय गुण और और दैवीय गुण के कारण विश्व में पूजनीय मानी गई है।

3. आमला / आंवला पूजन

आंवला वृक्ष में भगवान विष्णु का वास माना गया है। इसलिए आंवला नवमी या इच्छा नवमी को आंवला पेड़ की पूजा उनके साथ की जाती है। भगवान विष्णु ही जगत के पालन करता है उन्हें संपूर्ण सृष्टि का उदर भी माना गया है। शिवपुराण एवं विष्णुपुराण में आमला पूजन का विशेष महत्व वर्णित है।

आंवले का पूजन करने के लिए आंवला वृक्ष के नीचे पान के पत्ते या केले के पत्ते पर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करके कलश, गौरगणेश रखकर विधि-विधान से पंचामृत, जल, हल्दी, रोली, चनादाल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, नैवेद्य अर्पित करके धूप दीप जलाकर हवन आरती करते हैं। उसके बाद सबको प्रसाद वितरित किया जाता है और आमला के वृक्ष की परिक्रमा लगाई जाती है। वृक्ष के नीचे समस्त परिवार भोजन प्राप्त करता है। आंवला का पूजन प्रत्येक गुरुवार, एकादशी को भी किया जाता है। विशेषतः कार्तिक माह की कृष्ण पक्ष की एकादशी को आंवला वृक्ष का पूजन दिवस मनाया जाता है। आंवला को अनंत फल भी कहते हैं।

महत्ता

वैज्ञानिक दृष्टि से सभी विटामिन्स का स्रोत और खनिज तत्वों का भंडार है। एक आंवला में दो सेव, चार केले के बराबर खनिज तत्व और विटामिन्स पाए जाते हैं। नेत्र रोगों और दंत रोगों में यह विशेष लाभकारी है। आम्लपित्त रोग अर्थात एसिडिटी में भी इसका उपयोग अमृततुल्य है। आंवले का वृक्ष फल पत्तियां आदि सभी औषधि गुण युक्त हैं। आयुर्वेद में रक्त, वात, पित्त, कफ और उदर रोगों में आंवला को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। आमला वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन करने से सुख समृद्धि वैभव की प्राप्ति होती है तथा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है, स्पष्ट है-"स्वस्थ काया बढ़े माया"।

आंवला वृक्ष से आसपास का वातावरण भी शुद्ध और प्रदूषण रहित हो जाता है यही कारण है कि हमारी संस्कृति में आंवला वृक्ष की पूजा अर्चना की जाती है। आमला फल किफायती होने के कारण समाज के सभी वर्गों के द्वारा आसानी से प्रयोग करके निरोगी स्वस्थ शरीर प्राप्त किया जा सकता है।

4. वटवृक्ष पूजन

शिव पुराण में वटवृक्ष में साक्षात शिव का वास बतलाया गया है इसीलिए प्रत्येक सोमवार और शनिवार को वट वृक्ष की पूजा करके दीपक रखना चाहिए। वटवृक्ष को अनेक नामों से बुलाया जाता है वटवृक्ष का पूजन-विवाहित महिलाएं अखंड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए करतीं हैं यह व्रत वट अमावस्या को किया जाता है। विधि विधान से इसका पूजन करके महिलाएं इसकी ग्यारह या एक सौ आठ परिक्रमा लगाती हैं और अखंड सौभाग्यवती होने का वरदान माँगती हैं। इस वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन प्रसाद भी ग्रहण करना लाभदायक माना गया है क्योंकि इसकी छाया से भी हमें सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। भारत में अनेक वट वृक्ष महत्वपूर्ण हैं जैसे प्रयागराज का अक्षय वट, नाशिक का पंचवट, वृंदावन का वंशीवट, उज्जैन का पवित्र बट, गया का गया बट और बेंगलुरु का वट वृक्ष (एक वृक्ष से लगभग एक हजार वृक्ष उत्पन्न) बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि ये बहूवर्षीय विशाल वृक्ष हैं। अतः इसकी पूजा-अर्चना करना बहुत लाभदायक माना गया है। इसके पत्तों की माला हनुमान जी को शनिवार एवं मंगलवार को अर्पित की जाती है जो इस बात का प्रतीक है कि यह विघ्न नाशक है अर्थात यह वृक्ष दुखों को दूर करने वाला है। धार्मिक दृष्टि से यह वृक्ष इसलिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है है क्योंकि इसमें ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनों का वास है।

महत्ता

आयुर्वेद की दृष्टि से यह अत्यंत प्रभावकारी वृक्ष है इसकी जड़ पत्ती फल छाल आदि सभी के द्वारा अनेक रोगों का इलाज संभव है। अनेक आयुर्वेदिक औषधियों में इसका प्रयोग बहुतायत से से किया जाता है। यह अनेक प्रवासी पक्षियों व वन्य प्राणियों का आश्रय स्थल है। यह राहगीरों को आश्रय देने के लिए भी महत्वपूर्ण माना गया है।

क्योंकि इसकी जड़ें पुराना वृक्ष होने पर बाहर की ओर निकल कर वृक्ष को मजबूती और दृढ़ता प्रदान करती हैं यह जल के स्तर को भी गहरा बनाता है। इसकी जड़ों के कारण कई वृक्षों को भी सहारा मिलता है। यही कारण है कि भारत में वट वृक्ष का पूजन अत्यंत लाभदायक महत्वपूर्ण माना गया है।

5. आम वृक्ष पूजन

वैदिक संस्कृति में यह एक पूज्यनीय, धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वृक्ष माना गया है। प्रत्येक पूजा एवं धार्मिक अनुष्ठान कार्यों में कलश में और बंदनवार के रूप में अनिवार्य रूप से सजावट हेतु इसका प्रयोग किया जाता है। ये वृक्ष उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बहुतायत से पाए जाते हैं। इनकी ऊंचाई लगभग 150 फीट होती है। यह आर्थिक समृद्धि धन संपदा का प्रतीक है। आम वृक्ष बहुत गुणकारी भी होते हैं, आम की लकड़ी और पत्तों का हवन के लिए समिधा के रूप में प्रयोग किया जाता है। ये पर्यावरणीय सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माने गए हैं।

महत्ता

आम्र वृक्ष बलवर्धक स्फूर्ति दायक माने गए हैं। ये बहुत गुणकारी होते हैं। कच्चे आम में पोटेशियम, टारट्रेट, साइट्रिक एसिड, मैलिक एसिड प्रचुर मात्रा में होता है। यह वृक्ष भी विशाल और घना होने के कारण प्राण वायु ऑक्सीजन प्रचुर मात्रा में छोड़कर, कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर के, पर्यावरण को शुद्ध प्रदूषण मुक्त बनाता है। इसे लगाकर भारत में आर्थिक संपन्नता और रोजगार भी प्राप्त किया जा सकता है। स्वादिष्ट होने के साथ-साथ बलवर्धक होते हैं इनमें विटामिन ए विटामिन बी१, बी२, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, कैल्शियम, पोटेशियम, सोडियम तत्व आयरन होने से अधिक स्वास्थ्यवर्धक है। गर्मियों में कच्चे आम के प्रयोग से लू, डायरिया आदि रोगों से रक्षा की जा सकती है। इस प्रकार आम का वृक्ष अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण गुणकारी है। यद्यपि इसका पूजन नहीं किया जाता, किन्तु इसके बिना कोई भी माँगलिक कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता है।

6. नीम वृक्ष पूजन

प्राचीन भारतीय उपनिषदों चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में नीम वृक्ष को एक अत्यंत महत्वपूर्ण पूजनीय वृक्ष माना गया है। संस्कृत में नीम को निंबा वृक्ष कहा गया है। धार्मिक दृष्टि से निंबा वृक्ष के कारण माँ दुर्गा को निंबा देवी भी कहा जाता है। इस प्रकार से नीम वृक्ष, माँ दुर्गा का साक्षात स्वरूप है। और निंबा देवी और नीमोरी देवी भी इनका नाम कहा गया है। यह एक सर्व सुलभ कारी चमत्कारी औषधि गुणो से युक्त बहु उपयोगी वृक्ष माना गया है।

महत्ता

अनेक बीमारियों में इसकी पत्तियों का प्रयोग किया जाता है जैसे चेचक, टीवी, पीलिया और अनेक महा मारियो में भी इसकी टहनी से मंत्रों द्वारा रोगों को दूर किया जाता है तथा रोगी के बिस्तर के नीचे भी इसको रखा जाता है। नीम के पत्तों का धुआं करके अनेक रोगाणुओं का नाश किया जाता है अतः नीम की महिमा का गुणगान भारतीय संस्कृति में बहुत अधिक किया गया है। इसकी पत्तियों का प्रतिदिन सेवन करने से अनेक असाध्य व्याधियां और चर्म रोग भी ठीक हो जाते हैं। नीम का पेड़ अपने आसपास के लगभग सौ मीटर तक की दूरी के वायुमंडल को शुद्ध एवं कीटाणु नाशक बनाकर प्रदूषण रहित कर देता है। अतः माँ दुर्गा का स्वरूप यह वृक्ष सभी के लिए बहुत फलदायी है।

7. केला वृक्ष पूजन

वेद शास्त्रों के अनुसार केले का वृक्ष सुख संपन्नता का प्रतीक है। इसमें देवगुरु बृहस्पति और साक्षात भगवान विष्णु का वास होता है। इसलिए गुरुवार के दिन इस का विधि विधान से पूजन अर्चन करके, इसमें लाल धागा या मौली बांधना चाहिए। वृक्ष के आसपास पूर्ण स्वच्छता रखना चाहिए। यह वृक्ष घर में लगाना शुभकारी होता है किंतु मुख्य द्वार पर नहीं लगाना चाहिए। यह घर के आंगन या पीछे की छत में रखना चाहिए। सात गुरुवार का व्रत करने से इच्छित मनोकामना पूर्ण होती है। अतः केले के वृक्ष का पूजन सुख, समृद्धि, शांति, एवं धनसंपदा देने वाला है। देव गुरु बृहस्पति का प्रतिनिधि होने के कारण इसे भवन के ईशान कोण में लगाना चाहिए। उच्च शिक्षा ज्ञान प्राप्ति के लिए भी इसका पूजन सर्वोत्तम माना गया है। पूजा करने वाले साधक को इस दिन केला नहीं खाना चाहिए। केला चढ़ा कर उसे वितरित कर देना चाहिए। केले के फल, तना, पत्ते, जड़ सभी बहुत उपयोगी और गुणकारी हैं। किंतु इसमें बीज नहीं होते हैं।

महत्ता

केले का वृक्ष चमत्कारी और प्रेरणा दायक है। केले के पत्ते और तना के द्वारा पूजा स्थल, भवन, व्यवसायिक क्षेत्रों की सजावट की जाती है। न ही केले के बीज होते हैं और ना ही तना मजबूत होता है, केवल बड़े बड़े पत्ते होते हैं, और फल सबसे ऊपर लटके रहते हैं। जड़ें जमीन के अंदर रहती हैं जो वृक्ष को संभाले रहती है। तात्पर्य यह है कि किसी भी कार्य की योजना बनाने के लिए उसकी जड़ें मजबूत होंगी तभी व्यक्ति को सफलता प्राप्त होती है। केले के पत्ते, आडंबर एवं कमजोर तना, कमजोर इच्छा शक्ति का प्रतीक है अर्थात कार्य हो या व्यापारिक संस्था उसकी जड़ें मजबूत होने पर ही उसे सफलता मिलेगी। बाह्य सजावट उपयोगी नहीं होती हैं। आंतरिक गुण अधिक महत्वपूर्ण हैं। जैसे मीठा होने से केला भगवान को चढ़ाया जाता है और पत्ते व तने से

सज्जा की जाती है। इससे यह संदेश मिलता है कि जड़ें मजबूत होने पर, पेड़ का तना और पत्ते काट देने पर भी, दूसरा पेड़ निकल आता है। इस प्रकार केले का वृक्ष एक प्रेरणादायक, चमत्कारिक और जीवन को आदर्श संदेश देने वाला है।

8. बिल्व वृक्ष

स्कंद पुराण में बिल्वपत्र के वृक्ष की उत्पत्ति का सिद्धांत वर्णित है। इस वृक्ष में लक्ष्मी का वास माना गया है। बिल्वपत्र के वृक्ष के पूजन से धनसंपदा, समृद्धि आती है। यह वृक्ष लक्ष्मी जी को बहुत प्रिय है। ऐसा कहा जाता है कि बिल्व वृक्ष लक्ष्मी जी द्वारा भूमि पर लाया गया था। यह एक मात्र ऐसा वृक्ष है जिसमें फूल नहीं होते हैं। बिना फूल के ही फल लगते हैं। इस फल के गूदे के हवन से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं। मान्यता यह है कि बिल्वपत्र के वृक्ष के साथ निरंतर लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहे इसलिए इसे उत्तर-पश्चिम दिशा में लगाने से यश की प्राप्ति होती है और उत्तर-पूर्व में रखने से सुख शांति बढ़ती है। भवन या आंगन के मध्य में लगाने पर जीवन में मधुरता आती है। बिल्वपत्र भगवान शंकर को अति प्रिय है इसलिए प्रदोष, द्वादशी, रविवार एवं सोमवार को इसका पूजन करने से धन-धान्य, यश, वैभव और मान-सम्मान बढ़ता है, और ब्रह्म हत्या जैसे महापाप से भी मुक्ति मिल जाती है। इससे प्राप्त होने वाला पुण्य अक्षय होता है एवं जहरीले जीव-जंतु इस स्थल को छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं।

महत्ता

यह वृक्ष धर्म, शांति, संपन्नता और सत्य का प्रतीक है। रोगों का निवारण होता है इसके फल एवं पत्तियों के सेवन से अनेक असाध्य व्याधियां, मधुमेह, हृदयरोग, चर्म रोग आदि दूर हो जाते हैं। इसके नित्य पूजन से जहां भगवान शिव प्रसन्न होते हैं वही महालक्ष्मी की कृपा भी बनी रहती है। बिल्वपत्र के पूजन का तात्पर्य यह है कि जीवन में छोटी से छोटी वस्तुएँ भी अमूल्य बन जाती हैं अर्थात कभी भी किसी व्यक्ति को छोटा नहीं समझना चाहिए। इस प्रकार बिल्ववृक्ष का पूजन संपूर्ण सुखों को प्रदान करने वाला माना गया है।

9. शमी पत्र वृक्ष

हिंदू सभ्यता में ऐसी मान्यता है कि शमी वृक्ष सुख समृद्धि, लक्ष्मी एवं खुशहाली का प्रतीक है। यह वृक्ष घर में लगाने से देवी-देवताओं की कृपा बनी रहती है। शनि के प्रकोप से बचने के लिए यह पीपल वृक्ष का अच्छा विकल्प माना गया है। शमी पत्र के संबंध में एक कथा प्रचलित है कि राजा रघु ने गुरु दक्षिणा के चौदह करोड़ मुद्राओं के रूप में, कोष की समस्त स्वर्ण मुद्राएं ऋषि कौशिक को दे दी थीं। तब बाद में कुबेर को प्रसन्न करने के लिए राजा ने कुबेर से स्वर्ण मुद्राओं की याचना की थी तब भगवान कुबेर ने प्रसन्न होकर शमी वृक्ष पर इसकी वर्षा की थी। इसलिए यह समृद्धि और लक्ष्मी का प्रतीक है। शमीपत्र गणेशजी, लक्ष्मी जी, दुर्गा जी, शंकर जी को चढ़ाने से

विघ्नों एवं कष्टों का नाश होता है और घर में स्थिर लक्ष्मीजी का वास होता है। प्रतिदिन इसका पूजन करके, सरसों के तेल का दीपक रखना चाहिए। यह घर के बाहर उत्तर दिशा में लगाना चाहिए। विशेष कार्य के लिए जाते समय इसके दर्शन करके जाना शुभ कारी और प्रसन्तादायक होता है।

महत्ता

विक्रमादित्य के काल में शमी वृक्ष पर एक ग्रंथ लिखा गया था जिसका नाम है, "कुसुम लता" इसमें शमी वृक्ष की महिमा का बखान किया गया है। ऐसी मान्यता है कि भगवान राम ने विजय हेतु पहले शमी वृक्ष का पूजन किया था। पांडवों ने भी अपने अज्ञातवाश के समय अपने सभी दिब्यशस्त्र इसी वृक्ष में छुपाए थे और युद्ध के पूर्व इसका पूजन करके महाभारत में जीत प्राप्त की थी। अतः शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए इसका पूजन दर्शन करके निश्चित कामना हेतु जाना चाहिए। इसके पत्र को स्वर्णपत्र, स्वर्णलता, सोनारूपा या खिजड़ी पत्र भी कहा जाता है। दशहरा के दिन इसका पूजन करके इसके पत्र का वितरण सबको किया जाता है। इससे धन संपदा सुख संपत्ति प्राप्त होती है इस वृक्ष को भविष्य दर्शक वृक्ष भी कहा जाता है और ऐसी मान्यता है कि जिस वर्ष यह वृक्ष अधिक फूलता-फलता है। उस वर्ष सूखा या कोई विपत्ति की आशंका होती है। इसलिए कृषक सतर्क होकर, अपने कृषि कार्य एवं माँगलिक कार्य करते हैं। दशहरे के दिन शमी पत्र का आदान प्रदान किया जाता है। जिसका आशय है कि वैभव और संपदा को मिल बांट कर खाना चाहिए। उसका अकेले भोग नहीं करना चाहिए। पांडवों ने भी अज्ञातवास में इसमें जो अश्त्र छुपाये थे, उसका आशय भी यही है कि हमें अपने कार्यों के लिए कभी-कभी उन्हें गुप्त रूप भी रखना चाहिए। शमी पत्र को रक्षक के रूप में भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शमी वृक्ष में कांटे इस बात का संदेश देते हैं कि सफलता के पथ में कष्ट भी होते हैं वहीं छोटी छोटी पत्तियां यह बतलाती हैं कि छोटा छोटा संचय ही बड़ा स्वरूप प्राप्त कर सकता है।

10. अपराजिता बेल

अपराजिता को अमरबेल या विष्णुकांता भी कहते हैं। यह सकल सिद्धिदात्री माँ दुर्गा का साक्षात स्वरूप मानी जाती है। इसका प्रतिदिन पूजन, दर्शन करना अत्यंत शुभ कारी माना गया है। विशेषतः नवरात्रि और विजयादशमी को इसका पूजन करते हैं नवरात्रि में कलश स्थापना करते समय आम के पत्तों के साथ इसकी भी एक टहनी लगा कर दीपक रखना चाहिए। प्रतिदिन माँ दुर्गा को अपराजिता का पुष्प अर्पित करना चाहिए। विजयादशमी और दशमी(चैत्र मास) के दिन पुष्प हाथ में लेकर, माँ से अपनी कामना बोलकर माँ दुर्गा को पुष्प अर्पित करके माँ से अपनी विजय श्री और सफलता हेतु प्रार्थना करना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि शत्रु को परास्त करने में इसका

चमत्कारिक प्रभाव है। यही कारण है कि इसे अपराजिता (जिसे कोई पराजित ना कर सके) कहा जाता है। तंत्र साधना में इसका पूजन करके अजेय शत्रु को भी परास्त किया जा सकता है। भगवान विष्णु जी, लक्ष्मी जी, शिव जी को यह पुष्प अत्यंत प्रिय है। नीला पुष्प होने के कारण यह भगवान शनिदेव को भी अर्पित किया जाता है।

महत्ता

धार्मिक एवं चमत्कारिक बेल होने के कारण धन, संपदा, वैभव, सुखसमृद्धि के साथ, दुखों का निवारण और विघ्ननाशक भी माना गया है। आयुर्वेदिक दृष्टि से इसकी जड़ें, पत्तियां और फूलों को उबालकर रस पीने से अनेक रोगों का नाश होता है। माइग्रेन, मलेरिया, पीलिया और बार-बार बुखार आना आदि बीमारियों में यह रामबाण औषधि है। इसकी फलियों में से काले बीज निकालकर मिट्टी में दबाने से पुनः नई बेल आ जाती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए प्रतिदिन चाय की तरह उबालकर पीने से अत्यधिक लाभ होता है। अपराजिता के फूल जड़ का पूजन करके लाल कपड़े में लपेटकर तिजोरी में रखने से सौभाग्य का उदय होता है एवं लक्ष्मी जी व माँ दुर्गा की अपार प्रसन्नता प्राप्त होती है। अपराजिता की बेल से यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए सहारा लेने में संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि स्वयं गुणवान बनकर जब हम दूसरों के काम आते हैं तो वह सहारा श्रेष्ठ हो जाता है। स्वयं को कमजोर न समझ कर जीवन में गुणवान बनना चाहिए।

11. अशोक वृक्ष

हिंदू धर्म में अशोक वृक्ष को अधिक पवित्र, पूजन कार्य में सहयोगी एवं कल्याणकारी माना गया है। ऐसी मान्यता है कि अशोक वृक्ष जिस घर या स्थान में होता है वहां कोई शोक नहीं रहता, किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती। इसके साथ भी अतीत का एक प्रसंग जुड़ा हुआ है। रामायण काल में सीता हरण के पश्चात रावण ने सीता जी को एक वाटिका में जहां स्थान दिया था, वह अशोक वृक्ष की छाया में बना था। दशानन का वध होने के बाद जब सीता जी भगवान राम के साथ जाने लगी तो उन्होंने अशोक वृक्ष का पूजन करके उसे यह आशीर्वाद दिया था कि तुम्हारे प्रति मैं कृतज्ञ हूं। आज से अशोक वृक्ष को जो भी अपने आवास स्थल में लगाएगा उसे कभी भी शोक नहीं होगा। इसे सौभाग्य दायक माना जाएगा।

महत्ता

अशोक का पूजन करके उसकी जड़ को धारण करने से सुख समृद्धि और आरोग्य की प्राप्ति होती है, नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है, इतना ही नहीं उस स्थल में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। माँगलिक दृष्टि से धार्मिक वैवाहिक कार्यक्रमों में यह पूज्यनीय माना गया है। आयुर्वेद में भी अशोक की छाल, पत्तियां, जड़, आदि से अनेक

औषधीय बनाई जाती हैं। यह विषैली गैसों को अवशोषित कर के वायुमंडल को स्वच्छ बनाता है इस प्रकार अशोक वृक्ष का पूजन भले ही न हो लेकिन यह एक पवित्र वृक्ष माना जाता है और यह हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है एवं प्रदूषण को रोककर पर्यावरण को बढ़ाता है।

12. नारियल वृक्ष

वैदिक संस्कृति में नारियल को श्रीफल कहा गया है। यह फलों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह वर्ष भर आसानी से उपलब्ध होता है एवं इसका प्रत्येक भाग मनुष्य के काम आता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान विष्णु को यह अति प्रिय है उन्होंने राक्षसों द्वारा नरबलि दिए जाने की प्रथा को रोकने के लिए इस वृक्ष को पृथ्वी में लगाया था यदि नारियल को ध्यान से देखा जाए तो इसमें मनुष्य के समान दो आंखें, नाक, मुंह अंकित होते हैं। यह धनसंपदा, ऐश्वर्य, वैभव प्रदान करने वाला होता है। यह एक ऐसा वृक्ष है जो कि वर्ष भर फल देकर, सौ से डेढ़ सौ वर्ष तक जीवित रहता है, कोई भी माँगलिक कार्य अनुष्ठान इसके बिना पूर्ण नहीं होता है। यह वृक्ष स्वयं पूजनीय ना होते हुए भी पूजन में सर्वाधिक सहयोगी है इसके बिना कोई भी पूजन कार्य संपन्न ही नहीं होता।

महत्ता

नारियल के बिना जहां पूजन कार्य अधूरा है वही नारियल विटामिन और प्रोटीन का भंडार है। इसमें वसा और कोलेस्ट्रॉल नहीं होता है। यह एक पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार माना गया है यही कारण है कि हमारे पुराणों में प्रत्येक पूजा में नारियल अर्पित करके उसका प्रसाद वितरित किया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो सके। इसकी जड़, तना, पत्ती, फूल, फल आदि सभी उपयोगी होते हैं जो मनुष्य के लिए किसी न किसी वस्तु का निर्माण करते हैं इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक होती है। यह व्याधि नाशक एवं गुणकारी होता है। इसकी जड़ें मजबूत होने के कारण जल स्तर को बनाए रखने में बहुत सहायक हैं। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा में यह वृक्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

13. अनार वृक्ष

संस्कृत में अनार को दाड़िम कहा जाता है। अनार वृक्ष में श्री लक्ष्मी नारायण का वास माना गया है, इसका फल लक्ष्मी जी को अति प्रिय है। यह फल अंदर बाहर से लाल होता है इसलिए अनिवार्य रूप से महालक्ष्मी की पूजा में चढ़ाया जाता है। यह पूजन के काम आने वाले पांच फलों में से एक है। अनार का पेड़ घर में लगाने से सुख समृद्धि बढ़ती है, नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। यह वृक्ष घर की उत्तर दिशा में, आग्नेय दिशा में या घर के सामने लगाना शुभ दायक माना गया है। धन वृद्धि के लिए अनार की डंडी का विधिवत पूजन करके, कुबेर मंत्र का जाप करके, पीले कपड़े में लपेटकर, इसे तिजोरी में रखना चाहिए। अनार की लकड़ी की डंडी से तंत्र साधना भी

की जाती है। किंतु शास्त्रों में वर्णित है कि अमंगल की दृष्टि से, किए जाने वाले पूजन से, व्यक्ति का जीवन कभी सुखी नहीं बनता है। इसलिए शुद्ध मन भावना से ही पूजन कार्य करना चाहिए। अनार के फूल को शहद में डूबा कर भगवान शिव को चढ़ाने से प्रत्येक कष्ट दूर होते हैं।

महत्ता

आयुर्वेद की दृष्टि से अनार अत्यंत गुणकारी फल है। इसकी जड़, छाल, पत्तियां, फल और लकड़ी आदि सभी के द्वारा अनेक व्याधियों का नाश किया जाता है इसके नियमित सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। कहा भी गया गया है-"एक अनार सौ बीमार"। पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस गुणकारी वृक्ष को घरों में अवश्य लगाना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर अनिष्ट कारी ग्रहों के दोषों की शान्ति होती है, वहीं दूसरी ओर परिवार में हर्ष आनन्द का वातावरण निर्मित होता है। यह वृक्ष पक्षियों को भोजन एवं आश्रय प्रदान करके प्रकृति में संतुलन स्थापित करता है।

-----00-----

नाम	- डॉ.मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
जन्मतिथि	- पाँच मई उन्नीस सौ छप्पन, कटनी
विवाहतिथि	- 4/7/79
शिक्षा	- एम.ए.,पी.एचडी.(अर्थशास्त्र), एम.ए.(हिन्दी), 'आयुर्वेद रत्न'
कार्य	- विगत ३५ वर्षों से प्राध्यापन कार्यरत, प्राचार्य (आदित्य वीमेंस कॉलेज जबलपुर)
स्मृति शेष	- पूज्य पिता श्री चंद्रिका प्रसाद, माता श्रीमती सरोज मोर (चित्रमय रामायण की रचयिता)
भ्राता	- श्री कैलाश, शरदमोर।
बहन	- श्रीमती उमा सुहाने।
कर्मभूमि	- संगमरमरी नगरी जबलपुर।
जीवन संगी	- डॉ.रमेश गुप्ता नशा मुक्ति क्लीनिक जबलपुर ।
ससुर	- स्मृति शेष- श्री-अनंतलाल पिपरसानिया।
सासु	- स्मृति शेष- श्रीमती चंदा देवी
बेटी-दामाद	- इंजी.सोनिका इंजी.सौरभ मांडल,।
पुत्र-पुत्रवधू	- इंजी.सौरभ-इंजी.शुभ्रा।
बगिया के फूल	- सृष्टि, श्रीनिका, श्रेयान
सामाजिक पृष्ठभूमि	-
आजीवन सदस्य	- अखिल भारतीय गहोई वैश्य महासभा, अखिल भारतीय शिक्षा प्रसार समिति, अखिल भारतीय लेखिका संघ, वर्तिका, गूँज, ष्अखिल भारतीय गहोई रश्मि कला साहित्य मंच जबलपुरष की संस्थापिका
प्रकाशन एवं संपादन	- महाविद्यालय पत्रिका केसर स्वर्ण जयंती विशेषांक का संपादन, अनेक पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार पत्रों में विगत ३५ वर्षों से लेख कविता कहानियों का प्रकाशन
एकल प्रकाशन	- प्रकृति के रंग बच्चों के संग, भारत भूमि वंदन और अभिनंदन, समाज के प्रतिबिम्ब, शुभम्-करोति, शुभ-दर्शनम्
सम्मान	- अनेक संस्थाओं द्वारा-५० सम्मान पत्र, पुरस्कार, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, अंतरा स्वाभिमान सम्मान, अंतरा गौरव सम्मान, गूंज नारी रत्न सम्मान, श्री गहोई साहित्यकार सम्मान।
संपर्क	- 0761-2650060, मो-9993253556, 9300109040
Mail ID	- drmanorama0505@gmail.com

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-241-8

मूल्य 250/-